भूमिका

"शिखरवंशोत्पत्ति–पीढी वार्त्तिक" ग्रंथ सीकर का छंदोबद्ध इतिहास है। इसके रचयिता चारणवंश-भूषण चंडीवालगोत्र के कविया गोपाल थे। सीकर* का बड़ा ठिकाणा जयपुर राज्य का एक बहुमूल्य और अति-सम्मानित विभाग शेखावाटी प्रांत के अंतर्गत है। यह ठिकाणा जयपुर के कछवाहा-क्षत्रियों के शेखावत शाखा में, खेतडी की नांई, बहुत बड़ा माना जाता है, और इसके शासक सरदार सदा से राजभक्ति और वीरता आदि गुणों के लिये विख्यात रहे हैं। यह ग्रंथ संवत् १९२६ विक्रमी में निर्माण हुआ था।

---

* 'सीकर' का कस्बा जयपुर से ३६ कोस वायुकोण में है, और झुंझणूं से २४ कोस नैऋत में है। मर्दुमशुमारी के अनुसार रियासत जयपुर में यह अव्वल नंबर की आबादी के कस्बों में है। ठिकाणे की आमदनी १० लाख से अधिक है, आबादी पौने दो लाख के करीब है। इस ठिकाणे का इलाका 'सीकरवाटी' वा 'राव की धरती' कहाता है। इसमें फतहपुर, रामगढ़, लछमनगढ़ आदि कस्बे बहुत नामी हैं जहाँ के क़ायमखानी मुसलमान पहले के नवाब थे, और जिनके सेठ साहूकार भारतवर्ष में अति प्रख्यात मारवाड़ी सेठ हैं। अधिकतर मुल्क रेतीला है, पहाड़ हर्ष, रघुनाथगढ़ आदि हैं। अब 'शेखावाटी लाइन' पर सीकर का स्टेशन है। नगर सुहावना और आदमी मालदार और दीदारू हैं। रावराजा जी के भवन देखने योग्य हैं। जयपुर को सीकर से ४१२००) रु० कर दिया जाता है। इसका प्रांतीय संबंध निज़ामत शेखावाटी से है। ठिकाणे को कुछ अख़तियार भी हैं।

ग्रंथ-कर्ता सीकर के "उदयपुरा" अपरनाम "चोखा का बास" *ग्राम के वासी थे। यह गाँव सीकर से पाँच कोस दक्षिण की तरफ, 'हर्ष' के ऐतिहासिक पहाड़ से एक कोस और 'जँणिमाता' के स्थान से दो कोस है, तथा 'दाँता' का कसबा इससे दक्षिण की ओर, और 'खूड़' का कसबा पश्चिम की तरफ़ है। ये दोनों कसबे भी शेखावतों ही के ठिकाँणे हैं, और यह चारणकुल भी अधिकतर शेखावतों का शुभ-चिंतक है। कविया गोपाल के पिता का नाम 'खुमान' था, और दादा का नाम 'ज्ञान' था। ज्ञान के चार पुत्रों १ जाल्हदान, २ खुमान, ३ रामनाथ, ४ शिवनाथ-में से 'खुमान' दूसरा था। "कृष्ण विलास" (खंडेले के इतिहास) में कवि ने अपनी वंशावली इस प्रकार दी है

"कविजन कवियो दिव्यकुल चारण चंडीवाल।
अलू भक्त के वंश में कहत नाम गोपाल ॥ १ ॥
अलू १ नंद नरपाल २ भय, नरू नंद मघवान ३।
मेघराज के सुत भये गिरधर ४ नाम सुजान ॥ २ ॥
गिरधर सुत माहू ५ भये, माहू सुत हरिराम ६।
पुत्र भये हरिराम के विजयराम ७ गुण धाम ॥ ३ ॥

* उदैपुरा पहिले चोखा का बास कहाता था इसे एक चोखाजाट ने आबाद किया था। बोद विभाग पास ही है और उदैपुरा—खंडेले के राजा उदयसिंह जी के नाम पर हैं जो बीजराज चारण (पीढी सातवी छंद ३) को राजा उदयसिंह जी खंडेलेवालों ने दिया था 'जो सवाई जयसिंह जी के समय में हुए थे'। ४०० की आबादी, अधिक वैश्य हैं। ग्रंथ में भी "चारण दोय चोखर का बासा कर बताया। हिंदू महादान खेत खाट्ट कामि आया"। (छंद १००७)।

विजयराम के पुत्र फिर दौलतराम ८ वखान ।
सुत भये दौलतराम के ताको नाम जु ग्यान ९ ॥ ४ ॥
पुत्र भये फिर ज्ञान के जाल्हदान १०।१, खुमान १०।२ ।
रामनाथ १०।३, स्योनाथ १०।४, ये चार बंधु सम जान ॥५॥
हम मे पुत्र खुमान के नाम गुपाल ११ कहाय ।
बरन्यूं ग्रंथ नवीन यह नृप की आज्ञा पाय" ॥ ६ ॥

यह "आल्हू" जी परम भगवद्भक्त चारण हुए है। चारणों में अनेक भक्त हुए हैं, जिनमें १४–१५ भक्त तो परम विख्यात है । यथा

"ईश, अलू, करमाणँद, आणंद, सूरदास पुनि संता ।
माँडण, जीवा, केसव, माधव, नरहरदास अनंता" ॥

(परसराम चारणकृत 'भगतमाला')

इसमें के भक्तवर चारण 'ईश्वरदास जी' की कथा चारणों ही में नहीं मारवाड़, कच्छ और गुजरात में अति प्रसिद्ध है । ईश्वरदास जी महाकवि भी हुए है। इनके रचे 'हरिरस', 'देवी देवायण', 'हालांझालाँ का कुंडलिया' आदि दस ग्रथ और हजारों गीत बताते है। इस ही प्रकार आल्हू जी भी महाकवि हुए हैं। इनके रचे नीति और धर्म के गीत और छंद बड़े मारके के हैं। बारहट भक्त शिरोमणि 'नरहरिदास जी' का "अवतार चरित" ग्रंथ चारण-साहित्य का एक अत्युज्वल रत्न है, और साहित्य गुण के नाते भाषा की प्रशस्त रचनाओं में गण्यमान है। इस ही प्रकार अन्य चारण-भक्तों की रचनाएँ और वाणियाँ कही जाती हैं ।

उपरोक्त अलू जी (वा आल्हू जी) से ग्रंथकर्त्ता कविया गोपाल तक ग्यारह पीढ़ियाँ होती हैं। वे यों हैं (१) अलू भक्त, (२) नरपाल,

वा नरू, (३) मेघराज, (४) गिरधर, (५) माहू, (६) हरिराज, (७) विजैराज (वा वीजराज), (८) दौलतराम, (९) ज्ञान, (१०) खुमान, (११) कविया गोपाल (ग्रंथकर्त्ता)। खुमान के तीन भाई जालदान, रामनाथ और शिवनाथ थे, जैसा कि ऊपर कहा गया है।

चारणों को चंडीवाल भी कहते हैं। "चंडीवाळ" कविया चारणों के वंशज उदैपुरया आदि में रहते हैं। ये शेखावतों की दी हुई जीविका खाते हैं। वीजराज (वा विजैराज) वोह है जिसको खंडेले के उदयसिंह जी ने यह उदैपुरया गाँव दिया था। फिर यह गाँव सीकर के नीचे आ गया, तब से सीकर के इलाके में हैं।

अपने गाँव का निर्देश कविया गोपाल ने स्वरचित "लावारासा" के अंत में इस प्रकार किया है

"दांतोपुर दक्खिन दिसा सीकर उत्तर कोन।
कूहर पच्छिम जानिये पूर्व जीण को भोन ॥१॥*
ताके मध्य उदैपुरो वसत सुकविको ग्राम।
उन्नत पर्वत हर्ष† को तहँ भैरव को धाम ॥२॥

* दाँता, खूड आदि सीकर के इलाके के करीब और खानदान के नजदीकी शेखावतों के ठिकाने हैं। खाटू की लड़ाई में ये लोग शामिल थे, यथा = "दाँति खूड वखतावर अमानीसिंह आया। दोनूं वीर जम की जमातों सी लड़ाया"। (शिखर व० देवीसिंह प्रसंग, छंद ९८३)।

† हर्ष 'हर्षनाथ' भैरव जिस पहाड़ी के पास है वह भी हर्ष का ही डूँगर कहाती है और सीकर से ३॥ कोस दक्षिण ओर पूर्व को झुकती है। यह मंदिर कोई ९०० वर्ष पुराना है। पहाड़ी की ऊँचाई समुद्र की सतह से ३ हजार फुट है।

कविजन कवियो दिव्य कुल चारन चंडीवाल ।

अलू भक्त के वंश में अह मम नाम गुपाल ॥२॥

कविया गोपाल के रचे ये ग्रंथ जाने गए हैं (१) शिखरवंशोत्पत्ति पीढीवार्त्तिक । (२) लावारासा (अथवा "कूरमदेश प्रकाश म्लेच्छ विध्वंस कलहकेलिवर्णन)" । (३) कृष्णविलास और बहुत से डिंगल के गीत और पिंगल के छंद कवित्त आदि भी इनके रचे हैं जो कहीं कहीं इनके वंशजों और अन्यत्र ठिकाणों में वा चारणों के यहाँ हैं । पिंगल रचना का नमूना तो इसी ग्रंथ के अंत में है ।

ग्रंथकर्त्ता का जन्म संवत् मिती ज्ञात नहीं हो सकी है । परंतु मरण काल, उनके वंशजों से इस प्रकार, ज्ञात हुआ है कि कविया गोपाल भाद्रपद 'वदि चतुर्थी' संवत् १९४२ में १५ दिन बीमार रहकर अपने गाँव उदेपुरया में '७० वर्ष के होकर' परलोकवासी हुए थे । * इससे जन्म संवत् १८७२ अनुमान होता है ।

पहाड़ी पर बहुत सी पत्थर की पुरानी मूर्त्तियाँ मिलती हैं । पूर्व काल में गौड़ों आदि का इधर राज्य रहा है । कोई कोई यहाँ किला होना भी कहते हैं ।

* स्वर्गवासी कविया के संबंधी और संतति कविया गोपाल की माता 'जांगावत' खांप के चारणों की बेटी थी । कविया की स्त्री 'सानू' गोत के चारणों की बेटी थी । और विशेष बात जानने योग्य यह है कि कविया के भोजे पालखत बारैठ बालावक्ष जी इसूतिया वाले हैं जो इस "बालावक्ष-राजपूत-चारण-पुस्तक-माला" के संस्थापक हैं । कविया गोपाल का एक पुत्र रामधन तो किशनपुरा इलाका जोधपुर में पालावतों के ब्याहा था । दूसरा पुत्र लालजी नूनङ इलाका जोधपुर के चैलजी रतनू चारण की पुत्री को ब्याहा था । कविया की एक पुत्री छत्तूबाई भैरजी खिड़िया गोत के चारण, गाँव खड़वाड़ा इ० जोधपुर के वासी, से ब्याही थी और दूसरी लड़की पारू

शिखरवंशोत्पत्ति के अंत में (अर्थात् प्रशंसा के आलंकारिक भाषा छंदों के अंत में) इस ग्रंथ का रचना काल विक्रमी संवत् १९२६, मिती चैत वदी ७ रविवार लिखा है, यथा

"उन्नीसै छब्बीस कै कृष्ण पष्प मधुमास ।
भानवार की सप्तमी प्राची भानप्रकास ॥ १ ॥ ४६ ॥
सिखरोत्पत्ति पीढी सवै दानवीर सुत जाँनि ।
कविचारण गोपाल कृत पूरन ग्रंथ प्रमाँनि" ॥ २ ॥ ४७ ॥

और इस ग्रंथ की रचना का कारण ग्रंथ समाप्ति में यह लिखा है

"पालट साव भादर स्हैर सीकर फेरि आया ।
पीढ्यां का प्रवांडा ग्रंथ भाषा का मंगाया ॥ १ ॥
बोल्यों साब भादर येक फेरख्यो भी बणावो ।
पीढ्यां का प्रवांडां वारताई सी सुणावो ॥ २ ॥
चारण जाति कविया कूम गोपा ने कहाई ।
वेगा ग्रंथ पीढनां का बणावो वारताई ॥ ३ ॥
बादू पाटिआंका दोय मोरासा मिलाया ।
छंदो भंग छंदां का प्रवंधां रीति गाया ॥ ४ ॥
सेषां वंस पीढ्यां का प्रवाडां को बणायो ।
माधोसिंह जी ने मुकनसिंह ने सुणायो" ॥५॥

यह ग्रंथ उक्त संवत् में पूर्ण हुआ जिसको आज (सं० १९८५ वि०

वाई भोपजी खिड़िया चारण ढांणी कृपाराम वाली इशाका सीकरवाले के साथ ब्याही थी। अब गोपाल जी के वंशजों में उदैपुरा में उनका पौत्र दुर्गादान है और दुर्गादान के दो पुत्र किशोरदान और रामुदान हैं।

में) ६० वर्ष हो गए । जयपुर के सुप्रसिद्ध लोकवत्सल महाराजाधिराज श्रीसवाई रामसिंह जी ने सीकर के रावराजा श्रीमाधवसिंह जी बहादुर की मातमी की रस्म संवत् १९२६ में की थी । उसके हो चुकने के उपरांत रावराजा जी सीकर को आ गए । फिर करनल पाउलट साहिब दौरा करते हुए सीकर भी आये तब सीकर के इतिहास की जानकारी के लिये कई किताबें सुनीं, तब ही सरल भाषा गद्य में एक पुस्तक रचने की आज्ञा दी । इसकी रचना के लिये यह कविया गोपाल नियत हुए । इन्होंने अनेक अन्य ग्रंथों, गीतों, रूपकों, आख्यायिकाओं, ख्यातों वा सीकर के वकाया आदि से इस ग्रंथ की शीघ्रतापूर्वक रचना की और उस ही संवत् १९२६ में इसको समाप्त भी करके रा० रा० माधोसिंह जी और उनके मुसाहिब खवासीणे मुकंदसिंह जी को सुनाया । फिर इसकी एक नकल कराके पाउलट साहिब के पास भेजी गई ।

कविया गोपालदान २४–२५ साल से सीकर में रहने लगे थे और सीकर में राजकीय पुरुषों से अपनी काव्य शक्ति और इतिहासज्ञता का खासा परिचय दे चुके थे । यही कारण है कि इस अनुपम ग्रंथ की रचना के लिये यही चुने गए थे । पाउलट साहिब का अभिप्राय सरल गद्य में ग्रंथ बनजाने का था । तो यह ग्रंथ वार्त्तिक ही छंद में रचा गया है और भाषा अत्यंत सरल है । छंद के संबंध में स्वयम् ग्रंथकर्त्ता ने लिखा है कि

"वाढूघाटि आंकां दोय मोरा सा मिलाया ।
छंदोभंग छंदां का अबंधा रीति गाया ॥"

अर्थात् इसकी रचना यथार्थ छंदों के नियम से नहीं हुई है, अपितु न्यूनाधिक अक्षरों से तुकबंदी करके 'बारताई' (वार्त्तिक वा वार्त्ता) में

बनाई गई है। छंद श्रवण होते समय वह वार्त्तिक अपभ्रंश छंद यथार्थ ही छंद प्रतीत होता है। परंतु सर्वत्र विशेष छंद के लक्षण से घटित है ऐसा प्रमाणित नहीं होता है। "वादू घाटि" से तात्पर्य न्यूनाधिक वर्ण वा मात्रा है। और "मोरासा" से मोहरा, मेल वा तुक सदृश शब्द से अभिप्राय है। और "छंदोभंग" से मतलब डिंगल वा पिंगल के यथार्थ नामांकित किसी छंद के अनुसार नियम का न रहना वा छंद की त्रुटि है। "छंदां का प्रबंधा रीति" से छंद शुद्ध न होने पर भी छंदों का सा ढंग, लय वा ध्वनि प्रतीति करनेवाली रचना में ग्रंथ बनाया गया। "गाथा" अर्थात् चारणों के काव्यों के ढंग पर गीत रूप में वर्णित हुआ। यह अभिप्राय है।

कवि मंछ कृत "रघुनाथ-रूपक" में "वयणसगाई" के प्रसंग में "मोहरामेल" को भी तीन प्रकार का कहा है, जैसे "वयणसगाई" और "अखरोट" को तीन प्रकार का बताया है। यथा

"वर्ण-मित्र दाखैं त्रिविध, त्रिय अपरोट जिलंत।
भणैं मंछ तिणभात सूं मोहरा त्रिविध मिलंत॥"

ये तीन प्रकार के "मोहरा" (अनुप्रास, तुक और यमक) ये हैं १ अधिक मोहरा, २ सम मोहरा और ३ न्यून मोहरा। परंतु इस ग्रंथ में तुकांत वा न्यून मोहरा से ही प्रयोजन है। न तो इसमें "वयण-सगाई" का निर्वाह हो सका है, न "अखरोट" ही आता रहा है, केवल दो पदों में तुक वा न्यून मोहरा, मिला देना पड़ा है। प्रत्येक छंद (वा विकृत छंद) में दो पाद ही दिखाई दे रहे हैं जिनके तुकांत सर्वत्र पाए जाते हैं। इस वार्त्ता छंद वा गीत का लक्षण तो निकल सका है, परंतु नाम इसका खोज

ने पर भी प्राप्त नहीं हुआ। "रघुनाथ रूपक" के ७२ डिंगल छंदों में से, वा "रूपदीप पिंगल" की ५२ चालों में से, कोई भी छंद इससे टक्कर नहीं खाता है। "छंदः प्रभाकरादि", "प्राकृत पिंगल सूत्र" और "रण-पिंगल" तक में कोई छंद मिलता हुआ नहीं मिल सका है। संभव है कि कोई नाम अवश्य मिल जाय। फिर आगे (उक्त 'रघुनाथ रूपक' में) "दवावैत" और उसके दो भेद १ पदबंध (अथवा शुद्धबंध) और गादबंध (गद्य बंध) कहे हैं, यथा

"तवै मंछ कवि है तिके दवावैत विध होय।
एक सुद्ध बंध होत है एक गद्द बंध होय॥"

इसकी टीका के पादटिप्पण में (वृंद कवि के प्रपौत्र) कवि जियालालजी ने लिखा है "दवावैत दो प्रकार की। एक सुधबंध अर्थात् पद बंध जिसमें अनुप्रास मिलावै। दुसरी गाह बंध (गद्य बंध) इसमे अनुप्रास नहीं मिलावै। इन दोनों में मात्रा वर्ण की गिनती नहीं। केवल अक्षर मीठे होवे पद छोटे वड़े होवे।" इन दोनों भेदों के जो उदाहरण उक्त ग्रंथ में दिए हैं उनसे इस शिखरवंशोत्पत्ति के वार्ता छंद वा गीत का कोई मेल नहीं, कोई चाहे तो वलात् दवावैत के अंतर्गत इसे ला सकता है। आगे चलकर "वचनिका" के दो भेद १ पद बंध और २ गद बंध—दिए हैं। इनसे भी यथार्थ मेल तो नहीं हो सकता है, परंतु कुछ दूर का मेल हो सकता है।

अब मात्रा और वर्ण के हिसाव से इस ग्रंथ के वार्त्ता छंद का पता लगाने की चेष्टा करने से यह फल होता है कि प्रथम इसका एक स्थायी रूप प्रमाणित कर लेना पड़ता है (जैसे रामायन मानस में रूप चौपाई

वा पादाकुलक छंद अन्य भेदों के साथ)। यथा

"रारा रार रारा रार, रारा रार रारा।" अथवा

"राधाकृष्ण राधाकृष्ण, राधाकृष्ण राधा।" अथवा

"सीताराम सीताराम, सीताराम सीता।" तथा ग्रंथ में से

"सारा गोडवंसी छो विचारो वात देखो।
म्हारै पूठि पाछै भी तपै छै राव सेखो।" (शेखा प्रसंग-छंद ७६)।

अथवा

"वादू घाटि आँकाँ दोय मोरा सा मिलाया।
छंदो भंग छंदां का प्रबंधाँ रीति गाया।" (छंद १२१२)

इसकी मात्रा गिनने से २५ होती हैं। इसे द्विपदा छंद मानें तो समवृत्त है। और चतुष्पदी छद मानें तो अर्द्धसम वृत्त है, तब १४ + ११ की यति से इसके पद बनते हैं। और वर्ण गणना से द्विपदा छंद मानने से (म, य, र, त, ऽऽ) रूप होता है और समवृत्त, और वर्ण गणना से चतुष्पदा छंद मानें तो (म, य, ग) + (य, र, ग) अथवा (म. य, ग, ल) + (म, य), वा इनका मिश्रण, ऐसा रूप यति से होता है और अर्द्ध समवृत्त। और १४ वर्ण के प्रस्तार में २१८५ वां छंद मिलता है परंतु नाम का पता नहीं मिलता कि इसको क्या कहना चाहिए।

परंतु इस विछेद और लक्षण करण के होने पर भी इस स्थायी छंद को नाम नहीं प्राप्त होता और न नाम का कहीं पता ही लगता है। कवि ने भी त्वरा रहने और छंद के नाम का पता न लग सकने से ही तथा अन्यत्र छंदों में न्यूनाधिक मात्रा होने से इसको छंदोभंग छंद वा वार्त्ता नाम देकर पीछा छुड़ाया, ऐसा प्रतीत होता है। उपरोक्त स्थायी रूप के अनेका—

नेक छंद आने पर भी स्थान स्थान में विकृत होकर यह छंद अन्य रूप का बनता है, जिसके लिये अन्य नामों की आवश्यकता होनी चाहिए। यथा--

"आगे अजमेरि बछराज गौड़ होता।"

= २१ मात्रा। १४ वर्ण। (छंद ६७)।

"अक्कल का देईदास वणिया उदार।" = २१ मात्रा। १४ वर्ण।

(छंद १६३)

"सारी बात जोगा रामसलाका कामदार"। = २४ मात्रा। १५ वर्ण।

(छंद १६३)

"कागद गोपाल का अमरसर घेज दीनूं। = २३ मात्रा। १६ वर्ण।

(छद ३२९)

"ऊपर गोपालवंस को राव कीनूं"। = २३ मात्रा १४ वर्ण।

(छंद ३२९)।

"पोता लाडपांन जी को वणवारी गांम"। = २३ मात्रा। १४ वर्ण।

(छंद ४९८)।

"जोरा वरसिंघ जी का चौकड़ी ठिकाणैं"। = २३ मात्रा। १४ वर्ण।

(छंद ६७१)।

"पता न्है दिल्ली की फ़ोज ने बिरोली"। = २२ मात्रा। १२ वर्ण।

(छंद १००९)

सुरतज्ञापाँन कै जगाई जीव होली"। = २३ मात्रा। १४ वर्ण।

(छंद १००९)

"झुकनूँ श्रीलछा कै तो भलाँ ही पूत जायो" = २४ मात्रा। १५ वर्ण।

(छंद ११७५)।

इस प्रकार कमी वेशी पाई जाती है। कहीं मात्रा के हिसाब से कहीं वर्णों के हिसाब से, जिससे छंद स्थिर नहीं मिलता है। इस कारण से भी इस चाल को केवल "छंदोभंग छंद" कहकर ही काम निकाला है, ऐसा हमको निश्चय होता है। वास्तव में जो स्थायी रूप ऊपर दिया है और विच्छेद से उसका लक्षण भी प्राप्त है वह प्रधान रहकर अन्य विकृत छंद, गौण, वा अनुगत छंद हो सकते हैं। इस प्रकार छंदोभंग की कुछ भी वात नहीं रहती है और ग्रंथ यथार्थ छंदोवद्ध है। हाँ 'डिंगल' के क़ायदे (वैणसगाई, मोहरा, अखरोट आदि) का प्रचुर अभाव है। तो इसके लिये यह कहा जायगा कि भाषा डिंगल-प्रधान नही है तो उन नियमों की प्रधानता भी आपेक्षित नहीं।

यह छंद की वात हुई। इस प्रकार के "झड़" वा "सराड़ा" छंदों में ख्यातें, लड़ाईयां, वृत्तांत आदि को रावभाट चारण वडवे जागे आदि गाया करते हैं। आल्हाऊदल इस ही संप्रदाय का है। हम्मीरासा, और कई एक रासे इस जाति के समझे जावें। खैर, कुछ हो। कविया गोपाल ने इस चालमें सीकर का इतिहास राव राजा माधवसिंह जी के समय में, संवत् १९२६ तक का संक्षिप्त हाल, जो उसको ज्ञात हो सका, लिखा है। इतिहास की दृष्टि से यह ग्रंथ इस भाषा में बड़े काम का है। जसरापुर इ० खेतड़ी (राज्य जयपुर) के पंडित झाबरमल्लजी ने "सीकर का इतिहास" अधिकतर इस ही ग्रंथ के आधार पर लिखा है। कविया गोपाल ने किन किन ग्रंथों सेसार खींचा था इसका पता लगाना एक पृथक् खोज का कार्य्य है। इसमें संदेह नहीं कि सुविज्ञ पाउलट साहेव ने जब इतिहास चाहा तो उनके सामने पुस्तकें और इतिहास के जाननेवाले पुरुष पेश

किए होंगे। चारणों की डिंगल भाषा की रचनाएँ सुबोध न होंगी और उसकी ऐंच पेंच भरी अत्युक्तियाँ अनावश्यक समझी गई होंगी। तब ही उन्होंने सरल गद्य भाषा में पृथक् ग्रंथ रचना के लिये आज्ञा दी। ग्रंथकर्त्ता ने कई जगह अन्य कवियों के गीत और दोहे आदि उद्धृत किए हैं इससे मूल स्रोतों का कुछ पता चल सकता है। यथा

(१) छंद ४६० के आगे। (२) छंद ५४६ के आगे। (३) छंद ७०१ के आगे। (४) छंद ७५५ के आगे। (५) छंद ७९७ के आगे। (६) छंद ८९८ के आगे। (७) छंद ९८६ के आगे। (८) छंद १०६१ के आगे। (९) छंद ११०३ के आगे। (१०) छंद ११२२ के आगे। (११) छंद ११२८ के आगे इत्यादि।

ऐसे स्थल वे प्रतीत होते हैं जहाँ अन्य चारण कवियों के गीत, रूपक आदि से छंद लिए हैं तथा उनही से इतिहास की आख्यायिकाएँ भी। सीकर के ठिकाणें में इसका संग्रह अवश्य है और वहाँ के वाकीनवीसों के पास भी इतिहास है तथा वहाँ के बडे आदमियों के यहाँ भी अंश विद्यमान हैं। राजाज्ञा से सब कुछ प्राप्त हो सकता है। समझ लिया जाय कि कविया गोपाल ने भी बटोर बटोर कर बड़े परिश्रम से यह ग्रंथ बनाया है।

ग्रंथ में कई जगह निराधार बातें भी हैं। यथा महाराज चंद्रसेण जी का विचलित होना। प्रतिद्वंद्वी का देश बहिष्कार ही इसका स्वतः खंडन है। कहीं कहीं वीरता की अतिशयोक्तियाँ भी हैं। परंतु ये बातें चारणों में स्वभाविक हैं और हमको प्रथम ही सोच समझ लेना चाहिए कि कवि सीकर का इतिहास सीकर की सामग्री से सीकर में लिखता है। एक युद्ध और विजय ही क्या, प्रायः काम नीति के सर्वांगों के प्रयोग साम, दाम दंड, भेद आदि से हुआ करते हैं। अकेली वीरता कितना काम कर

सकती है ? चतुराई, दक्षता और अवसर का भाग शक्ति में मिलने से बड़े बड़े काम सहज में हो जाते हैं। सब ही इतिहास इस सिद्धांत को प्रकाशित करते हैं। इसका योग इस इतिहास में भी लगाए बिना स्पष्टीकरण कठिन होगा।

सर्वतोभावेन यह "शिखर-वंशोत्पत्ति-पीढी वार्तिक" ग्रंथ रजवाड़ी भाषा (ढुंढाहडी और शेखावाटी भाषा मिश्रित) का एक सुंदर सुबोध मूल्यवान ऐतिहासिक प्रबंध है। इस प्रकार के ग्रंथों के प्रकाशन से राजपूतों के इतिहास संग्रह में तथा हिंदी साहित्य-भांडार की पूर्त्ति में बड़ी सहायता मिलती है। जब कभी कविया गोपाल के अन्य ग्रंथ "लावारासा", "कृष्ण विलास" आदि प्रकाशन में आवेंगे तब उक्त कवि की कृतियों का अधिक विकाश होगा और राजपूतों की वीरता, शक्ति और उनके साहस और युद्ध-कौशल का ज्ञान-विस्तार होगा। इस माला में इस प्रकार के ऐतिहासिक ग्रंथों के प्रकाशन से 'बार्डिक लिटरेचर' (Bardic Literature) के प्रस्तार के साथ ही इसकी कीर्त्ति का विस्तार भी होगा।

इस भूमिका की सामग्री-संग्रह में बारहट बालाबक्ष जी हणोंतिया वालों (इस माला के आदि संस्थापक), अयाचक कविराजा श्री मुरारीदानजी जयपुर वालों, कवि के वंशजों, पं० दुर्गासहायजी बी० ए० एल० एल० बी० सबजज शेखावाटी और ठिकाणे सीकर, और लाला श्रीनारायण जी आदि तथा चौबे सूर्य नारायणजी 'दिवाकर' कवि एवम् कवि के ग्रंथों से सहायता मिली तदर्थ धन्यवाद है।

जयपुर।
भाद्रपद शु० १५
सं० १९८५ वि०

पु० हरिनारायण।

भूमिका का परिशिष्ट भाग ।

❀

भूमिका लिखे जाने के अनन्तर हमको कवि के वंशजों से पं० दुर्गा-सहायजी बी० ए०, एल० एल० बी० सब-जज शोखाटी के द्वारा और ठा० बाव सिंह जी द्वारा तथा बारहट बालबक्ष जी हणूँतियावालों और अयाचक कविया मुरारीदानजी से कई एक विशेष बातें प्राप्त हुईं । उनमें कुछेक तो भूमिका में यथास्थान लगा दी गई हैं, शेष को यहाँ लिखते है

(१) कविया गोपाल का जन्म-काल तो ठीक मिला नहीं, परंतु वे ७० वर्षकी उमर में मरे थे अतः १६७२ का संवत् उनका जन्म का संवत् अनुमान से आता है, क्योंकि अवसान उनका संवत् १९४२ विक्रमी, मिती भादो बदी १४ का उनके वंशजों से जाना गया है ।

(२) उदैपुरना और चोखा का वास भिन्न भिन्न नहीं है, एक ही गाँव के नाम है । कवि के मोतीदान वंशज से जाना गया कि यहाँ एक चोखा जाट बड़ा दातार था जिसने गरीबों को रोटीराबड़ी दी थी और वह मुखिया और धनाढ्य था, इससे इसे 'चोखा का वास' भी कहने लग गये थे ।

(३) 'चंडीवाल' कोई पृथक् गोत नहीं है । यह शब्द चंडीवाल = चंडी + बाल है, जिसका अर्थ चंडी (देवी, करणी चारणों की इष्ट कुल-देवी) का बाल पुत्र होता है । चारण लोग अपने आपको करणी के पुत्र कहते हैं, सोही चंडीवाल शब्द से प्रगट होता है ।

(४) "पूरब जिनको भोन" यह शुद्ध पाठ "पूरब जीण को भोन"

है (पूर्व की तरफ जीण माता का मंदिर है) और "वसत सुकवियो ग्राम" का शुद्ध पाठ "वसत सुकवि को ग्राम" है (जो ऊपर ठीक कर दिया गया है)।

(५) कवि के ग्रन्थों में "कृष्णविलास" है, सो खंडेले के राजा किसन सिंह जी (कृष्णसिंह जी) के वास्ते, उनके प्रधान पुरोहित श्री वल्लभ जी के आदेश से बनाया था। 'केसरीसिंहरासा' (खंडेले का अन्य ग्रन्थ) किसी अन्य कवि ने बनाया है। यह बात बारहट बालावक्ष जी हणूँतिया वालों ने कही।

(६) कविया गोपाल के विद्यागुरु उनके काका (चचा) कवि रामनाथजी थे। अतिरिक्त क० गोपाल ने तिजारे (इ० अलवर) में रह कर वहाँ प्रसिद्ध विद्याप्रेमी रईस बलवंत सिंह जी से काव्य पढ़ा था। बलवंत सिह जी अलवर के राव राजा बख़तावर सिंह जी की ख़वास (पासवान) 'मूसी' के बेटे थे।

(७) कविया गोपाल की माता ग्राम 'चारण वास' के जवानजी जागावत की बेटी थी। चारणवास कसवा सींगोद (इ० खंडेला) के पास है। गोपाल जी की बहिन 'चाँद बाई' थी जो बारहट बालावक्ष जी पालावत हणूँतिया वालों की माता थी। चाँद बाई के एक छोटा पुत्र और भी हुआ था परंतु बालक दो वर्ष का होकर ही मर गया था। कविया गोपाल के एक भाई गिरधारी था।

(८) 'शिखर-वंशोत्पत्ति' लिखने में चारण 'मुकुंदजी' और चारण कवि 'नंदजी' सांडूगोतवाले से हालात की सहायता भी मिली थी। ये दोनों बहुत इतिहासज्ञ थे।

(९) बारहट बालावक्ष जी (इस ग्रंथमाला के संस्थापक) कविया गोपाल के खास भाणजे होते हैं। बालावक्ष जी अपने ननिहाल भी रहते थे, अपने मामूं गोपालजी से खूब प्रेम रखते थे। परंतु विद्या इन्होंने रामनाथजी के पुत्र देवीदानजी से सीखी थी और उदेपुरना के दादूपंथी साधु खेमदास से तथा शिवदत्त पंडित से भी।

(१०) कविया गोपाल की संतति का वंश वृक्ष यो हैं

वंशक्रम कविया गोपालजी का (जो सीकर के ग्राम उदेपुरना अपर नाम चोखा का बास में रहते थे)।
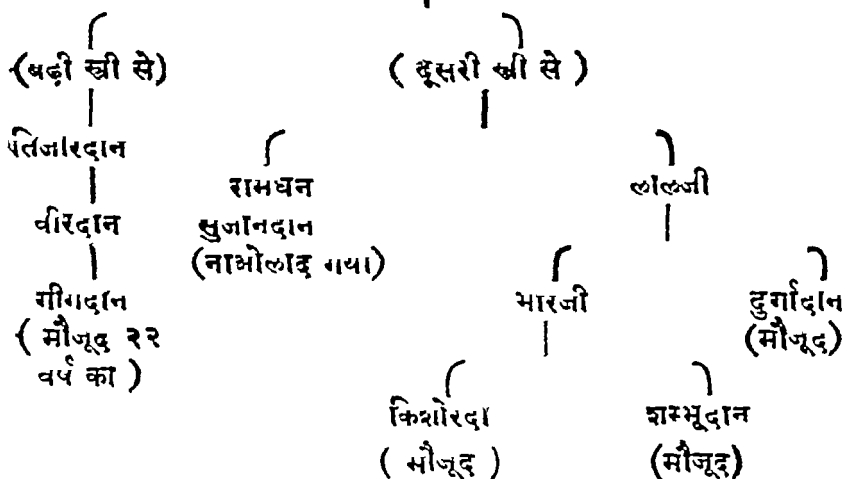
(११) कविया गोपाल जी पहली स्त्री 'रामपुरा' ग्राम की थी। उसके शांत हो जाने पर दूसरी शादी ग्राम रसाल (इ० कुचामण, जोधपुर) सांदू-गोत के चारणों के यहाँ हुई थी। इनकी संतानें वंशक्रम वृक्ष से जानें।

(१२) कविया के वंशजों दुर्गादान और किशोरदान ने ये बहुत से हालात लिखाये हैं। उनके यहाँ पुस्तकें भी हैं। नवलगढ़ मुकुंदगढ़ के ठाकुर साहिब श्री बाघ सिंह जी द्वारा भी कई एक हालात ज्ञात हुए हैं। तदर्थ धन्यवाद।

पुरोहित हरिनारायण।

सूचीपत्र ।

कवियां गोपीलकृत

शेषर वंशोत्पति

पीढी वार्तिक

दोहा

(१) पीढ़ी

श्रीगनेश गिरिजा गिरा, गुरू गिरीश मनाय ।
हंस वंस कुल कच्छ गुन, वरनूं ग्रंथ बनाय ॥ १ ॥
सुख संपति करनी सदा, करनी सदा सहाय ।
करनी रचना ग्रंथ की, करनी देव मनाय ॥ २ ॥

वार्ता छंद

उदैकरण राजा आँबैर पाटि बैठा ।
उदैकरण राजा कै बेटा तीन सैठा ॥ १ ॥
बाला १ वरसिंघ २ वरसिंध ३ नाँव पाया ।
तीनांका तीन पाट थांन जो बताया ॥ २ ॥
अंबानैर जेठो नरसिंघ राजगादी ।
मोजाबाद छोटा वरसिंघ ने बतादी ॥ ३ ॥
बालैराव बरवाडै थांन राज पाया ।
पीढी दोय पाछै अमरसर का राज आया ॥ ४ ॥

घोडी राव वाला कै सिरा कीषानि ल्याती ।
घोडो जो दिषाता सो वछेरो रंग ल्याती ॥ ५ ॥
राजा अंबपुर कै राववाला नै कहाया ।
थांकै मामला सो फेरि कोडी का नदाया ॥ ६ ॥
घोड्यां कै वछेरी है जकी तो राष लेणी ।
वाकी का वछेरा सो तवेलै घाल देणी ॥ ७ ॥
वालारावजी कै तीन वेटां नाँव पाया ।
वालैराव पोता षरथ १ षीवाँ २ का कहाया ॥ ८ ॥
वालारावजी को पाट मोकलराव पायो ।
षीवां षरथ कानैं गांव एकै को वतायो ॥ ९ ॥
इति श्री कविया गोपाल कृत पीढी वार्तिक
वाला समाप्तो ।

(२) मोकल यथा ।

मोकल रावजी कै सोष घोडों की सवाई ।
कोसां दोय ऊपरि कारवानां दोय आई ॥१०॥
एकां एक घोडो फेरवा कै नांय आया ।
दो दो च्यारि घोडा कारवांना का फिराया ॥११॥
मन मैं यो विचारी मोलि कुंण का षांच लेसी ।
खानाजाद थारा तो नो वछेरा भी न रैसी ॥१२॥
मोकलसौं उदासी धारि पाछो ही वदलिगो ।
मोकल नै भुरानी स्याह जंगल बीचि मिलिगो ॥१३॥

दोहा।

मोकल नैं जंगल मंही, फिरतो मिल्यो फकीर।
स्याम ताज कफनी असित, सुवरण जिसौ शरीर ॥३॥

वार्ता छुन्द

स्याम ताज कफनी कमंडल मैं नीर।
डाढी सुपेत सेष सुवरण शरीर ॥१४॥
मोकल राव आतो देषि माथा कौं नवायो।
सांई स्यां मुरांनो सेष नामी पथ पायो ॥१५॥
जंगल में चरैछी सो अव्याई झोटी आई।
मोकल का कनांसू सेप चीपी में दुहाई ॥१६॥
वोल्यो दूध पीकै सेष नीकी भांति रैणां।
तेरे पुत्र होगा राव सेषा नांव कैणां ॥१७॥
वकर का हलालो षांण सूकर कोन षांणां।
नीलाही नीसांणां राषि फकर कौं जिमाणां ॥१८॥
मोकल रावजी नें कैरि सांई तो विलाया।
मोकल रावजी कै राव सेषो पुत्र जाया ॥१९॥

दोहा

अरक वार दसमी विजय, कार सुकल सिधि काम।
जिण दिन सेषो जनमियो, वरवाडे वरियाम ॥४॥

इति श्री कविया गोपाल कृत पीडी वार्तिक।
मोकल समाप्तो।

(३) सेषो यथा।

सेषो वरवारा[1] में हुवो के भाग जाग्यो।

केई लाष रोकडो को षजानूं हाथि लाग्यो ॥२०॥

धरती बीचि कोई को धर धर्योडो माल पायो।

करता जो विसमर राम सेषाँ नै वतायो ॥२१॥

घोडा आसवारां राषवाकी शोष जादा।

तोपांकी तयारी सोर सीसोले नवादा ॥२२॥

वारा पकड़ांई पंथ आया छा नवीना।

वाई ही पठाणां राव सेषो राख लीनां ॥२३॥

जां दिनां मैं चंद्रसेणि राजा आमैर।

मोजावादि वरवाडा ऊपरि वहुत सेर ॥२४॥

कागद राव सेषां पै जरूरी मांड दीनूं।

घोडाका मँगावा को तागदो वहोत कीनूं ॥२५॥

कागद राव सेषै अंवपुर नै मांड दीनां।

घोडा फेरि देणां नाकवूली धार लीनां ॥२६॥

दीनां आज ताँई दाम जांका तो दिरावो।

घोडा चायजे तो कारदानां मांलिरावो ॥२७॥

मोजावादि वरवाडो ठिकाणां दोय दीनां।

चोदासै चमालीं गांव थेहो दांवलीना ॥२८॥

आपां तीन सारीपा ठिकाणां फांट लेस्यां।

तीनूं धालिडोरी तीनि पांत्यां वांट लेस्यां ॥२९॥

१ "वरसवारा मे" पाठांतर।

एता आंक सेषै चंद्र सेणी नैं लिषाया।
राजा चंद्रसेणी कोप दूणांसा दिषाया ॥३०॥
फोजांकी तयारी साथि सेषा सीस आयो।
सामूं राव सेषो चंद्रसेणो कै चलायो ॥३१॥
मोजावादि कांनीसूं नरू का फोज ल्याया।
सो भी राव सेषा सांमलाती फेरि आया ॥३२॥
दोनूं ओड तोपां की लडाई होंण लागी।
दोनूं ओड तोपां मैं सतेजो सोर जागी ॥३३॥
सेषो चंद्र सेणी भूप दोनूं जंग जूटा।
सेषाराव आगें चंद्रसेणी भागि छूटा ॥३४॥
फेरो दोय वारी भूप दोन्यां की लडाई।
तीनूं वारही में राव सेषो जैत पाई ॥३५॥
सोलासै सत्यासी ओद्र्यां का षेत पडिगा।
राजा चंद्रसेणी अंबपुर मे जारि वडिगा ॥३६॥
पांती चंद्रसेणी भूपदेणी धार लीनी।
पांती वार तीनां की लिषावटि मांडदीनी ॥३७॥
पांतो एक राजा चंद्रसेणी कै रहाई।
मोजावादि दूजोडी नरूकां कै लगाई ॥३८॥
पांती तीसरी नै रावसेषो आप लीनी।
वांडी जो नदी को नाम जैं की सीम कीनी ॥३९॥
वांडी तीर उत्तर की दिसामैं राज आयो।
सारो अमरसर को देस सेषां कै रहायो ॥४०॥

वांटा तीसरा को राव सेपै राज पायो ।
गादी पै बरोवरी राव सेषा नै बैठायो ॥४१॥
पांती वार लीनी भोमि छोड्या वंट दाया ।
वाको देस दाब्या राज सेषैयों वधाया ॥४२॥
असैं रावसेषै अमरसर का राज पाया ।
वारा कोटड्यां मे यों पठाणां नै वसाया ॥४३॥
दोनूं ओड भावि जोगि कोई कामि आवै ।
सेषां का पठाणां वैर कोई भी न पावै ॥४४॥
दोनूं ओड सेषैया लिषावढि मांडि दीनी ।
हांगूणां निवाणां डूंगर्यां को भोमिलीनी ॥४५॥
तीस हजार साथि घोडा रजपूत ।
वीस हजार फौज पयादी मजवूत ॥४६॥
तीय हजार सोर सीसा का ऊँट ।
जंगी वाईस तोप वैलों की जूट ॥४७॥
पता कमास लै अगोणी भूमि आया ।
जाटूकी भिहाणी दावलेणीयों कहाया ॥४८॥
सारा जाट वांभी वात सारी जांण पाई ।
फौजाराव सेपा की आगोणी भूमि आई ॥४९॥
दादरी विहाणी चरपी हांसी हंसार ।
सावक हीसांमलाति प्यादा असवार ॥५०॥
सारा सांमलाति ह्वै लडाई काज आया ।
सेपै जाटवां कै सीस घोडां नै उठाया ॥५१॥

सारां सूं आगाउ यां पाठाणां जंग जूटा ।
जादू लोग सारा जूटताही भागि छूटा ॥ ५२ ॥
सारा दौडि जादू सैर किल्ला सांकडाया ।
सारा सैर किल्लांका किवाडानैं जडायो ॥ ५३ ॥
दादरी मे जादू का नोपसिव नाम ।
सेपैराव जैंको सैर घेल्यो तमाम ॥ ५४ ॥
नोपासैर किल्ला छोडि वारैंकाम आया ।
किल्लो सैर दोनूं राव सेषा कै रहाया ॥ ५५ ॥
सेषै दादरी कै वीचिथांणानै वठाया ।
फेरूं या पठाणांने विहाणी कोषिनाया ॥ ५६ ॥
जादू एक हल्ला मैं विहाणो छोड भागा ।
सेपा को दुहाई फेरि पाछै लैर लागा ॥ ५७ ॥
कोई दूरितांई जांटवानैं भी भजाया ।
पाछैं राव सेषा सामलाति फेरि आया ॥ ५८ ॥
तीनूं ही ठिकाणां राव सेपै दावलीनां ।
फौजां फेरि हांसीका किल्लानैं जोरदीनां ॥ ५९ ॥
होता कामषांनी कौम हांसी हिसार ।
हीदेषान नांमायेक दूजायकतार ॥ ६० ॥
दोनूं सामलाति होय सेषा पैंचलाया ।
ऊंनैं राव सेषा भी लडाई काज आया ॥ ६१ ॥
दोनूं ही ठिकाणां का उडाई षूब लीनी ।
दोनूं कांम षांनी कांमि आयां भूमिदीनी ॥ ६२ ॥

ही देषांन सेषा की लडाई भूमि पोड्या ।
वाकी कांमषांन्यां फोजसूधा पेत छोड्या ॥ ६३ ॥
हीदा पेत हांसी लूंण आटा ज्यों मिलयागा ।
दोनूं हीं ठिकाणां छोडि दिल्ली नैंच ल्यागा ॥६४॥
हांसी हंसार पारतांई फुरमाण ।
आंघो थो लाई तार सेषा की आंण ॥ ६५ ॥

दोहा

दावि विहाणी दादरी हांसीगढ हंसार ।
सिषर पजाई सांमठी गवडां धरा लगार ॥ ५ ॥

वार्ता छंद

सावक राज देसां में दुहाई सूं जमाया ।
पाछै राव सेषापाट थानक फेरि आया ॥ ६६ ॥
आगै अजमेरि वछराज गोड होता ।
गोडाटी कहावै वच्छराज गोड पोता ॥ ६७ ॥
जा दितां में ठोड ठोड गोडां का ठिकाणां ।
सावक नगार वंध राजा राव राणां ॥ ६८ ॥
जां दिनां में कोला गोड भूथरी का राव ।
भूथरी की सींव में षुदा वैछा तलाव ॥ ६९ ॥
कोई पौदवानं तो मजूरी काज आता ।
गैलागीर आता सो ढकोला नापि जाता ॥ ७० ॥
ताही पंच कोई कूरमां कै वंस जायो ।
मारूदेसमांसूं जो कवीला लेर आयो ॥ ७१ ॥

सागै आदमी भी जाट नाई सा बताया ।
    मैली में कवोला ई तलाई तीर आया ॥ ७२ ॥
आनै पंथ जातां एक गोलै रोक लीनां ।
    आगै आगि सारां कै ढकोलानांग दीनां ॥ ७३ ॥
दूंणारेत चोल्या यांकनासूं तो नषाया ।
    पाछै दोय चोल्या ठाकुराणी का वताया ॥७४ ॥
चोल्यो च्यारि चोल्या मैं कनांसूंथे नषावो ।
    मैली काकनांसूंशे सगाछो ऊठि जावो ॥ ७५ ॥
सारा गौंडवंसी छो विचारो वात देषो ।
    म्हारै पूठि पाछै भी तपैछै राव सेषो ॥ ७६ ॥
कोलाराव वोला ई लुगाई नै उतारो ।
    आडा जो फिरै तो कोरडां सूं फेरि मारो ॥७७ ॥
कोला की जुवांनो छूटि तांई फेरि आया ।
    ई भी म्यांन मासूं लेर सामांहीं चलाया ॥ ७८ ॥
गोलै कोरडानैं हाथ ऊँचो लेउभाखो ।
    ऊँचो हाथ होतहीं जकैनै ठोडि मास्यो ॥ ७९ ॥
ईनै भी तलाई मैं यणां ह्वै मार लीनूं ।
    गोडां मारि ईनैं फेरि सारा सोच कीनूं ॥ ८० ॥
हेलो देर ईका साथ कांनैं वुला लीनां ।
    ई न दाग आवो हाथ थां ॥ ८१ ॥
ईनै दाग आवो हाथ थां कासूं दिरावो ।
    ईकी लुगाई नैं थे यरां न लेर जावो ॥ ८२ ॥

पैली दाग दीनूं फेरि मैली नैं जुपाई ।
वैंकी ठाकुरांणी अमर सर कै थांन आई ॥८३॥
म्हैलां सांकडीसो आंण मैली थांमि दीनी ।
मूंडी पक वालू की पलाकै बांध लीनी ॥८४॥
सूधी राव सेपाकी विछात्यां आंण लीनी ।
गादी कूंट उपरि षोलि वालू मेल दीनी ॥८५॥
सूणी देपी चोपी वात सूंणां की वताई ।
देषो रावजी को भाग ओरूं भूमि आई ॥८६॥
वोल्या राव सेपोजी जुवांनो सूं सुणावो ।
वालू आंणि मेली आप कुंणछो सो वतावो ॥८७॥
वोली ठाकुरांणी मैं राठोडां वंस जाई ।
माई तां पिनाई व्याही कूरम वंस आई ॥८८॥
झूंथरी नांव वोलिकै निसासो फेरि नांष्यो ।
मेरा व्याहता नै षूनहीणू मारि नांष्यो ॥८९॥
मरतै वष्त वोल्यो छो अेकलो ही न देषो ।
मेरी पूठि पाछे भा तपैछै राव सेषो ॥९०॥
पीढ्यां मैं वडेरोछो जकै तो साष काको ।
पाछै पाटवो छो वैर आंटो काढवाको ॥९१॥
ताही स्यात सेपै जीन घोडां पै कराया ।
कोला गोड मायै कोपि झूंथरी पै चलाया ॥९२॥
जां दिनां मैं कोलराज झूंथरी को राव ।
कोलो लाव नांव सो षुदावैछो तलाव ॥९३॥

सेषोराव सूरज उगंतां की साथि आयो।
कोलो गोड कोलो लाव हीकोपालिपायो ॥९४॥
सेषै देषतांही राव घोडां भेलि दीनां।
गोडां का समूंचा भायपानै मारि लीनां ॥९५॥
पोडां की धरा में राव सेषा की दुहाई।
गांवांयकावनके सेत भूंथरी आपणाई ॥९६॥
गोडां दोयसैनै राव सेषै मार लीनां।
सारांनै तलाई पाल मैं दाग दीनां ॥९७॥
भूंथरी कै ठिकाणै गोडवंसी तो उपडिगा।
कोई उवस्था सो धाटवां में दोडि वडिगा ॥९८॥
भूंथरीकी रूपाली काज थाणां नै रषायो।
मांथोकाट कोलाको अमरसरनाथ आयो ॥९९॥
मांथो राव सेषै हाथि मांणस कै षिनायो।
काकी रावजी को थाल मोत्यां सौं भरायो ॥१००॥
माथा सैतमोत्यां राव सेषा नै वधायो।
सेषा नैं वधास्यो फेरि वोलीगोड जाज्यो।
भूंथरी को ठिकाणूं राव सेषाकै रहाज्यो ॥१०१॥
लेणो फेरि पाछी गोड भूथरी काज आया।
फौजां राव सेषा को लडाई कौ चलाया ॥१०२॥
ऊँनै राव सेषा को सतेजो लोग आयो।
ऊँनैषेत पूर्व्यां तोर गोडां सांकडायो ॥१०३॥

घोडां की वाग लीनी गोडां सताव ।
सेषा की फौज वीचि कीनां गरकाव ॥१०४॥
घोडा रजपूत च्यारि सैं तो पेति पडिगा ।
बाकीऊबरथा सो घाटवां मे गोड वडिगा ॥१०५॥
गोडां सौं ग्यारा चोगान की लडाई ।
बांवनराडिसारी राव सेषा की वताई ॥१०६॥
वावनमी लडाई राव सेषै काम आया ।
बैठा पाढिरायांमल सेषै राव जाया ॥१०७॥
इति श्रीकविया गोपालकृत पीडी वार्तिक राव सेषो समाप्ती ।
समाप्ती ।

(४) राया मल यथा ।

आमा १ कुंभ २ अचल ३ भारू ४छोटा च्यारि भाया ।
पेजडोल्या मिलक परथा गांवां सैं कहाया ॥१०८॥
डुर्गोजी २ रतनूंजी सेषा का जाया ।
डुर्गोजी नांणो गांव थानिक अपणाया ॥१०९॥
माजी टाकाणी के नांय वाज्या टकणैत ।
रतनावत पाळ्यों डांला वांनहसूरसैत ॥११०॥
गोडाटी विचि सब गौड वतलाया ।
घाटवै लडाई राव सेषा कामि आया ॥१११॥
रायामल वैर कायरादा धारि लेसी ।
गोडाटी घाटवा समेत दाव लेसी ॥११२॥
सारा गोड भेला ह्वै मनोरथ वांध लीनां ।
थानकी मारोट रायमल को ब्याय दीनां ॥११३॥

दाया वैर का तो ब्याहि वेटी दूर कीनां।

झूथरीका परादा डायजा में छोड दीनां ॥११४॥

रायामल पास एक रहता रजपूत।

जाति का पँवार स्यांम धर्मी सावूत ॥११५॥

मारवाडी धरती षीचियांकै जारि ब्याया।

षीचाणि नैं साथि लै फतैपुर सैर आया ॥११६॥

जां दिनां फतैपुर कामषांन्यां को राज।

गादी पर अलप षांन कांमी निरलाज ॥११७॥

गैला कै ऊपरि एक जायगा वणाई।

देष्यां विना कोई भी न जावादे लुगाई ॥११८॥

ऊभी राषि सामी घूंघटानैं तो षुलावै।

आवै दाय जैनैं फेरि सेजां में वुलावै ॥११९॥

इं गैलै आयो रजपूत दोय वार।

आडा फिरि पूछ लीनां सारा समचार ॥१२०॥

भैली कों वोल्या नवाव घेरि ल्यावो।

नीची उतारि यां लुगाई कों दिषावो ॥१२१॥

भैली का पैडा पासि उभा मजवूत।

वासी अमरसर का रायमल का रजपूत ॥१२२॥

वोल्यो मूझ ऊभां आंणि परदा कूंउथेलै।

धरती को भार सेस नाग नहीं झेलै ॥१२३॥

ऐसी वात वोल्यो कै दुधारो हाथ लीनूं।

पैली ठाकुराणी सीस हाथां दूर कीनूं ॥१२४॥

सातूं ही जणां हैं साथि आवध ले चलाया।
सौला कांमि पानी मारि पाछै कामि आया ॥१२५॥
नाई उबरया सो जीव लेकैं एक भागा।
ब्यौरा फेरि नाई की जुबांनी आणि लागा ॥१२६॥
रायामल रूठा राव सेवै अंस जाया।
कोसां कोस ऊपरि डाक छानैं से वठाया ॥१२७॥
पती बात छानां की नवाबांनैं सुणाई।
सांमी अमरसर कै डाक अलपैवी वठाई ॥१२८॥
दौनां का दिल में दगा करणों का दाव।
अलपषां नवाव ऊनैं रायमल राव ॥१२९॥
कोई का दाव साम्फ कोई भी न आया।
रायां मल राजा एक मन सूवा उपाया ॥१३०॥
चौमासा आया तव सांवण मास।
रैता उमराव जेता रायमल पास ॥१३१॥
तीजां पर सावकनैं सीष फुरमाया।
आणे का सईचा जो सिजारा नैं वताया ॥१३२॥
जोड़ा की पाल मारोट का ठिकाणां।
च्यारि घडि राति रयां सांमल हो जांणां ॥१३३॥
अलपा नै डाक मांझ पती लिषा दीनी ॥
रायांमल सवही नैं सीष दे दीनी ॥१३४॥
घोडा पांच सागै मारोट नैं चलाया।
कागद वांचतां हीं जीन जीन यों कहाया ॥१३५॥

छाणि आंवणों का कांम कोई को न कैंणां
रायांमल पावै जो जहाँ सों पकडि लैणां ॥१३६॥
रायांमल घोडा पाँच सागै ले चलाया।
घोडा सात सै सूं कामषांनो पंथ आया ॥१३७॥
आया उमराव रायमल का तमांम।
ग्यारा सैं घोडां का बणिगा कमांम ॥१३८॥
भालों को अणियां सै आसमान छाया।
जीण वारि तांई कामषानी फेरि आया ॥१३९॥
सामांआवतां हीं आणि व्योरा फेरि लागा।
व्योरा लागतां हीं कामषांनी पूठि भागा ॥१४०॥
ताहि स्याति रायांमल को भी ठीक हूगा।
घोडा हांकि कोसां पाँच उपरि जाय पूगा ॥१४१॥
रायामल पूगा कांम षांनी देषि अडिगा।
मीढां की तरह सूं एक टकर ले मुरडिगा ॥१४२॥
रायांमल आगै कामषांनी फेरि भागा।
हास्यां तेज ताजी रायांमल भी लैर लागा ॥१४३॥
सोला कोस तांई सामलाती वीर साका।
पाछै और घोडा लोग सारा लूट थाका ॥१४४॥
इका नवाव इका रायमल राव।
दोनां का दिल मे मारि लेणें का दाव ॥१४५॥
वीस पैंड दोनां का घोड़ा वीच लागैं।
दोनूं हांकि थाक्या पणि आंतिरा नभागै ॥१४६॥

रायांमल तवही मारणे का दाव कीनां।
झोडाका कनारा कामपांनो जाय लीनां ॥१४७॥
आयो वीढ जाण्यो रायमल का सेल छूटा।
जैसों कामषांनी जीन बगतर बाज फूटा ॥१४८॥
मारा कामषांनो कों सवाया वैर आया।
रायांमल वीरांवीर सेपै राव जाया ॥१४९॥
जां दिनां मेंडोवर मे माला राठोड।
परवत सर धाटवा समेति सब गौड ॥१५०॥
दोनां कै सीवां का अडाव ठहिराया।
माल दे मडोवरसैं गोडां पर आया ॥१५१॥
गोडां फौज मेली कर सामने चलाया।
कागद भेज राजा रायमल जी नै बुलाया ॥१५२॥
रायांमल घोडा आठसां नैं लेर आयो।
मालांकी अण्यासूं आसमाणी लोक छायो ॥१५३॥
दोनूं राठोड गोड कांकडां लडैछा।
दोनां का घोडा रजपूत ऊघडैछा ॥१५४॥
रायांमल पते राव घोडां नैं उठाया।
तूटा आम जाणी मालदेकै सीस आया ॥१५५॥
दोनूं ओड जोधा जूरमां कैसार वागा।
पाछै मालदेजी मडोवर का पथ लागा ॥१५६॥
रायांमल राजा मालदे सैं जैत पाया।
वाजतां नखरां अमरसर कै थान आया ॥१५७॥

केतो बार कोनी राव केती ही लड़ाई ।
रायांमल जूटा जैं लड़ाई जैत पाई ॥१५८॥

इति श्री कविया गोपाल कृत पीडी वार्तिक रायांमल समाप्ती ।

(५) (राव सूजो यथा)

पाछैं रायांमल कै पाटि बैठा राव सूजा ।
सूजाराव जीं कै पाँच बेटा भांण दूजा ॥१५६॥
टीकाई जकां में लूणकर्ण जी पाट पाया ।
भैरूं जी १ लुहारू थान भैरूं का कहाया ॥१६०॥
गोपालै ? बसाया गांव झाड़ैली सुरांणी ।
चांदे १ मैणपुरकी बावसोंकी भोमिआंणी ॥१६१॥
राजा रायसलजी गांव लांम्यां एक पाया ।
साहांसाह देई दास जी नैं साथि ल्याया ॥१६२॥

इति श्री कविया गोपाल कृत पीडी वार्तिक रावसू जो समाप्ती (६) रायसल यथा ॥

अकल का देई दास बणियां उदार ।
सारी बात जोगारायसल का कांमदार ॥१६३॥
एक गांव लांवी सूंठिकाणां नै वणाया ।
धरती बीचि कोई का धरोड़ामाल पाया ॥१६४॥
जाणै कौण एती बात सुणता जां बताई ।
ग्यारा लाष रुपयां को असरफीभूमि पाई ॥१६५॥
दिल्ली आगरामें जां दिनां का ए विचार ।
आई फोज वलषी बादसाहां की अपार ॥१६६॥

रायांसाल जांणी वात सूजै राव जाया।
घोड़ा सात बीसी लेकर दिल्ली सेर आया ॥१६७॥
घोडा रजपूत देष चंगा हमगीर।
नगदी में राष लीनां वकसी उजीर ॥१६८॥
बादशाह कतलूषांन वलष सैं चलाया।
केई लाष घोड़ा ले दिल्ली पै कोपि आया ॥१६९॥
अकबरस्याह फोजां लेर सामांही चलाया।
जांणी दो समुद्रांपाज लोपी जेम आया ॥१७०॥
नो नो लाष फोजां वादिसांहा कै बताया।
सत्तरिषांनवहत्तरीराव राजा साथि आया ॥१७१॥
अकबरसा वादिस्याह कीनां परयांण।
भालों की अणियां सैं छाया असमांण ॥१७२॥
केई तोप जंगी जूंट वैलों की चलाई।
केई पंथ लम्बी तोप हाथ्या पैहवाई ॥१७३॥
दोनूं वादिशाहां की फौजां मिलांण।
दोनूं वादिसाहां का कर्त्ता फुरमांण ॥१७४॥
एकै वार लीनी तोप गोलां की लड़ाई।
पीछै वादिसांहा वाग घोड़ां की उठाई ॥१७५॥
सेर वच्चा करावीणी षंजर कटार।
सिरोही असील तेग बाहैं असवार ॥१७६॥
दोनूं वादिसांहां कैसतेजा वाज आया।
अंगां लाहोर की लड़ाई में उठाया ॥१७७॥

वलषके वादिस्याह अकवर कौं जाणि।
वरछी कौं तोली ह्वैरकावूं कै पांणि ॥१७८॥
अकवरसा वलषी वादिस्यांह कौंपिछांणां।
भागां लाज तषत की जूटै जीव जांणां ॥१७६॥
वादिस्याह अकवर नैं भाजणीं उपाया।
जीवकौं वचाणां भी तषत का छोड़ि दाया ॥१८०॥
रायां साल ताही स्याति दोनां वीचि आयो।
वोल्यो वादिस्यां नैं गाली पीछा कौं हटायो ॥१८१॥
साहां कै अगाड़ी आंणि ऐसी तेगवाही।
दोनूं वादिसांहां की सिपाहां भी सराही ॥१८२॥
वादिस्याहा वलषी तो वीर भोमि पोड्या।
वलषो विलायतों का वीर षेत छोड्या ॥१८३॥
वागा वादिस्यांहां के कुस्याली का नगारा।
दोनूं दीन हाजरि चाकरी में आंणसारा ॥१८४॥
दोनों दीन वोलै साहि आगै वात आही।
वलषो वादिसाहां सीस मैनैं तेगवाही ॥१८५॥
नांहां नाह अकवर साह सारांनैं पिछांणैं।
छो तो जाति हिन्दू एक एती वात जांणैं ॥१८६॥
वादिसाह एक दिन कीनां फुरमान।
सावक सवार होय धोड़ा जवान ॥१८७॥
दोनूं दीनहींका लोग मेरे पासि आंणां।
मेरे पासि आकै फेरि डेरां ऊठ जांणां ॥१८८॥

सोही लेर आणां जो लड़ाई का समाज ।
घोड़ा जीन कपडा सेल कमरि का साज ॥१८६॥
ऊपर कौं थकसी उजीर बादिस्याह ।
नीचो कर जाणां असवारों का राह ॥१९०॥
रायांसालसारां सौं पछाड़ी भूप आया ।
दूरां सौंपिछाण्यां साहि दिल्लीक बताया ॥१९१॥
मेरी जाणि तो उजीर यही रजपूत ।
ढाल तरवारि घोड़ा पछाड मजबूत ॥१९२॥
मेरी जाणि याही जीव मेरा कौं बचाया ।
जीवां भी बचाया पाट दिल्ली कै बैठाया ॥१९३॥
रायांसालजी नैं साहि दिल्ली कै बुलाया ।
सारां आवणां केसैध रायां साल आया ॥१९४॥
दिल्लीनाथ बोल्या नांवकांई गांव रैणां ।
कांई जाति बेटा तू किसका मोहि कैणा ॥१९५॥
भाई का अमरसर थांन सेषै वंस जाया ।
रायां साल नामी राव सूजाका बताया ॥१९६॥
षलषोबाद्दिसाहां सीस वाही तेग तूछा ।
सच्ची बात कैणी बादिसांहां रामपूछा ॥१९७॥
कतलू साही मेरा जीवलेणे काज आया ।
तैंनैं क्या जुवानी व ली पीछाकौं हटाया ॥१९८॥
रायसाल बोल्या सुणि दिल्ली सुलतान ।
वैही ठौड बोल वैकी वैतौ जुवान ॥१९९॥

नोवति पै अकवर सा वादिसाह आया ।
वावन वार डंका वादिसांहां ले लगाया ॥२००॥
वावन पिड़गनां तो रायसल नै साहिदीनां ।
सारा पंचमारी का मुनासव कुरव कीनां ॥२०१॥
माही वा मुरातव फोल जंगी पीठि वाजा ।
दीनां षंडपुर का राज रायां साल राजा ॥२०२॥
जेती भोमि मेरी मे दुहाई का उचार ।
पोस लेणां देदेणां तेरे यक तार २०३॥
दिल्ली की विलायती के हिन्दू तुरकांण ।
राजा राय सल का सब ऊपरि फुरमांण ॥२०४॥
घोडा ऊंट हाथी तो पय्यादी फौज वैणां ।
सूवादार सावक रायसल की साथि रैणां ॥२०५॥
पताथोक पाया आगरासों भूप आया ।
दोनूं दीन हाजिर होय मांथा कौ नवाया ॥२०६॥
जां दिनां षंडेलै निरवांणा को राज ।
साज वाज देस कोस विगड़्या समाज ॥२०७॥
जांनै काढ दीनाँ देस वारैं भूमि काजा ।
वैठो षंडपुर कै पाटि रायां साल राजा ॥२०८॥
सोलासै अठारा साल वीत्यां होय सेठो ।
रायां साल राजा षडपुर कै पाटि बैठो ॥२०९॥
पैलां राव सेषों जाटवांकी भूमि लूटी ।
रायां साल सेषां कै रहाई फेरि छूटी ॥२१०॥

सोही जाटवां की भोमि लेणी का इरांदा ।
फौजां ले चलाया जाटवां कै सोर ज्यादा ॥२११॥
उत्तर की दिसा में रायसल का देप आणां ।
होगा सामलाति जाटवां का जो ठिकाणां ॥२१२॥
जाटू सामलाति होय मरणी काज आया ।
ऊंनसो नवावी फौज भटनेरा उठाया ॥२१३॥
षान भटनैर कार जाटू रजपूत ।
लड़वैं का ठाठ वांधि आया मजवूत ॥२१४॥
आगे वादिसाहां की फोज का कमांम ।
जाटूषान देषी डर मान्यां तमांम ॥२१५॥
जाटू रजपूत षांन अधिका उपड़िगा ।
किल्ले भटनैर कै तमांम दोड़िवड़िगा ॥२१६॥
रायांसाल राजासैर किल्लो आंणिधेरयो ।
तोपां की लड़ाई सोर सीसासूँवषेरयो ॥२१७॥
पैलांसेर किल्ला पैं सतेजी सोर जागी ।
पाछै वोलि हल्लो वादि स्याहि फोज लागी ॥२१८॥
जाटू तो जिताही कोट वारैं कामि आयो ।
वाकीका वच्यासो भागि छूटा छोडिदाया ॥२१९॥
जाटू भागिछूटा भी कितांनैं मारि लीनां ।
किल्लावुरज ऊपरि षान पल्ला फेरि दीनां ॥२२०॥
ताहीषांन कौं तो वांधि दिल्ली भेज दीनूं ।
रायां साल राजा सेर किल्लो दाव लीनूं ॥२२१॥

रोकड़िका षजांनां हेरि सारांनैं वुलाया।
ऊंटा में भराया षंडपुरनै भी पुगाया ॥२२२॥
किल्ला मे पाया ओर जेता जषीर।
सावकही षडपुरनैं कीनां बहीर ॥२२३॥
नामीजो नगारो जंग जैती आप ल्यायो।
झंडो दुर्ग नामी बादिसांहांनै पुगायो ॥२२४॥
केतो भार किल्लाका किंवाड़ां भूप तो भी।
किल्लाषंडपुर का कै चढाया आंखि सो भी ॥२२५॥
पतै बादिसांहूं का आया फुरमांण।
सूवा गुजरात पल्लणपुर का पठांण ॥२२६॥
आवूगिर नारि हिन्दू जाड़ेचा जाम।
जूनांगढ़ भावनगर सिंधी तमांम ॥२२७॥
सत्तरि हजार गुजरात का वर्दलिगा।
सूबादार अैमदपुर का सैं जारि मिलिगा ॥२२८॥
मिलिकै बादिसाहूं का अमल कौं उठाया।
ऊंतीन बरस होगा तैसोलकूँ न आया ॥२२९॥
हाथी गांव बावन चारणां नैं दान दीनां।
तेरा लाष रोकड़िका दान पुंन्य कीनां ॥२३०॥
रायां साल राजा आप पश्चिमदेस जाणां।
सूवा गुजरात को विगाड़ि फेरि आणां ॥२३१॥
रायां साल किल्ला भटनैर तोड़िआया।
दान पुंन्य रीऊकै प्रवाह सा चलाया ॥२३२॥

ऊंधरती नापि एक सो यकावन का दान ।
विप्रा कौं देर फेरि करणां सनांन ॥२३३॥
कोई देश कोई गांव करणां मुकाम ।
दिल्ली का सूबा बादिसाही तमाम ॥२३४॥
याही गांव वासी ब्राह्मणां नै तेड़लेणां ।
पट्टामांडि पच्छिम की तरफ कौं नांपदेणां ॥२३५॥
ब्राह्मण ब्राह्मणी का आणां जाणां हमेस ।
पूठि पाछै रहणां तावड़ां का प्रवेस ॥२३६॥
वाकी गाँव भोमिरीज राजी होर कैंणी ।
एक सो यकावन तो हमेसां नाप देणीं ॥२३७॥
ऐसा नेम धार्‌यां देस पच्छिम कौं चलाया ।
सूबादार जांणीं पंडपुरका भूप आया ॥२३८॥
संगर सफील रैंणो जंगो कपाट ।
किल्ला में सीसा सोर तोपां का ठाट ॥२३९॥
सिंधी गुजरात का ठिकाणां सैंराह ।
जेती कम नेत नेत बधी सिपाह ॥२४०॥
एते भूप रायांसाल फोजां लेर आया ।
किल्ला सेर हल्ला वोलि दोनांनैं दवाया ॥२४१॥
दोनूं ओड़ तोपां की सतेजी धूम वागी ।
धूँणी सोर सीसा की अकासां जाय लागी ॥२४२॥
कोई सामलाती वां टिकाणां का न आया ।
रायां साल आठैं दहि किल्ला को छुड़ाया ॥२४३॥

सूबादार कामैत्यां समेति बांधि लीनां।
बेड़ी वालि दिल्ली कों सताबी भेजदीनां ॥२४४॥
ताला षोलि रोकड़िका षजानां काढ लीनां।
बाकी का जषीरी सो किलामें छोडि दीनां ॥२४५॥
सूबादार सूबै भूप दिल्ली से बुलाया।
रायां साल फोजां ले पुराणैं कोटि आया। ॥२४६॥
जूनै कोट दीहां तीन तांई सोर जागा।
सारा हींदवांका भी ठिकाणां पांय लागा ॥२४७॥
जूंनागढ भावलपुर आबू गिर नार।
जामनगर भुजनगर भावनगर धार ॥२४८॥
जाड़ेचा सर वहिया वाले सा जाम।
षीची यामारषांन सिंधी तमोम ॥२४६॥
तीनूं वरस तांई का मांमला भराया।
सूबें गुजरात कै नियाति षांन जाया ॥२५०॥
रायां साल सूबा गुजरात सरदकीनां।
हिन्दू लोग सारा द्वारिकानै साथ लीनां ॥२५१॥
छापांले पुरी में पुन्यि सारां का वढाया।
गांवां पांच पट्टामांडिटीकम कै चढ़ाया ॥२५२॥
षाही गुजरात की तलेटीका गांम।
रायां साल पट्टा मांड दीनां सरनांम ॥२५३॥

॥ दोहा ॥

रायां साल नरष्पियो दत विणषाली दीह।

पटां जिकणरी पाति सा लोंपन सक्या लोह ॥२५४॥

केई गांव भूमी राय सलका दान पट्टा ।

केई राज होगा हाल तांईनां पलट्टा ॥२५५॥

सूवां वादिसाही कां समूंचां भोमि दीनी ।

दोनूं दीन रायां साल दीनी सो न लीनी ॥२५६॥

सूवा वादिस्याहि पायनामां में लगाया ।

राजा रायसलजी षंडपुर कै पाटि आया ॥२५७॥

सारा ही प्रवाह रायसल का जो वर्तावै ।

पता ग्रंथ होवै फेरि पोथी में न मांवै ॥२५८॥

इति श्री कविया गोपाल कृत पीडी वार्तिक रायां साल समाप्तो त्रंमल यथा ।

रायां साल राजा कै समूँचा पूत वारा ।

ना ओलाद रैगा पाँच सांतां का पसारा ॥२५९॥

रायां साल जाया नांव पाया नाह नाहा ।

सातांनैं ठिकाणां वांट दीनां वादिसाहां ॥२६०॥

थेठू भोज राजा १ उदैपुर को थान पायो ।

रैवासो वड़ाजांलाडषां जीनै वतायो ॥२६१॥

रांणोली हराकै १ ताजषांकै चावड्यायो ।

परसै १ गांव न्यारो परस रामांपुर वसायो ॥२६२॥

गीधोजी रहायो पांट थांनी षंड पर को ।

त्रंमलराव १ होगो ईस नागाणां नगर को ॥२६३॥

तिरमल कौं वादिस्याह वकस्या नागौर ।

राव पदी वाही दिन आई सर जोर ॥२६४॥
भाई ओर सारा षंड पर की भोमि रैगा ।
नागाणां ठिकांणां राव अमल राज हैगा ॥२६५॥
अंमल कै तीन वरस भुगती नागोर ।
ता पीछै अंवापुर वालां का तोर ॥२६६॥
दिल्ली चाकरी में दोडि जगता मान जाया ।
नागाणां ठिकाणां वादिसाहां सै लिषाया ॥२६७॥
वाईसी साथि लेर कीनां पयांण ।
हिंमति का जोर वादिस्याही फुरमांण ॥२६८॥
किल्ला दाव लेणीको सतावी चालि आया ।
चार्‍यों मेरि हल्ला बोलि किल्ला पै चलाया ॥२६९॥
मैंना तीन तांई सोर सीसा की लड़ाई ।
एकै वंस जाया भूमि तावा की अड़ाई ॥२७०॥
जांणी वादिसाहां कोट नागाणां न छूटै ।
दोनूं षंडपुर का अंवपुर का ईस जूटै ॥२७१॥
ऊंनै मान जाया एक रायां साल जाया ।
दोनां का यरादा एक दिल्ली में रहाया ॥२७२॥
ऐसा वादिसाहां का छूटा फुरमांण ।
राषणां वरोवर ही दोनां का मांण ॥२७३॥
जगता नै वादिस्याह दीनी नागोर ।
कासली ठिकाणै राव अंमलको तोर ॥२७४॥
कासली ठिकाणै राव अंमल का राज ।

घोड़ा रजपूत राज कारिज समाज ॥२७५॥
पुरजा कासलीनैं वादिसांहां का पिनाया।
रायां साल जाया राव त्रंमलनैं बुलाया ॥२७६॥
दिल्ली राव त्रंमल वादिसाहां यासिपूगा।
जांणी अंवषासां वोचिदूजा भाण ऊगा ॥२७७॥
षत्री एक चांदूलाल दिल्ली मांझ रैतो।
जैकै काम रोकड़ि को षजानूं हाथि हैतो ॥२७८॥
वेटी रूपवती एक चांदूलाल जाई।
दिल्ली मे कुसीसैं रावत्रंमल कै रहाई ॥२७९॥
त्रंमलराव केतादीह दिल्ली में रहायो।
आयो कासलीनैं साथि वैनें भी लियायो ॥२८०॥
एक रवतांणी एक षतरांणी नारि।
दोनां को त्रंमलराव राषी यक सारि ॥२८१॥
त्रंमलराव जी कै पूत जाया फिरि तीन।
तीनूंही त्रंमलराव जी कै आधीन ॥२८२॥
रांणी एक गंगा १ एक वंद्दी छोड जाया।
पूरामल १ नांमीसो षवास्यां का वताया ॥२८३॥
त्रंमल रावजी तो सुर्ग कीनां पयांण।
दिल्ली में जहांगीर दिल्लो सुरतांण ॥२८४॥
इति श्रीकविया गोपालकृतपीढीवार्तिक त्रंमल समाप्तौ

पूरणमल गंगाराम यथा।
फोजां वादिसाही लेर सूबादार जूटो।

सोलासै धुंणंतरि कासलो को राज छूटो ॥२८५॥
गंगाराम बंदी छोड़ राणी कूंप बेटा ।
षांटा अमरसरका काजकीनां जोरि षेटा ॥२८६॥
दोनां अमरसरकी भोमि वसवाभी न दीनी ।
जोरावर पर्णेसी रेणवायलो दावलीनीं ॥२८७॥
बंदी छोड गंगारैंण वायलि में रहाया ।
पूरणमाल सूदा सैर दिल्ली नै चलाया ॥२८८॥
पूरा वादिसाहां का सलांमी पासि रैंणां ।
कोई पासि षोटी वात कोई की न कैंणां ॥२८९॥
पूरा वरस वारा वादिस्याही में रहाया ।
पूरा नाम अछा वादिसाहां यों कहाया ॥२९०॥
एता मांझ विलषी वादिसाहां को षिनायो ।
कुरतीगीर जेठी एक दिल्ली मांझ आयो ॥२९१॥
वादिस्याह कागद में लिषदी विचार ।
जेठ्यां की राड़ि वलष दिल्ली की हारि ॥२९२॥
दिल्लीनाथ जेठी वादिस्याहो का वुलाया ।
कुराो काज सों एक कोई भी न आया ॥२९३॥
ईसों जूटवाका साहि वीड़ा फेरि दीनां ।
दोनूं दीन देषें पांन एक भी न लीनां ॥२९४॥
वीड़ा फेरि पाछै वादिसाहां यों कहाई ।
सारी वादिस्याही में निवीजी भोमि पाई ॥२९५॥
एती वात सुणकैराव त्रंमल का पूत ।

साहि कै नजीक आणि ठाडा मजबूत ॥२९६॥
घोड़ाकों उठाया बादिसांहां कों निहाऱ्या।
जेठी पेचलाया फेरि दूणां जोसधाऱ्या ॥२९७॥
जेठी तो भुजांनैं ठोक पूरासीस आयो।
पूरै रावजी कै षूब जेठी नैं षिलायो ॥२९८॥
दोनॅूं सिंघ रूपी सांकलां सूं जाणि षूंटा।
दोनूं बादिसाहां की सिपाहां बीचि जूटा ॥२९९॥
केति वार भूमो चांपि जेठी दाव पाया।
पाछै राव पूरै चांपि जेठी नैं उठाया ॥३००॥
केती वार जेठी जोर आगैं पेच कीनां।
पूरै चांपि जेठी नैं भ्रमाया नांषि दीनां ॥३०१॥
वाहीस्याति नीसरिगा जेठी का प्राण।
पूरा मल्ल बादिस्याह कीनां फुरमांण ॥३०२॥
दोनूं बादिसाहां की सिपाहां नैं निहाऱ्या।
पूरैमल्ल जेठी को पछाड्या भूमि माऱ्या ॥३०३॥
पूरानैं जिहांनां गीर छाती सैं लगायो।
ताही स्याति फेऱ्यो कासलीको राज पायो ॥३०४॥
दीनूं कासली को पाट चोरासी गांम।
बादिस्याह दीनां राव पूरणमल नांम ॥३०५॥
कोईकों पिड़गना बादिस्याही सैं मिलैगा।
तेरी राव भाला की सही सैं काम हैगा ॥३०६॥
तेरा एक भाला हींण नोऊँ म्होर कञ्ची।

तेरा एक भाला की सही सैं राव सच्ची ॥२०७॥
कैणां बादिसाही राव मांथा पै रषाया।
मांगी सीष पाछैं कासली कै पाट आया।
पूरणमल जायो सो गयोड़ो भोमि ल्यायो ॥२०८॥
पूरणम लकीनूं राज तिरमल्ल कै पूत।
सावक रजवाड़ां को बांध्यो यक सूत ॥२०९॥
राजा १ राव २ रावत ३ समेत सवरांण ४।
रावल ५ वहादुर ६ जाम ७ पदवा दीवांण ८ ॥२१०॥
आठोंहीं पदीका कासली कै थांन आया।
सारा कच्छ कुलमें राव दादोजी कहाया ॥२११॥
गीत-पोता व्हो थारा पूरणमल तू दादो ढूंढाड तणो पांण
सराह्यौपाति सा गाई विलायति मल्ल राव ठिकांणैं
राषियो सूरोपूरण मल्ल ॥
कासली ठिकांणैज राव पूरण कमांम।
पूरण कै पाटि राव बैठो बलिराम ॥२१२॥
पीढी दोय तांई तो षवास्यां का रहाया।
पीढो दोय पाछैं राव तांणी का बताया ॥२१३॥
गंगाराम बंदी छोड तिरमल राव जाया।
केई बरस ताई रैणवायलि में रहाया ॥२१४॥
बंदी छोड़ जीतो कासली में फेरि आयो।
गांवां कासली का नागवांमें जो बसायो ॥२१५॥
गांगै रैंणवायली थांन बेटा पांच जाया।

जेठा स्यामसींहजी रैण वायलिमें रह्या ॥३१६॥

टाडावास एकै गांव रतनैं दाव लीनां ।

तीन्यां का ठिकाणां नांव एकैसाथ कीनां ॥३१७॥

तुलछीराम१ दलपति१ किलांणसिंघ१ नांम ।

पालवास वींजासी उगेरैं पांच गांम ॥३१८॥

इति श्री कविया गोपाल कृत पीढीवार्तिक गंगा राम

समाप्तो स्याम (राम यथा)

बेटा नव स्याम कै विजाई सिंघ जाया ।

नोऊँ ही सतेजा भांण नोवां नांव पाया ॥३१९॥

सामतसिंह१किसन१मुकनूं१करणूं वलधाम१ ।

अवलों १ अमरसिंह सातों यह नाम ॥३२०॥

कोई वरस पाछै गांव यांकै तीन आया ।

ईंदोखू गुणाटू गांव सेवद में बताया ॥३२१॥

जैसो जगतसींजी स्याम कामैं दोय जैठा ।

सारां वीचि दोनूं ही सवाए तेज सैठा ॥३२२॥

सारा जा दिनां में रैणवायलि गाम रैता ।

सारा पूत स्यामां का अवीढा जोरि चैता ॥३२३॥

रैता गोपाल वस गांवां दो च्यारि ।

सारी अणहोती बात सैता विचारि ॥३२४॥

तावै एक होणी कैलड़ावा अँणल्याया ।

सारा सांमलाती कोटड़ी कै बीच आया ॥३२५॥

दोनूं ओड हिरणां की लड़ाई जीति हारि ।
दोनूं ओड गाली बोलि काढी तरवारि ॥३२६॥
ऊँनैं राव वंसी वंस ऊँनैं गोपाल ।
दोनां तेग बरछी तोलि कीनूं रणताल ॥३२७॥
हिरणां की लड़ाई में अपूठा वैर नांष्या ।
आया छाजकांनैं स्यांम जाया मारि नांष्या ॥३२८॥
कागद गोपाल;कां अमरसर भेज दीनूं ।
ऊपर गोपाल वंसकां को राव कीनूं ॥३२९॥
पाछै स्यांमजी सै रैणवायलि गांम छूट्यो ।
फेर्यो स्यांम जाया रावजी को देस लूट्यो ॥३३०॥
पाछै कासली कै राव कागद भेज दीनां ।
साराही भतीजा स्यांम सूधा तेड़ लीनां ॥३३१॥
सरला स्यांम जायानैं दीनी वलराम ।
कासली षंडेलो भूमि कांकड़ पै गांम ॥३३२॥
दूजा बादि बांटै आपणी में जाय बैठो ।
बादी षंडपुर की दावि लेणी होय सैंठो ॥३३३॥
बांटो षंडपुर को थेट तांई सूं न आयो ।
जैसो रावजीकां को सदा सूं बंट दायो ॥३३४॥
जैसे रावजी सों सीष मांगी करि मोद ।
छोडि रैणवायलि दाव लीनी दूजोद ॥३३५॥
भादरसिंघ राजा षंडपुर को जां दिनां में ।
आयो काढवा नै षोट धार्‌यो जे मनां में ॥३३६॥

जैसे स्यामजी कै भूमि कानै चाप लीनी ।
दीहां दोय भादरसिंघजी सों राडि कीनी ॥२३७॥
आधी पंडपुर को में रैता टकणेत ।
भाई तीन झगडा में पोढ्या रणषेत ॥२३८॥
जेसा सांमलाती कासली सैं लोग आयो ।
ऊँनै लाडषांनी भायपांका भी पिनायो ॥२३९॥
भादरसिंव राजा षंडपुर में जाय वैठो ।
जायो स्यामसिंव जीको रहायो होय सैंठो ॥२४०॥

॥ दोहा ॥

कॅवर अबीढो कासली, जसियो ओरँगजेब ।
आंणि मिल्या सो ऊवरया, राजा झालि रकेव ॥२४१॥
भादरसिंघ राजा दोय वारि फेरि आयो ।
सैंठो हैर जैसो स्यांमसिंघ जी को रहायो ॥२४२॥
ओरूं षंडपुर का गांम दोनूं दाव लीनां ।
राजी ह्वैर फेर्यौ कासली कै राव दीनां ॥२४३॥
जां दिनां ठिकाणांवंध मांडोली गांम ।
पोता लाडषां का धाडवी छा सरनांम ॥२४४॥
सारा देस गांवां में उगाही वांध लीनी ।
गांवां आप का मां दालि जैसे दूरि कीनी ॥२४५॥
जोरी तो न कीनी फेरि चोरी काम कीनां ।
फोजां लेर पूगा आदम्यां नै घेर दीनां ॥२४६॥

एकैं दोह जेसै जोव मांहि दोष धाख्या ।

ठावां लाडषांनी सांषठांनें आंणि मारया ॥३४७॥

ऊँनें लाडषांनी रावजी का सिंघ अडिगा ।

एकैं भायपां कै वीचि षांपां वैर पडिगा ॥३४८॥

पोता लाडपांन जी का कणवारी गांम ।

माधोसिंघ जी का पूत सूरा सरनांम ॥३४६॥

सूरै धाडो दीनो बाहरूं का दांत भाड्या ।

केई वार सूवा बादिसाहां का उजाड्या ॥३५०॥

दिल्ली साहि साज्यां बादिसाही पाट पाया ।

पाटू इंद्रसिंघ जी नांम जोधाण वुलाया ॥३५१॥

साहां की सलामी होय षाटूनाथ आयो ।

जैनें धाडव्यां नैं बंध करबा नैं चिनायो ॥३५२॥

बोल्या साहिसाज्यां पम पच्छिम देस जाणां ।

सूरा लाडषांनी कों हमारे पासि ल्याणां ॥३५३॥

जोधै आंणि चोरां धाडव्यां में जाल नांष्यो ।

सूरा लाडषांनी नैं दगासूं मारि नांष्यो ॥३५४॥

सूरोसिंघ मार्यो कै दिल्ली कै पंथ जोधो ।

घोडी ले चल्यो गो लाछि नांमां छोडि ओधो ॥३५५॥

ऊँनें लाडषानी वंस जोधां नें वकार्या ।

केई ठोड आतां जातां तानैं पंथ मार्या ॥३५६॥

दोनूं ओड जोधां लाडषांन्यां वैर जाग्यो ।

सागै यंद्रसिंघजी हाथि कोई के न लाग्यो ॥३५७॥

ताही वार दिल्ली सैं दिल्ली सुलतांण।
कीनूं अजमेरी पोर जारित पयांण ॥३५८॥
साज्यां साहि दिल्लीनाथ दिल्ली सैं चलाय।
दोनूं दीन सारा हीदवा का वंस आया ॥३५९।
डेरा वादिसाहां मारवाडी भूमि कीनां।
जैपुर जोधपुर का भायपां नैं साथि लीनां ॥३६०॥
दोनूं षंडपुर का कासली कां नैं बुलाया।
जेला स्यांमजी का कासली का साथि आया ॥३६१॥
फौजां में चारण भी होता अनेक।
अमली सो चारण देवराज नांम एक ॥३६२॥
षादूनाथ इंदा पासि डेरै चालि आया।
जोधै यंद्रभाणै जीन घोडां पै कराया ॥३६३॥
घोडी लाछि साषती सूं तयारी होर आई।
धाडी नैं जुवांनी वोलि सेषावति वताई ॥३६४॥
चार साषा जुवांनी जांणितां हीं पाणि वोल्यो।
सूरो लाडषांनी मारि नांष्यो आभ तोल्यो ॥३६५॥
जोधा या जुवांनी वोलि सोभा भी न पावैं।
फैर्यों षासते नैं गंज दारू क्यों दिषावैं ॥३६६॥
इंदा जीभ थारी की न रैसी वात छांनी।
केई राव सेषा की सुणलो या जुवांनी ॥३६७॥
जोधो यंद्रभाणूं एम वोल्यो ऊठि जावो।
सारा लाडषान्यां का कडोंमां नैं सुणावो ॥३६८॥

चारण एम बोल्यो फेरि थारै तो न आस्यों ।
कोई जो सुणलो वात जैनें भी सुणास्यों ॥३६६॥
एती वात बोल्यो फेरि चारण ऊठि आयो ।
दीहां दोय तांई फोज सारी में फिरायो ॥३७०॥
भूषो दोय दिन को देव चारण चालि आयो ।
दूजे दीह जेसा स्यांमजी का नैं सुणायो ॥३७१॥
चारण देवकरणँ वात वरती सो वताई ।
जेसै स्यांमजी कै वात सारी जांण पाई ॥३७२॥
जेसो एम बोल्यो थे मनां में धीर राषो ।
रोटी जीमि पाछै ईं मुदा की बात भाषो ॥३७३॥
सावडदी समोसा मांस सूली भांति न्यारी ।
दारू पीय वैठा थाल आवा की तयारी ॥३७४॥
चारण नैं वणीं ही वात बडेरां को सुणांई ।
ईं क जीमवा की दाय कोई भी न आई ॥३७५॥
जेसो एम बोल्यो पैल दारू घालि पावो ।
जीमण आपणां की साथि बारठ कै मँगावो॥३७६॥
चारण एम बोल्यो आप सारी वात जोगा ।
पांणी नाज छोड्यां नैं अठारा जाम होगा ॥३७७॥
औरों पांच सातां तो दिनां भो फेरि जीस्यों ।
औरों देह दूजी पाय दारू फेरि पीस्यों ॥३७८॥
जेसो एम बोल्यो थे अनेसो क्यों रषावो ।
कांई वात धाखो नेम सारी कै बतावो ॥३७९॥

सूरो लांडखांनी गैलकां नैं वोल देगो ।
जोधो चंद्रभाणूं मारि घोडी लाछि लेगो ॥३८०॥

घोडी चंद्रभाणैं जाति सेषां की वताई ।
सारां नैं सुणांई कालिजा में तो न माई ॥३८१॥

जोधा की जुवांनी को अजीरण नैं जरावै ।
जोधो मारि घोडी लाछि ल्यावै सो जिमावै ॥३८२॥

सुणतां वात जेसा कै कलेजै आगि जागी ।
थांकी जाति म्हांकै तो भलांही लैर लागी ॥३८३॥

सागै चालि डेरो इंद्रभाणां को वतावो ।
दारू मांस रोटी थे भलांही फेरि षावो ॥३८४॥

जेसो काल रूपी लै दुधारो हाथि ऊठो ।
षाटू गांव जोधा इंद्रभाणां सीस रूठो ॥३८५॥

आधी राति वीतां का समां में चालि आयो ।
जेसै आंणि सूता चंद्रभाणां नैं जगायो ॥३८६॥

डेरै लोग सारो साथ कां तो दाट लीनूं ।
जेसै सीस जोधा को तँवू में काट लीनूं ॥३८७॥

पैलां लाछि घोड़ी हेरि ठाणां सूं मंगाई ।
घोडी एक फेरयो चंद्रभाणां की षुलाई ॥३८८॥

आधी राति वीतां मारि जोधा नैं चलाया ।
लड़कै दो घड़ी मे घाटवा कै वीचि आया ॥३८९॥

जेसो आंणि फलसा कोटडो कां नैं षुलाया ।
हेलो देर सारा कोटडी कां नैं जगाया ॥३९०॥

आया तो कठासों थे कठीनैं फेरि जावो।
पूछ्यो लाडषान्यां गांव नांवां तो बतावो ॥३६१॥
आया फौज मां सूं कासली नैं फेरि जाणों।
बोल्यो आय जेसो स्यांमजी को छै पिछांणों ॥३६२॥
मांडोली ठिकांणां की पिछांणी रीति सारी।
सारा लाडषान्यां वैर लेवा को बिचारी ॥३६३॥
माधोसिंघ जीव जां दिनां में षान जायो।
माधोसिंघजी के नांय मंडल नांव पायो ॥३६४॥
माधोसिंघ बोल्या बार कोई भी न बोलो।
सारी बात जांणी जाय दरवाजो न षोलो ॥३६५॥
ईमैं एक कारण और सोही जांणि पायो।
जेसो स्यांमजी को कोटडी के बीचि आयो ॥३६६॥
स्याला जाति गांवां की गुवाड़्यां में फिरावै।
बोली बासते के सिंघ नेडै भी न आवै ॥३६७॥
माधोसिंघ एतो बोलि बारैं पांव धार्यो।
॥३६८॥
फेर्यो एम बोल्यो लाछि घोड़ी नैं बंधावो।
मरजी आपकी छै वैर आंटो भी लिरावो ॥३६९॥
माधोसिंघ सुंणतां बात छाती कै लगायो।
बेटो स्यांमजी कै तूं भलांही लाल जायो ॥४००॥
जाया लाडषांजी का सवाया मोद पाया।
सेषा वंस जेति में वधावा देस गाया ॥४०१॥

माधोसिंघ बोल्या आज तांई बैर दाया ।
सोही बैर सारा रावजी का सूं मिटाया ॥४०२॥
कोई रावजी को लाडषांनी नैं न मारै ।
कोई लाडषांनी वैर लेवा की न धारै ॥४०३॥
कोई आज पाछै आंट राषै वैर गावै ।
सोही षांप दोनां सूं निरालो होय जावै ॥४०४॥
दोनूँ षाँप राजी हैं लिषावटि मांड लीनी ।
जेसै फेरि माधोसिंहजी सैं सीष कीनी ॥४०५॥
जेसो स्यांमजी को फेरि आयो दूजोद ।
कासली ठिकाणै रावजी का मनमोद ॥४०६॥
भादरसिंघ षंडेला भूप स्योगढ फेरि आयो ।
केई आदम्यां की बांह जेसा नैं बुलायो ॥४०७॥
स्योगढ आवतां ही बांह सारा दूरि कीनी ।
राजा का दगा की वात सारा जांणि लीनां ॥४०८॥
भादरसिंघ राजा चूक जेसा पैं करायो ।
जेसो चूक होतां कोपि राजा सीस आयो ॥४०९॥
पेमै वीच आतां ही जेसा नैं रोक लीनूं ।
सारां होर जेसा नै दगा सूं मार लीनूं ॥४१०॥
पेमूं जो न पूगै स्याति की भी जेज करतो ।
भादरसिंघजी नैं मा'र पाछै आप मरतो ॥४११॥

॥ दोहा ॥

राजा दगै न मारतो, विढतोषाग बकारि।
तो कुसले घरि आवतो, जसू वहादर जारि ॥४१२॥
भादरसिंघ जेसा नै दगा सूं मार लीनूं।
दोले पूत जेसा कै सवायो वैर लीनूं ॥४१३॥
इति श्री कविया गोपाल कृत पीढी वार्तिक स्याम
राम जसवंतसिंघ समाप्ती।
(दौलतसिंघ जगतसिंघ यथा)
जगतो स्यांमजी कै एक जेसा पूठि जायो।
जेनै कासली कै राव रैवा नै वुलायो ॥४१४॥
नेडा साष तावै कासली में वुला लीनूं।
वारा गांव सूंधा सापरो भी दवा दीनूं ॥४१५॥
सूजा भोज कां कै सापरा को थांन होतो।
आयो षंडपुर का देहरा में कामि सोतो ॥४१६॥
ओरंगजेव दिल्ली साहि दिल्ली सै चलायो।
गोपीनाथजी का देहरा नैं आंणि ढायो ॥४१७॥
सूजै फोज कै तो जीव देही साच दीनूं।
सूना सापरा नै राव जगतै दाव लीनूं ॥४१८॥
कोई दीह पाछै राव जगतै धर्म हास्या।
मांमो कासली का नैं दगा सू आंणि मास्यो ॥४१९॥
एती जे वलू तै कासली कै राव कीनी।
जैनै मारि जगतै कासली भी दाव लीनी ॥४२०॥

बेटा दोय जेसा स्यांम जी का कै बताया ।
नांमी दोल १ देसां में फतै १ भी नांव पाया ॥४२१॥
दोलतसिंघ जी के गांव बांटै पांच आया ।
छोटै जै फतै भी गांव पांच बंट पाया ॥४२२॥
दोनूं बंधवां कै भूमि आधौ आधि बांटो ।
भादरसिंघजी सौं दोल काढ्यो बैर आंटो ॥४२३॥
भूमी षंडपुर की फेरि बसबा भी न दीनी ।
ल्यास्यों मेर घोड़ा फेरि सारी लूंट लीनी ॥४२४॥
कूक्यो देस राजा को मिटावो बैर दायो ।
जेसै षंडपुर को भूप दोला नैं बुलायो ॥४२५॥
भादरसिंघ ढाणी एक छोटी सी बताई ।
सीकरी जाटणी की जाति जै तावै कहाई ॥४२६॥
दोलै देस धाडा लूंटबो तो बंध कीनूं ।
आंटो बैर तावै को न छोडूं बोल दीनूं ॥४२७॥
दिल्ली बादिस्याही राज औरंगजेब छायो ।
सूबै बिटली कै षांन अबदू नैं षिनायो ॥४२८॥
भादरसिंघजी तो वास दूजै लोक पायो ।
राजा केहरी के षंडपुर को राज आयो ॥४२९॥
सूबै बिटली कै मामला की रीस कीनी ।
ओछी बात राजा केहरी नैं मांड दीनी ॥४३०॥
कै तो मांमला का दाम वेगा लेर आणां ।
नां तो षंडपुर नैं छोडि दूरा भागि जाणां ॥४३१॥

राजा या लिषावटि वांचि पाछी यों लिषाई।
अवदुषान नैं तौ अमरसर का भांगि पाई ॥४३२॥
नीली का भारा की दवाई लीय जासो।
पाई आज तांई जो नसो भी वादि जासी ॥४३३॥
लूंट्यो रामपुर नैं पंडेलो जेम आवो।
लूंटो पंडपुर नैं फेरि सारिषा कहावो ॥४३४॥
सारो दूसरा को लेर पाछैं तीर वायो।
थारै पासि कौंभा धायभाई नैं षिनाया ॥४३५॥
भेज्यो मैं अठासूं वोलि कागद वांच लीजे।
कागद वांचतांई जेज आवा को न कीजे ॥४३६॥
सूवादार सामां भूप कागद यों लिषाया।
सावकराय सवां का वंस भाया नैं वुलाया ॥४३७॥
रायांसाल वंसी पंडपुर कै सांम लाया।
एकै कासली सूं रावजी का ता न आया ॥४३८॥
कागद कासली नैं फेरि राजा दे षिनायो।
दोलतसिंघजी नैं एक न्यारो ही पुगायो ॥४३९॥
आंट काढवा नैं दीह आगे छै वणांही।
आ तो वात घर की वैर लीज्यो ल्यो जणांही ॥४४०॥
पोता लूंणजी का धाय भाई नैं षिनायो।
थां को राज सूबा विटली का सूं लिषायो ॥४४१॥
सारा सांमलाती होय केसू नैं मरायो।
पाछैं राज सारा लूंणजी का को करायो ॥४४२॥

कागद षंडपुर सूं कासली नैं पम आया ।
जगतै राव सारां स्यामजी का नैं बुलाया ॥४४३॥
दोलतसिंघजी नैं राव जगतै यौं कहायो ।
दोला लूंणका कै षंडपुर को लेण दायो ॥४४४॥
दोलो पम बोल्यो सामलाती चालि होस्यां ।
सूवादार सूधां लूंणजी का नैं डबोस्यां ॥४४५॥
जगतै जंग तावै कासली सू कूंच कीनां ।
दीपो जैत २ बेटा दोय दोनूं साथि लीनां ॥४४६॥
दोलो भी फते भी दोय सिंभूनैंण तीजा ।
सारा रावजी कां सेत सारा ही भतीजा ॥४४७॥
ऊदा१ ग्यान२कनका ३ सामलाती सेत सूजा ।
सूवादार सामां हैं चलाया सिंघ दूजा ॥४४८॥
दोनूं कासली सूं षंडपुर सौं फौज ल्याया ।
राजा राव दोनू ही हरीपुर पेत आया ॥४४९॥
राजा राव दोनां हरिपुर का षेत लीनां ।
सूवादार डेरा देवली में आंणि कीनां ॥४५०॥
दोनूं ओड हो सो आगि तोपां नैं दिषाई ।
दोनों ओड लीनो सोर सीसां को लड़ाई ॥४५१॥
राजा राव सूवादार सामां जंग जूटा ।
घाडां असवारां का कलेजा सार फूटा ॥४५२॥
राजा षडपुर कै राव जगता नैं कहाया ।
जाया दोय थांका दोय जैसे भ्रात जाया ॥४५३॥

आंनें तौ ठिकाणां राषणां छै सो षिनाद्यो ।
आपां फोज माथै वाग घोड़ां की उठाद्यो ॥४५४॥
दोपो १ जैत २ ढोलो ३ तीन पूगा कोसली नैं ।
बाको काम आया मारि सूबां की सली नैं ॥४५५॥
ऊदा १ ग्यान २ सूजा ३ फता ४ कनका ५ समेत ।
राव जगते सैं साथि पोढ्या रणषेत ॥४५६॥
राजा तो केसरीसिंघ जगतसिंघ राव ।
तीन बार फोजां वीचि कीनां आव जाव ॥४५७॥
गोळी तरवारि तीर षंजर कटार ।
सतरि घाव राजा कै लागा सुमार ॥४५८॥
राजा पांडुवां भी आसमेधी धारि लीनां ।
लोही की सन्योढी भूमिका नै पिंड दीनां ॥४५९॥
जगतै कासली कै राव घोड़ां नैं उठाया ।
भाई सात बीसी लोग सूधां कांमि आया ॥४६०॥
चोरासी लाडषांनी पोढ्या रणषेत ।
बाप परसरामजी का तेजा समेत ॥४६१॥
बीसी च्यारि भोजांणी हरा कै वंस जाया ।
दोनूं षांप ही का बाजि तेगां कांमि आया ॥४६२॥
राजा का हजूरी वीस बीसी बांधि नेत ।
आया कांमि सारा ही पठाणां कै समेत ॥४६३॥
हिन्दू लोग ग्यारासै असीलां कांमि आया ।
सोळासै सिरोह्यां सैं मुसल्ला घोर पाया ॥४६४॥

राजा राव दोनूं हरीपुर कै षेत पोड्या ।
राजा कै करौठी धीर ऊदै षेत छोड्या ॥४६५॥
हिन्दू आसुरां कै देवली में सार वागो ।
सूबादार सूवा विंटलो का पंथ लागो ॥४६६॥
फेर्यो पंडपुर को राज ऊदै भूप पायो ।
दीपो कासली को राव देसां में कहायो ॥४६७॥
इति श्री कविया गोपाल कृत पीडी वार्तिक केहरीपरा युद्ध समाप्ती
दोलत सिंघ यथा
भोपतसिंघ भादरसिंघ जी को एक भाई ।
जैनैं पांच गांवां सैत सीवोटां वताई ॥४६८॥
दोले जां दिनां में वैर जैसा को चिताय्यो ।
भोपतसिंधजी नैं दगा सूं आंणि माय्यो ॥४६९॥
सत्रासै पचावन साल वीतां वैर लीनां ।
भोपतसिंध जी का गांव पांचौं दाव लीनां ॥४७०॥
जां दिनां पंडेलै भूप ऊदो कमजोर ।
कासली ठिकांणैं राव दीपां को तोर ॥४७१॥
दिल्ली सैं नूरदी नवाव चालि आयो ।
भाई अवदूषांन जी को मात जायो ॥४७२॥
पूगि वादिसाहां की लिषावटि यो ठिकाणां ।
सारा साथि जांणां फेरि दिल्ली भी पुगाणां ॥४७३॥
सारा नूरदी कै तो ठिकांणां साथि हूवा ।
दोनूं कासली सों दौल जैतो जाय पूगा ॥४७४॥

सावक राठौड़ कछवाहां की जाति।
मारवाडी को ले मुकाम सांमलाति ॥४७५॥
राठोडां मनांणां वूडसू का यों कहाया।
वैरी नूरदी की साथि सेषा वंस आया ॥४७६॥
एतो वात वोल्या दौल जैता नै सुणाई।
जांणि वासते नैं गज दारू में छिपाई ॥४७७॥
दोलो जैत दोनूं सिंघ रूपी है दिषाया।
आधी रात वीतां नूरदी कै सीस आया ॥४७८॥
तंवू फाड़ि सूता नूरदी नै जाय मार्यो।
दूजा नूरदी का भांणजा नैं भी सिधार्यो ॥४७९॥
राजा रावजी का वैर दोनूं काढि आया।
जूना गीत दोहा चारणां भी कै सुणांया ॥४८०॥

॥ दोहा ॥

गिलिगो भोपतसिंघ नैं, हुवो न पूर आहार।
दवलै षाधो नूरदी, उंण दिन लई डकार ॥४८१॥
दोलै वैर काढ्यो सेस माथै नोव दीनी।
सीकरी सैर होवा की तयारी फेरि कीनी ॥४८२॥
सीकरी सूं उतराधो एक कोस गांम।
कसवा को वरजी जगमालपुरो नांम ॥४८३॥
जेके मांय पोता हरिराम का रहै छा।
घोडा छोडि सूनां षेत सारा भेलि देछा ॥४८४॥

नेपै का उजाडा जांणि जांनैं काढि दीनां ।
तीनूं गांव यां का फेरि दोलै दाव लीनां ॥४८५॥
दोलतसिंघजी कै धाम सेवो दूठ जायो ।
रायां साल वंसी तेज पीढ्यां में सवायो ॥४८६॥
इति श्री कविया गोपाल कृत पीडी वार्तिक दौलतसिंघ समाप्तो
सेवसिंघ यथा
सेवैं राज सत्रासै यकांयन साल पायो ।
सत्रासै तरेपन सैर सीकरी नैं वसायो ॥४८७॥
चोपडि का वजारां हाटि किल्लो कोट पाई ।
सारी येक सागै नींव चेजा की चलाई ॥४८८॥
किल्लो राज सोभा धाम सारो पारि पायो ।
रैणी कोट षाई सैर आधोकेक आयो ॥४८९॥
ओधादार वोल्या आंणि पैसो तो निमडिगो ।
षाई कोट चेजा को समूचो कांम अडिगो ॥४९०॥
जां दिनां में आगरो का सेठ की कतार ।
पांच हजार मण चांदी का भार ॥४९१॥
सीकर सौं नजीक आगरा कै पंथ आई ।
सेठां जांणि मंदी देस पच्छिम सूं मँगाई ॥४९२॥
हेरू षक सेवानैं अगाऊ षवरि दीनी ।
चांदी लूंट सीकर का किला में नांष लीनी ॥४९३॥
आगरा को साहूकार दिल्ली सैर आयो ।
साहां कै पुकार्‌यो सारज्यांनी की उठायो ॥४९४॥

ज्यांनीसार दिल्ली सौं हजारां फोज लीनी।
केई तोप घोडां की अगाऊ पेल दीनी ॥४९५॥
दिल्ली सैं सतावो फोज सीकरि सैर आई।
कासोदां अगाऊ आंणि सेवा नैं सुणाई ॥४९६॥
दीपा रावजी नैं कासली सूं भी बुलायो।
सादो भोजवंसी उदैपुर सूं चालि आयो ॥४९७॥
पोता लाडषांन जी को कणवारी गांम।
सूरवीर सेषावत रतनसिंघ नांम ॥४९८॥
सेवसिंघ सेषावत आपपो बुलायो।
ज्यांनीसार दिल्ली सौं सतावी फोज ल्यायो ॥४९९॥
च्यारयौं मेर कूवा सूर हाडां सूं भरायो।
कोसां च्यारि तांई नीर वालू सौं बुरायो ॥५००॥
ज्यांनीसार पाणी की अगाऊ जांणि पाई।
पांणी काज हल्लो बोलि भूमि नैं षुदाई ॥५०१॥
पांणी बावडी में पाय हाथी नैं बठायो।
हाथी छोडि ज्यांनीसार डेरां चालि आयो ॥५०२॥
डेरां वैठि वोल्यो तोपषांनै जाय कैणूं।
किलो आज घेरो कालि हल्लो बोलि देणूं ॥५०३॥
एतो बात बोल्या फेरि किल्ला गिर दबाया।
च्यारयौं मेर फोजां तोपषानां नै फिराया ॥५०४॥
प्यादां की लडाई पूठि घोडा फेरि सैंठा।
नीसार सागै मोरिचा में आंणि वैठा ॥५०५॥

तोपां वादिसाही की लडाई फोज लागी ।
दोनूं फोज किला में लतेजी सोर जागी ॥५०६॥
एकै मास लीनी सोर सीसा की लडाई ।
दूजै मास किला सें नजीकि फोज आई ॥५०७॥
ज्यांनीसार भोकयो जीवसागै आप आया ।
किला की सफीलां मोरिचां नैं सांकडाया ॥५०८॥
साडुल्लो सलेधीसिंघ सेवो तीन आया ।
सारा मोरिचां नै काटि किला सें उठाया ॥५०९॥
मोरिचां में पेति पड्या सो कै उनमांन ।
हिन्दू बाईस वीस और मुसलमांन ॥५१०॥
ऐसी भांति ज्यांनीसार हल्ला सात कीनां ।
सीकरिनाथ सेवै फेरि पाछा मारि दीनां ॥५११॥
ज्यांनीसार जी को भ्रात फेरयौं एक आयो ।
दिल्ली पंथ फौजां भी हजारां साथि ल्याये ॥५१२॥
सूबादार सूबा खिल्ली का सूं चलायो ।
बाजूषांन नांमा फेरि फोजां लेरि आयो ॥५१३॥
ज्यांनीसार सूबादार दोनों रीस कीनी ।
दुणादूण फोजां की लड़ाई फेरि लीनी ॥५१४॥
सीकरिनाथ सेवै दांन में तो भूमि दीनी ।
दावी भूमि जेती वादिसाहां को न दीनीं ॥५१५॥
दो सै तीस हिन्दू लोग सारा कांमि आया ।
सीकरि पेत सोलासै मुसल्ला षेत पाया ॥५१६॥

जेता ही दिनां में गंजनी को जोर ज्यादा ।
चैवरा का दरा सों वार आंणी का यराद। ॥५१७॥
फोजां लेर षैवर का दरा कै वार आया ।
सूबादार वांका वादिसाहां नैं लिषाया ॥४१८॥
ओरँगजेब दिल्ली बादिसांहां कू च कीनां ।
दिल्लीनाथ ज्यांनीसार कों भी तेड लीनां ॥५१९॥
ज्यांनीसार फोजां बादिस्याही में मिल्योगो ।
सूवादार सूवा विटली का नैं चलेयगो ॥५२०॥
सेवै भूप सूवां वादिसाही नांव पायो ।
सीकरि सेर किल्लो कोट सारो ही वणायो ॥५२१॥
जैपुर का धणी नैं जंग सारो जांणि पायो ।
राजी होय जैसे भूप सेवा नैं वुलायो ॥५२२॥
जैपुर आंणि सेवै कायदाई बात कीनी ।
जैपुर भूप जैसै तीन वारी दादि दीनीं ॥५२३॥
राजा जोधपुर को जां दिनां में अमैसिंघ ।
जैपुर में सवाईधाजी छोटो जैसिंघ ॥५२४॥
दोनूं ही ठिकाणां कागदां सू बात कीनीं ।
दोनूं ही ठिकाणां में सगाई धाम लीनीं ॥५२५॥
अमैसिंघ जी तो जोधपुर सैं चालि आया ।
जैपुर सैं राजा जैसिंघ जो सिधाया ॥५२६॥
मारवाडी धरती में पोकर जी धाम ।
दोनूं ही राजा आणीं कीनां मुकाम ॥५२७॥

दोनों ही पोकर में दान पुन्नि कीनां।
दोनों ही वेद की म्रजाद व्याहि लीनां ॥५२८॥
वाई जैसिंघ जी की अमानैं विवाही।
अमैसिंघ जी की भैन व्याही जैसाही ॥५२९॥
दोनां ही राजा कूंच साथि बोल दीनां।
दोनां मोजावादि में मुकाम आंणि कीनां ॥५३०॥
मोजावादि केई मास बीता ये रहाआ।
सांवण का महीना चत्रमासा फेरि आया ॥५३१॥
सांवण का दिनां में साल वर्षा छी अतोली।
सारां ही दिनां में इन्द्र आंख्यां भी न षोली॥५३२॥
राजा जोधपुर का साथि सावक राठोड़।
ऊंनैं वंस कूरमकी फोजां सरजोड ॥५३३॥
दोनूं फोज ही में आगि चूला में न पाया।
सेवै नाथ सीकरी कै कडाहां नैं मँगाया ॥५३४॥
तनू वांस ऊँचा तांणि डेरां में चढ़ाया ॥५३५॥
॥ दोहा ॥
वांस वडा डेरा वडा, दिनां वडेरा होय।
सेषावत सिवसिंघ सों, किरतव वडो न कोय॥५३६॥
जूंनी लेकनांतां तेल सींची आगि जाली।
रुई राल सारी तेल घी सों सीचि राली ॥५३७॥
फोजां में अपंही धार ऊँनै यन्द्र छूटो।
ऊँनै नाथ सीकरि को जिवांरीभाग तूठो ॥५३८॥

घाटो बीच फलका मांस वाटी दाल न्यारी ।
सावडदी समोसा मूंग चांवल की तयारी ॥५३९॥
सेवा नैं रसोईदार सारा आंणि बोल्या ।
मोजावादि हाट्यां सों मगाया वांज चोल्या॥५४०॥
पांते वैठवाकी बार नौबति नैं धरावो ।
सेवो एम वोल्यो लोग आवैं सो जिमावो ॥५४१॥
सीकरि का धणीं सों भूमि दोलतवान सैंठा ।
सो भी सेवसिंघ जी कै रसोडै आंणि वैठा ॥५४२॥
भाई भी सगा भी वराबरी का जीम लीनां ।
जैसों चिराकां का चांदणां नै वंध कीनां ॥५४३॥
दोनूं फौज जैपुर जोधपुर की नै जिमाई ।
सारां ही ठिकांणां साहि दिल्ली कै सराई ॥५४४॥
जैपुर जोधपुर कै नाथ दोनां बात जांणी ।
सोभा श्री मुषांसूं सेवसिंघ जी की वषाणीं॥५४५॥
केई चारणां भी ग्रन्थ पोथ्यां में वणाया ।
दोहा गीत छपै छंद सारा ही सुणाया ॥५४६॥

॥ दोहा ॥

मिलिया मोजावादि में, दुय राजा दल दोय ।
सेषावत वधियो सिवो रुपयां दान रसोय॥५४७॥
पांन संधां धिनि धिनि पहल, धांन रंधां धिनि धिन्नि ।
सेषावत सिवसिंघ रै, द्वारि जिगन दिन दिन्नि॥५४८

जैपुरनाथ सेवा कै रसोडै सीर कीनां।
जैपुर का रुपैया सो हमेसा बांध दीनां ॥५४६॥
सीकरि में जैपुर में देस परदेस।
लागै जे मांमला में भर ल्यो हमेस ॥५५०॥
कूरम राठोड मोजावादि कै मुकांम ।
सावक में सेवासिंघ जी को सरनांम ॥५५१॥
राजा मारवाडो फेरि जोधाणै सिधायो।
जसो भूप जैपुर सेव सीकरि सैर आयो ॥५५२॥
थोड़ा सा दिनां में भोज वंसी दोय ह्वैता।
आयप उदयपुर की वारवां कै मांय रैता ॥५५३॥
जांनै कांमषांनो पूनवाडा कै मराया।
सादो सेवसिंघ जी वैर लेवानैं चलाया ॥५५४॥
माथै कामषांन्यां कै वुराई वैर जाग्यो।
जाणी कै फतैपुर झूंझुणूं कै वुरो जोग लाग्यो ॥५५५
हाता मांवडा में करामाती तूर आसा।
सादूलो सलेधीसिंघ जैं का छा नवासा ॥५५६॥
आसो तूर वोल्यो पम सादा राज पाजे।
देसां में सलेधीसिंघ तूं भी पोसि षाजे ॥५५७॥
आसा की जुवांनी को सईचो आंणि लाग्यो।
सेषां कांमषांन्यां कै नवीनूं वैर जाग्यो ॥५५८॥
सारा कांमषांनी वंस मोटे राव पोता।
हिन्दू छा सदा सूं चाहवाणी कूम होता ॥५५६॥

दिल्ली बादिसाहां दीन आपां कै मिलाया।
कलमां भी भराया साथ पाणी भी पिलाया॥५६०॥
आदि चहुंवाण रजपूती का तोर।
पाछै मुसलमान बादिसाही का जोर॥५६१॥
पीढी पांच सातां में सतेजा नैंक होया।
दूजै ख्यांमषां जो बैठि बडां नै डबोया॥५६२॥
दूजो कांमषांनी नांम जायो फतैपुर में।
सादो सेवसिंघ जी दोय रायां साल घर में॥५६३॥
सादूलो सलैधी उदैपुर सा चालि आया।
सीकरि भेजि कागद सेषसिंघ जी नै बुलाया॥५६४॥
तीनूं सांमलाती है फतैपुर भूमि आया।
दूजै ख्यांमषांजी लोग सांमांही षिनाया॥५६५॥
जां दिनां फतैपुर की तूटी सिरकार।
भायपो फिरावान एक काजी कांमदार॥५६६॥
काजी लोग लीनूं साथि कोसां तीन आयो।
जैनैं तो सलेधीसिंघ आतां ही दबायो॥५६७॥
काजी बीड भीडा कै कनारै पांव रोप्या।
सादूलो सलेधीसिंघ सेवो फेरि कोप्या॥५६८॥
सादे लोग सारा कामषांनी का भजाया।
ग्यारा कांमषानी एक काजी कांमि आया॥५६९॥
सेषा कांमषांनी यों कनारै बीड जूट्या।
आतै पांच गांवां नै सलेधीसिंघ लूट्या॥५७०॥

सादो सेवसिंघ जी फेरि दोनूं साथि आया।
दोनां नै नवावां कासली का जांणि पाया ॥५७१॥
केसू को सुषा को वैर आपां काढ़ लीनूं।
अव ता! यां नवावां नै ठिकांणां जाव दीनूं ॥५७२॥
कोई आंणि दिल्ली सूं चिगथ्यो काढ़ देसी।
दोनूं ही ठिकांणां सारिषा छै दाव लेसी ॥५७३॥
आपां दोय जांणां वात कोई को न कैणां।
दोनूं ही ठिकांणां हाथि लाग्या दाव लेणां॥५७४॥
सेवा तू फतैपुर कै ठिकांणै राषि दायो।
मेरे सींव नेडे झूंझणूं को राज आयो ॥५७५॥
कोई मे पडै जो कांम सोही नैं वचावो।
सारा भायपा नैं साथि वेगा लेर आवो ॥५७६॥
सादो सेवसिंघ जी तो ठिकांणां नै चढ्याया।
कोई भी न जांणै पम सल्ला धाम आया ॥५७७॥
सत्रासै सतावन साल ही को चैत आयो।
दिल्ली मैं महंमद वादिस्याही राज पायो॥५७८॥
झूंझणूं रुहिल्लेषां नवाव कांमषांनी।
भांयां कामषांनी को दुहाई को न मांनीं ५७९॥
सागै मातजायो एक लासीषां वहलिगो।
सो भी कांमषांनी भायपां सूं जारि मिलिगो॥५८०॥
मानुल्ला मदारीषांन वडवासी गांम।
साठि साठि दोनां कै घोड़ा सरनांम ॥५८१॥

कांटी कै अलीपां गांव न्यारो दाब लीनूं ।
पैसो भी धतूरी कै सलाबतषां न दीनूं ॥५८२॥
बादूषांन बादी गांव पेढी को अन्याई ।
चोरी धाडि में तूषार जांणिकै कराई ॥५८३॥
तारू कोलस्या कै भी जमी नै दाब लीनीं ।
एवजषां भगैरै जाटणी नै षोस लीनीं ॥५८४॥
धासीषां बजावा कै अनीती जोर कीनी ।
हाट्यां झूंझणूं कै सैर आयो लूट लीनीं ॥५८५॥
पैसो मांमला को एक एकै भी न दीनूं ।
सारो झूंझणूं को देस चोरां लूट लीनूं ॥५८६॥
बेगम नैं रुहिल्लेषांन सल्ला में कहाया ।
सारा कामषांनी पूंन मेरा का तिसाया ॥५८७॥
मेरी तो दुहाई देस मां से दूर कीनीं ।
सारां झूंझणू को देस भूमि दाब लीनी ॥५८८॥
अब तो झूंझणूं कै मांहिं सादा नैं बुलासौं ।
किल्लो सूंप देस्यां षूबषांजे को दिल्लासौ ॥५८९॥
सारी कूंम जांणो कांमषान्यां की न कारी ।
बीबी फेरि बोली बात चोषी थे विचारी ॥५९०॥
सादूलो सलैधी झूंझणूं कैं सैर आया ।
सुणतांहीं रुहिलेषांन किल्ला में बुलाया ॥५९१॥
सारी सैर किल्ला जावतां की बात कीनीं ।
सादा नै रुहिल्लेषांन कूंची सौंप दीनीं ॥५९२॥

कागद भेजि सादै सेवसिंघ जी नैं वुलाया ।
सारा भोज वंसी भायपां का फेरि आया ॥५९३॥
पैली सैर किल्ला जावताई सों रषाया ।
पाछे झूंझणूं का कांमदारां नैं वुलाया ॥५९४॥
सारां कामदारां नै किला में रोक दीनां ।
सादै रोकि सारां नैं रुपैया लाष लीन ॥५९५॥
सारा सैर वासी सेठ लोगां नैं वुलाया ।
हाली का रुपैया लाष हुंडी लेर आया ॥५९६॥
राष्या सादूलसिंघ थोड़ा रजपूत ।
वांध्यो राज कारिज नैं सारो मजवूत ॥५९७॥
सादा नैं रुहिल्लेपांन फेर्यो दादि दीनां ।
सादा कामपांन्यां जोरि ज्यादा फैल कीनां॥५९८॥
सारां ही मतासों पासां नैं दाव लीनां ।
पैसा मांमला का पांच वरसां में न दीनां ॥५९९॥
मोर्चां नैं वजाजां सैर कां नैं वरज दीनां ।
वाण्यां रोसनी का तेल सारा वंध कीनां ॥६००॥
सारी वाति मेरा कायदा नैं तो मिटाया ।
सारा कामषान्यां राज सोगा नै घटाया ॥६०१॥
सारां को जुवांनी एक लाला नैं वैठाणां ।
गादी झूंझणूं की सै रुहिला कों उठाणां ॥६०२॥
न्यारो ले रुहिल्लापांन वोल्यो वात सादा ।
मेरै भायपा कै जीव लेणां का यरादा ॥६०३॥

सादा नैं रुहिल्लापांन वेटो कै वणायो।

वोवी सेत दोनां आप गोदी मैं वठायो ॥६०४॥

वेटो गोदि सादा नैं रुहिल्लाषांन लीनूं।

सारो देस किल्लो भूंभणूं को सूंप दीनूं ॥६०५॥

सादो काढि दै सो देस वारै ऊठि जावै।

कोई कामपांनी फोड करवा भी न पावै ॥६०६॥

राजी ह्वै रुहिल्लेपांन सारी वात कीनी।

कोई को न दावो या लिषावटि मांडि दीनी ॥६०७॥

ऊनां की लिषावटि और कोई नां पिछाणै।

सादो कै रुहिल्लेषांन वीवा तीन जाणैं ॥६०८॥

सादै या लिषावटि जापता सूं मेल दीनी।

सारां कामषांन्यां नैं वुलास्यां धाम लीनीं ॥६०९॥

कागद कामषांनो जाति सारां नैं लिपाया।

कागद वांच लोनां फेरि कोई भी न आया ॥६१०॥

मानुल्ला मदारीषांन वडवासी गांम।

भाई दोय आया और वटिगा तमांम ॥६११॥

मानुल्ला मदारीषांन दोनां नैं मिलाया।

पैसा मांमला का फैल सारा ही मिटाया ॥६१२॥

सादै कामषांनी नैं जणायो हेत ज्यादा।

भाई करि वोलै गांठि लेणी का यरादा ॥६१३॥

मानुल्ला मदारीषांन दोनूं गांठ लीना।

पाछै भूंभणूं का भायपां नैं जोर दीनां ॥६१४॥

सादै फोज लीनी साथि सेवा नै बुलायो ।
पैली कोसल्या नै भूलधांणीं ज्यों मिलायो ॥६१५॥
रोहेली रजांणी कांटि तीन्यूं गांव लूट्या ।
तीन्यूं कामपांन्यां का ठिकांणां साथि छूट्या ।६१६॥
घासीषां वजावा कै लड़ाई पूव लीनी ।
चिलासी वजावो कांमि आंयां भूमि दीनीं ॥६१७॥
सादै भूमि सारा कांमपांन्यां सै छुडाई ।
सारै फेरि दीनी षां रुहिला की दुहाई ॥६१८॥
भूमि छोडि सारा कांमपांनी जाति भागा ।
सेषा वंस सादो सेवसिंघ जी आसि लागा॥६१६॥
धरती भूंभणूं की कांमषांनीं वंस जाया ।
मानुल्ला मदारी गांव वडवासी रहाया ॥६२०॥
सादो फेरि पाछो भूंभणूं कै देस आयो ।
सारै देस भूमि जावताई में रहायो ॥६२१॥
घोड़ा ऊंट रोकां का पजांनां लूट लीनां ।
सारां ही रुहिल्लेषांन जी कौ आंणि दीनां ॥६२२।
राजी ह्वै रुहिल्लेषांन वोल्यो षम सादा ।
यां के भूंभणू को राज लेणीं का यरादा ॥६२३॥
यां को दाव लागां भूंभणूं को राज षोसी ।
मानुल्ला मदारी नै विगाड्यां चैन होसी ॥६२४॥
मानुल्ला मदारीषां किला कै वीचि आया ।
गादी कूट दावी बैठ हूका भी भराया ॥६२५॥

सादो एम बोल्यो आप हूका तो न ल्यावो ।
आवो तो सलामी होर दूरा बैठि जावो ॥६२६॥
बोल्यो खांन मानुल्ला हिया में रोस कीनूं ।
सादो बोलतां की साथि पारो जाव दीनूं ॥६२७॥
गावी तो हमारी छै तुमारी नांहि सादा ।
बारा महिनां सैं क्यों वध्यो छै जोर ज्यादा॥६२८॥
तेरा जोर ज्यादा जो सलीको लागि जासी ।
किल्ला झूंझणूं का में कदे भी तूं न आसी॥६२९॥
बोल्यो एम सादो जीवका नै थे गमास्यो ।
सारा कामखान्यां सांभलाती होय जास्यो॥६३०॥
बोल्यो यों मनुल्लाखांन कोई एक जासी ।
दोन्यूं तेग एकै स्थांन मांहीं तो न मासी ॥६३१॥
सेखा कांमखांनी कूम दोनूं एम रूठा ।
दोनू ही विवादी यों विवादो धारि ऊठा ॥६३२॥
मांना कांमखांनी कै लडाई का यरादा ।
ऊंनै वीर सादा कै सवाया जोर ज्यादा ॥६३३॥
मानुल्ला मदारीखां ठिकाणां नै चढ्याया ।
घोडा कामखांन्यां का मनुल्लोखां बुलाया ॥६३४॥
घोड़ा पांच सै तो कांमखांनी लेर आया ।
घोडा आठ सै नै लेर सादै भी चलाया ॥६३५॥
दोनूं ओड़ही सैं तेग दोनां काढ लीनीं ।
दोनूं ओड घोड़ां की सतेजी वाग लीनीं ॥६३६॥

बोल्यो यों मनुल्लाषांन सादा केथ पावै ।
एती वार होगी तेग नीचे भी न आवै ॥६३७॥
जोरो नांव जैंको एक सादा अंस जायो ।
मेरा नांम सादा कैर जातानैं बुलायो ॥६३८॥
तेरा नांम सादा तो अभी लो चोट झेलो ।
पंजै जोर पाया तो सिरोही दाव पेलो ॥६३६॥
ऐती बोलि मानुल्लाषांन तेग वाही ।
जोरै सादूलासिंघ जी कै भी सराही ॥६४०॥
बोल्यो सादूलसिंघ भाई मानुल्ला ।
बालक पै तेग वाही सो कुन्याय सल्ला ॥६४१॥
बालक पुकारि कहि मेरा नांव सादा ।
मेरे जब तेरा जीव लेणें का परादा ॥६४२॥
एती बोलि मानूल्लाषांन सेल वाया ।
ताही स्याति सादै सेल आता नैं बचाया ॥६४३॥
जोरै तेग मानुल्लापांन पै चलाई ।
तोहीं तेग मानुल्लाषांन मौत पाई ॥६४४॥
जोरावरसिंघ पैं मदारीषांन आयो ।
हूरां का विमांणां आसमांणि लोक छायो ॥६४५॥
सादै कामषांनी कै कलेजै सेल दीनूं ।
आतां ही मदारीषांन कूं भी मार लीनूं ॥६४६॥
मानुल्ला मदारीषां न दोन्यूं भूमि पोड्या ।
भूमि पोडतां ही कांमषांन्यां पेत छोड्या ॥६४७॥

मानुल्ला मदारीषांन कों भी मार लीनां।
सारी झूंझणूं का यों निकंटी राज कीनां ॥६४८॥
सादो पम मांनुल्ला मद्दारी मारि आयो।
छाती सें रुहिल्लेषांन आतां हीं लगायो ॥६४९॥
सारी वात सादै चाकरी तो यों वजाई।
सारै देश गांवां पां रुहिल्ले की दुहाई ॥६५०॥
सारा कांमषांनी काढि गांवां नैं वसाया।
दिल्ली सैं तकादा मांमला का फेरि आया ॥६५१॥
सादूलै रुहिल्लेषांन जी नै यों सुणाया।
दिल्ली सें तकादा मांमला का जोरि आया ॥६५२॥
दिल्ली कों रुहिल्लेषांन वोल्यो वेग जाणां।
पैसा मांमला का सांवठा छै सा चुकाणां ॥६५३॥
सारा ही रुपैया कासली का वांध लेणां।
कागद वांचतां की साथि हुन्डी भेज देणां ॥६५४॥
दिल्ली कों रुहिल्लाषांन जी कूच कीनां।
सारा लोग हिन्दू छा जकां नै साथि लीनां ॥६५५॥
गैला मैं रुहिल्लेषांन जी तो मौत पाया।
देही झूंझणूं नै फेरि पाछी लेर आया ॥६५६॥
सादूलै रुहिल्लेषांन जी का सोच कीनां।
सागै मोलव्यां नैं ले जमी नै सूंप दीनां ॥६५७॥
धोपांसा कुंरानां का पढैयां नै वुलाया।
चालीसा समेती दांम ज्यादा ही लगाया ॥६५८॥

आपै आपयां कै जोर सारी वात लैंठो।
सादौ झूंझणूं की राजगादी फेरि वैठो ॥६५६॥
सारा कांमषांनी जार दिल्ली में पुकाऱ्या।
सादूले रुहिल्लेषांन जी कौ मोसि माऱ्या ॥६६०॥
सादै झूंझणूं का राज सारा दाब लीना।
सारा कांमाषानी देस बारै काढ दीनां ॥६६१॥
दिल्ली सै तकादा झूंझणूं नै फेरि आया।
दिल्ली नाथ दिल्ली सैर सादा नै वुलाया ॥६६२॥
वोल्या यों महंमद वोलि हिन्दू जाति सादा।
दाब्या झूंझणूं का राज तेरा क्या यरादा ॥६६३॥
गादी झूंझणूं की तो रुहिल्लेषांन दीनी।
दीनीं वादिस्यांहां नैं लिषावटि वांच लीनी ॥६६४॥
वोल्या साहि कोई मांमला कौ जो चुकोवै।
सो ही कामषांनी राजा सेषा वंस पावैं ॥६६५॥
सारा मांमला का दांम सादै ही चुकाया।
दिल्ली की सलांमी झूंझणूं कै फेरि आया ॥६६६॥
ऐसी भांति सादै झूंझणूं का राज पाया।
रीमां पुत्र कीनां भूप दानी नांव पाया ॥६६७॥
ग्यारा गांव हाथी चारणां नैं दान दीनां।
तेरा गांव जूनां ब्राह्मणां नैं पुन्नि कीनां ॥६६८॥
भाटां नै चारि पाँच मंदिरां चढाया।
च्यारों कूंट कीर्ती का प्रवाह सा बढ़ाया ॥६६९॥

बेटा सादूलसिंघजी कैं पाँच जाया।
पांचां हीं पांखां से मांन पांण पाया ॥६७०॥
जोरावरसिंघजी का चोकडी ठिकाणैं।
किसनसिंघजी का पेतडी में जगत जांणैं ॥६७१॥
जाया केहरी का भी बिसाहू राज पायो।
नोलै नोलगढ नैं फेरि न्यारो ही बणायो ॥६७२॥
सारी झूंझणूं नैं च्यारि पांत्यां राख लीनी।
पांति जो अखा की च्यारि पांत्यां बांट लीनी ॥६७३॥

॥ दोहा ॥

किशनूं १ जोरो २ केहरी ३, अखो ४ नवल ५, भणबीह।
पांच सरीषा ऊपज्या, सादूला घरि सीह ॥६७४॥

इति श्रीकविया गोपालकृत पीडी वार्तिक
सादूलसिंघ झूंझणूं समाप्ती ॥

राज लब्ध सेवसिंघ फतैपुर राज आगमन यथा

॥ वार्ता ॥

ऐसी भांति सादै झूंझणूं को राज लीनूं।
सेवै फतैपुर नैं दाबवा को दाव दीनूं ॥६७५॥
छोटो न्यांमषांजी फतैपुर में पट जायो।
दिली सवाई न्यांमषांजी भी कहायो ॥६७६॥
सरदार षांनजादै ताहि बेटो ब्याह दीनीं।
पाछै पट तेली की लुगाई षोस लीनीं ॥६७७॥

वीवी नैं विहारी प्यार तेलणीं सों लगायो।
छोटै क्यांमषांजी म्हैल तेलणीं कै वणायो ॥६७८॥
म्हैलां राति दिन में एक तेलणीं कै रहावे।
तेलणीं नैं घडी भी छोडि वारा को न आवे ॥६७६॥
वीवी षांनजादी नैं कुली को नास दीनो।
पाया ढोलणीकां कै जकै नैं बांध लीनों ॥६८०॥
वेटो एक भाई मीरषां कै पेटि जायो।
केई वार जैनैं आप वेटो भी वणायो ॥६८१॥
वेटो एक तेलणीं कूंषि जायो छो नवीनूं।
पैलां गोदि लीनूं छो जकै नैं दूरि कीनूं ॥६८२॥
दोनूं वाप वेटां नैं किलामों काढ दीनां।
जांनैं मारि लेवा का यरादा धारि लीनां ॥६८३॥
भाई मीरषां जी नांम वेटा क्यामाव।
दोनां नैं किल्ला मां काढ्या नवाव ॥६८४॥
सारा कांमषांनी एम वोल्या राज षोसी।
छोटो क्यांमषांजी राजमादी नैं डवोसी ॥६८५॥
एता में वुलावा सावकां नैं फेरि आया।
आव्यो फतैपुर नैं क्यांमषांजी वंस जाया ॥६८६॥
कागद में लिषाई वांचतां हीं वेग आज्यो।
अस्मदषां हरांमी साथि आवै तो न लाजगो ॥६८७॥
सारा कांमषांनी फतैपुर कै सेर आया।
सारां साथि अस्मदषांनजी को भी लियायो॥६८८॥

सारा कांमषांनी मायपां नैं तेड लीनां।
अस्मद्षांनजी नैं फेरि कब्बा मीन द्यीनां ॥६८९॥
किल्ला मैं समूंचा कांमषान्यां नैं बुलाया।
गाद्री का नओबी बोलि सारां नैं बैठाया ॥६९०॥
चाहि स्याति तेलणीं कूंषि जाया नैं बुलायो।
सारां नैं सबाई कांमषांनी यों कहायो ॥६९१॥
थांणैं सांमलाती साषजादा नैं। बैठाणूं।
सादी भी करायो हेरि चोषो सो ठिकाणूं ॥६९२॥
सारां का हिया मैं बास तेसी आग ऊठी।
सारां ही बिचारी बात चाल्या अपूठी ॥६९३॥
अस्मद्षांनजी नौं आप किल्ला मैं बुलायो।
राजी होर दोनूं बाप बेटी नैं मिलायो ॥६९४॥
फेर्यो आप ईनैं गोदि बीबी की बठांणूं।
सारा सांमलाती कूंम चोषी मैं ठिकाणूं ॥६९५॥
एती बात सुंणतां कांमषांजी रोस कीनां।
गाली बोलि सारां नैं किल्ला मां काढ दीनां ॥६९६॥
सारां कांमषान्यां क्यांमषांजी नैं दकाल्या।
तैसो फतैपुर का क्यांमषांजी राज चाल्या ॥६९७॥
औरो क्यांमषांजी भी जुबांनी गैर बोली।
डेरै आंणि थोडां जीन कमर्यां भी न षोली ॥६९८॥
जैपुर सेर सारा कांमषांनी कूंम जांणां।
जैपुर जार छोटा क्यांमषांजी नै उठायां ॥६९९॥

सारो जोर जैपुर को फतैपुर थांन लेणां ।
तेलण कैं समेति क्यांमषां नैं काढि देणां ॥७००॥
सारा कांमषांनी सांमलाती ह्वै चलाया ।
सीकरि आवतां ही सेवसिंघ जी सूं मिलाया॥७०१॥

॥ दोहा ॥

षांमल कुल धूंकल कियो, किण पै निजरि करूर ।
आज फतैपुर ऊयपां, जैपुर किसी जरूर ॥७०२॥
सेवो दोलतसिंघरो, बोले यसा जवाब ।
पकडि रथां नैं सूंपद्यो, तेलणि सहित नबाव॥७०३॥
गाडोदा गांवका अमालषां नैं बोल्या ।
सेवसिंघ सेषावत आसमांण तोल्या ॥७०४॥
नांमदार भूंमि वेचि राम षांति डोकी ।
राजतषां नेठवै कल्योडी बात रोकी ॥७०५॥
चूडी वेस वांका फेरि बातां नै वणांई ।
अरादषां मिरिडि गांव कां नैं सुणांई ॥७०६॥
सारां कै सेवसिंघजी की दाय आई ।
सारी जीवका की साथि ताजीमां दिपाई ॥७०७॥
कोई फेरि वदले सेवसिंघजी थों लिपाई ।
सो ही तीन वारै पीर षाजे की दुहाई ॥७०८॥
कोई भी नवांवां सांमलाती होर आवै ।
सो ही कांमषांनी भायपां मां दूरि थावै ॥७०९॥

सेवा सांमलाती कांमषांनी कूंम नासी।
कोई भी नवांवां सांमलाजी है न आसी ॥७१०॥
सेवो पम बोल्यो सांमलाजी फो न लेवो।
नावो तो भलांहीं दूर ऊभा ष्याल देषो ॥७११॥
सेवा सांमलाती कामषांनी कूंम होस्यां।
छोटा क्यांमषांजी की नवाबी राज षास्यां॥७१२॥
चूही येस बांका रोत मोटै राव आया।
सारां कांमषांनी तो ठिकांणां ऊठि आया ॥७१३॥
सीकरिनाथ सेवै फेरि सादा नैं बुलायो।
पोतो लाडषांजी को गुमांनीसिंघ आयो ॥७१४॥
बांटो क्यों गुमांनीसिंघजी सौं बोथ लीनूं।
पाछै फतैपुर नैं दाबि बांटो दूरि कीनूं ॥७१५॥
सीकरिनाथ सेवो फेरि फोजां लेरि आयो।
मांडोली फतैपुर बीचि षागां षेत छायो ॥७१६॥
छोटै क्यांमषांजी भी यतां का आधकीनां।
तेल्यां का पिनारां का सवारां साथि लीनां ॥७१७॥
प्यादी चाकरी का डील ढाई सै करै छा।
गावां में तकादै जारि पेट्या ऊबरै छा ॥७१८॥
सारो मालिकाई में पिनारा मालि षायो।
बाकी ऊबर्या सो माल ऊती में गमायो ॥७१९॥
तेल्यां कै पिनारां कै दुसाला ओढवानैं।
गालीचा झरोषां मैं बिछात्यां पोढवानैं ॥७२०॥

सारो उपज्यो सो माल तेल्यां नै षवायो ।
कोई कांमषांनी सेर आटो भी न पायो ॥७२१॥
तेल्यां नैं पिनारां नैं फकीरां नैं बुलाया ।
सारा सेवसिंघजी सौं लड़ाई लेण आया ॥७२२॥
सारी तीन तोपां की तयारी एक फूटी ।
हाथी पै नगारो मेल्ही कोरी चाम कूटी ॥७२३॥
साडा तीन सै तो बाज ग्यारा सो पयादा ।
जां में दोय पांती रेजगाना लोग ज्यादा ॥७२४॥
तेली जाति सारा आवधा में पूर आया ।
लाला ताम घोड़ां कै दुसालां का लगाया ॥७२५॥
तेल्यां नैं षवायो सो सवायो पाडि लेषो ।
हाथी क्यांमषांजी बैठ पाछे हाथ देषो ॥७२६॥
छोटो प्यांमषांजी आवधा में बींटि आयो ।
हेलो देर एकैं कामषांनी नैं सुणायो ॥७२७॥
आजूंणी लड़ाई क्यांमषांजी तो न जावो ।
पैलां एक बारि कांमषान्यां नैं बुलावो ॥७२८॥
चोडा की लड़ाई तो पिनारां नैं लडायो ।
बारै वैठि किल्ला का किवाडां नैं जडायो ॥७२९॥
आछ्यो भाग होसी तो कह्यांकी मांन लेस्यो ।
तेल्यां की लड़ाई फतैपुर आज देस्यो ॥७३०॥
होणीं जोग तावै कांमषानी की न मांनी ।
फोजा ले लडाई काज आया रेजगांनी ॥७३१॥

सादो सेवसिंघजी लाडषांनी सी गुमांनां ।
सारी बादिस्याही भूमि सूबा में न छानां ॥७३२॥
दीष्यो कांमषांनी हींदषां की वाग ऊठी ।
फेरी तेलियां भी वाग घोड़ां की अपूठी ॥७३३॥
सेवै ईं तरह सों कांमषांनी नैं भगाया ।
चिगंदा तीन छोटा क्यांमषांजी कै लगाया ॥७३४॥
ऐसी भांति छोटा क्यांमषां नैं काढ दीनूं ।
पाछो फतैपुर में फेरि षडबा भी न दीनूं ॥७३५॥
तेगां तीन माथा में सजोरी सी वताई ।
जैंसो क्यांमषांजी फतैपुर कै मोत पाई ॥७३६॥
कोई कै फतैपुर में जमी नैं सूंप दीनूं ।
कोई कै राम बोलै देस हांसी जाय लीनूं ॥७३७॥
सूनूं सेवसिंघजी नैं फतैपुर सैर आयो ।
किल्लै पक फेर्यो कांमषांनी कांमि आयो ॥७३८॥
सेवै फेरि सारा कांमषान्यां नैं बुलाया ।
सारां नैं बडाई का यरादा सूं रषाया ॥७३९॥
किल्ला सैर भूमी जापताई सूं रषायो ।
गादी फतैपुर की दाबि सीकरि सैर आयो॥७४०॥

इति श्रीकविया गोपालकृत पीढीवार्तिक फतैपुर
राजलब्ध समाप्ती ॥

॥ वादिशाही पट्टा कुरब आगमन यथा ॥

वार्ता ।

मैंमदस्याह वादिसाह दिल्ली में बताया ।
जैपुर सूं राजा जयसाह नें बुलाया ॥७४१॥
जैसैं मांडि सीकरि नें लिषावटि भेज दीनां ।
सेवा सैर सीकरि का धणी नैं साथि लीनां ॥७४२॥
जैपुर सूं अगाऊ लेर दिल्ली सैर आया ।
साहां अंब षासा भूप जैसा नैं बुलाया ॥७४३॥
अरजी भूप जैसैं बादिसाहां नैं कराई ।
सेवा नाथ सीकरि का बड़ा छुकायदाई ॥७४४॥
थेट्टू कासली कै जो ठिकाणैं कुरब दीनां ।
सो ही भूप सेवै वादिस्याही कुरब लीनां ॥७४५॥
सेवा नें महंमद साहि पट्टा मांहि दीनां ।
रींगस का फतैपुर कासली का फेरि कीनां ॥७४६॥
सत्रासै छुयासटी साल पट्टा भी लिषाया ।
जैसा भूप सेवा सेत जैपुर सैर आया ॥७४७॥
इति श्रीकविया गोपालकृत पीडी वार्तिक सेवा साह
दिल्ली कुरब पट्टा लब्ध समाप्ती ॥७४८॥

॥ वषतसिंह मल्लार जुद्ध यथा ॥

वार्ता ।

राजा जां दिनां में जोधपुर को जोरि आयो ।
फोजां बांधि बीकानेर लेवा नैं चलायो ॥७४९॥

राजा अभसिंघजी आंणि बीकानेर जूटो ।
मूंतो एक बषतो जैनगर को पंथ छूटो ॥७५०॥
जैपुर सूं सवाई भूप जैसा नैं उठायो ।
फोजां लेर सूधो जोधपुर के पंथ आयो ॥७५१॥
जैपुर का धणी कै जोधपुर को जाणि दायो ।
सामूं देर फोजां बषतसिंध जी नें षिनायो ॥७५२॥
जैसो भूप फोजां की हरोली में षिनाया ।
ऊनें सेवसिंघजी गगवाणै पेत आया ॥७५३॥
सेवो बषतसिंधजी गगवाणैं षेत जूटा ।
सेवा कै अगाडी बषतसिंवजी भाग छूटा॥७५४॥
जूनां चारणां का गीत दोहां नैं परेषो ।
कोई जो न मानैं रूपगां नें वाचि देषो ॥७५५॥

॥ गीत ॥

राडिरो अवायो सेवो बषानों चाडि ।
आयो राडि हार मारूराव गया मारवाडि ॥७५६॥

॥ दोहा ॥

हाथी छोड्या हींडता, पांती करिगा पेस ।
गगवाणां कै गोरिवै, वडगाड़िगा बषतेस ॥७५७॥
तेग कटारी कूंत कर, किया कसूंमल रंग ।
सेवो दौलतसिंघरो, जीतिर ऊभो जंग ॥७५८॥

॥ गीत ॥

बिढतां बार कारारी षपतो ।
गिरधारी नैं मेलि गयो ॥७५९॥

जां दिनां वणायां चारणां का गीत देपो ।
सेवो पाटि सीकरि कै विजाई राव सेषो ॥७६०॥
ऐसी भांति सेवैं वगतसिंघजी नैं भजायो ।
जैपुर कै धर्णी भी भूप जैसे मोद पायो ॥७६१॥
जपुरनाथ जैसा धाम वेटा तीन जाया ।
प्याला और पाया एक वेटा नें मराया ॥७६२॥
माधोसिंघ माजी वागिप को जन्म लीनूँ ।
राजा जीवतां ही उदैपुर में वालि दीनूं ॥७६३॥
माधोसिंघ जी तो उदैपुर को भांणजो छो ।
राजा ईसरा सूं छा दिनां में क्यों कतो छो ॥७६४॥
जैपुर में ईसरीसिंघ राजा राज पायो ।
माधोसिंघ राणां कै उदैपुर ही रहायो ॥७६५॥
कोई दिनां पाछै देस दिष्यण नैं उठायो ।
फोजां सामठी सी ले मलारी राव आयो ॥७६६॥
माधोसिंघजी नैं मलारीराव आया ।
जैपुरनाथ फोजां लेर सामां ही चलाया ॥७६७॥
सांगानेर सारा कूरमां नैं साथि लीनां ।
सेवा नैं लड़ाई भार सारा सोप दीनां ॥७६८॥
आवा की जेज तो मलार भी न कीनीं ।
राजा की फोज भी वनारस आंणि लीनीं ॥७६९॥
दोनूं फोज घोड़ां की घोह सांकहाया ।
हाथ्यां का पांव लोह लंगरां जड़ाया ॥७७०॥

एकै साथि तोपां की लडाई होण लागी।

एकै साथि दोनूं फोज ही में सोर जागी ॥७७१॥

तोपां सात सै की तो मलार कै तयारी।

ग्यारा सै तोप श्री हजूरी की डकारी ॥७७२॥

घोडा रजपूत को कमाम तो सरीषो।

तोप की लडाई में मलार राव तीषो ॥७७३॥

बीसां तीस गोलां सूं ठठेरी तोड नांषी।

सोलै तोप राजा की अचंका फोड नांषी ॥७७४॥

आयो पूठि तोपां को अगाडी नैं हकादी।

जैपुर का धणी की तोप पाछां नैं धका दी ॥७७५॥

तोपां पूठि पाछा सूं मलारी राव चांपीं।

फोजां कूरिमां की जो समूची हाल कांपी ॥७७६॥

केसोदास षत्री सेवसिंघ जी पास आया।

सारा ही प्रवाडा सेवसिंघ जी नैं सुणाया॥ ॥७७७॥

ज्यांनीसार दिल्ली पंथ फोजां लेर आयो।

ज्यांनीसार सूवादार सुष्धां तैं भजायो ॥७७८॥

छोटा च्यांमषां नै फतैपुर में काढ दीनूं।

सारा कांमषान्यां को निकटी राज लीनूं ॥७७९॥

ऊनैं जोधपुर सूं राव फोजां लेर आयो।

सबै गगवाणै षेत बषता नैं भजायो ॥७८०॥

सारा जंग कीनां जैं हरोली में रहायो।

जैसे भूप सेवा ढाल जैपुर को बतायो ॥७८१॥

ओरूं भी प्रवाडा जो वताऊँ जेज लागै ।

संभ सांमठी की ज्यों मलारो सोर जागै ॥७८२॥

आज कै प्रवाडै हारि जीति जांणि लेहैं ।

वांण चहुवांण का समांन आज हैहैं ॥७८३॥

सेवो भूप हाथी सैं कूदि भूमि आयो ।

बाडव को भूर वीरभद्र सो लषायो ॥७८४॥

आवै भायपां का नाथ सीकरि कै सुंणाया ।

सारा भायपां का भी हजारां साथि आया ॥७८५॥

उणियारै नरूको विसनसिंघ जी फेरि आयो ।

भालां की अण्यां सूं आसमांणी लोक छायो ॥७८६॥

दूणीनाथ पेमान रावजी नैं बुला लीनूं ।

जैं नैं भूप सीकरि का धणी कै साथि कीनूं ॥७८७॥

सेषां का नरूका जंग जुडवा नैं चलाया ।

छुरां का घिमांणां आसमांणी लोक छाया ॥७८८॥

दूणी नाथ पेमां तो विचै ही तूटि थाक्या ।

सेषां का नरूका सांमलाती बाज हाक्या ॥७८९॥

तोपां पर सेषां का नरूका साथि आया ।

तोपां पर सुम्मां फेरि फेरबा न पाया ॥७९०॥

छोड दी गलार तो मलार भागि छूटा ।

हाडा सीसोद कूरमां सूं फेरि जूटा ॥७९१॥

रूपसिंघ राणांवत रांणां को भिनायो ।

वूंदी को हाडो अमैसिंघ साथि आयो ॥७९२॥

दोनूं रजपूत माधवेस का सहाई ।
सेवसिंघ जी पै अभैसिंघजी तेग वाई ॥७९३॥
सेवै फेरि हाडा का हिया में सेल वायो ।
भाला का उमंडो लागि हाडो भूमि आयो ॥७९४॥
हाडोती धरा को राव हाडो भूमि पोड्यो ।
रूपै वंस राणां कै सतावी षेत छोड्यो ॥७९५॥
सोलासै यनयावन आदमी तो षेत पोड्या ।
हाडो भूमि पोड्यो राण वंसी षेत छोड्या ॥७९६॥
ऊपरि तीन सै कै साठि सेवा का यताया ।
घायल तीन सै तो तीन बीसी कांमि आया ॥७९७॥
॥ दोहा ॥
परे असत घायल तहां, मरे सत्रि बहु मारि ।
लागी सीकरिनाह कै, तीन कठिन तरवारि ॥७९८॥
॥ छप्पै ॥
विषम भाल विकराल भूत बैताल भभक्के ।
प्रलै काल सिवपाल काल सामां हय हक्के ॥७९९॥
रुंडमाल हर करी वरी अच्छर वर हूरे ।
षप्पर भरि षेचरी गूद गिद्धणि गल पूरे ॥८००॥
मृगमाल भांजि मल्लार दल सिंघ रूप दरसावियो ।
सिषराल वंस दूजो सिषर उरस ठिवंतो आवियो॥८०१॥
॥ दोहा ॥
उण गज्ज हूंता ऊतरे, सेवो करि मन रोस ।
चमर ढुलंतां फिर चड्यो, जिण हाथी धरि जोस॥८०२॥

॥ छंद ॥

जैपुरनाथ पाछो जैपुर नैं फेरि आयो ।
सेवा नैं घणूं ही जापताई सूं रषायो ॥८०३॥
कोई दीह तांई थाव में लूणि न आया ।
चिमदा छा सजोरा सेवसिंघजी धाम पाया ॥८०४॥
इति श्री कविया गोपालकृत पीडीवार्तिक सेषसिंघ समाप्तो ॥

॥ चंद यथा ॥

सेवा कै पांच सेव साहि तै सवाया ।
पांचूं ही भूमि का उथाप थाप जाया ॥८०५॥
समृथसिंघ १ सीकरि कै ठिकांणै राज कीनां ।
कीता नैं २ दुसीकी ३ नैं दगा सूं मारि लीनां ॥८०६॥
कीतो मेद पाल्यो दैव ठोठ सरवडी में ।
सीकरि कै आडा ढालदोन्यां का अडी में ॥८०७॥
चांदो बुधसिंघ दोय छोटां का नाम ।
वेरी कटराथल दोय दोनां कै गांम ॥८०८॥
समृथसिंघ जी तो गांव च्यार्यां नैं बताया ।
कोई दीह पाछै चंद्र लावक राज पाया ॥८०९॥
पैलां रामसिंघ जी अभैसिंघजी भूप जायो ।
गादी जोधपुर की छूटि जैपुर सैर आयो ॥८१०॥
जैंकी भूप जसै यों कही छी साथि जाज्यो ।
गादी जोधपुर की रामसिंघ जी नैं दिवाज्यो ॥८११॥

जैसूं अंबपुर का नाथ पूरो जोर पायो ।
दिष्षण देस मां सूं फेरि आपा नैं उठायो ॥८१२॥
ईसर अम्बपुर कै तो सताबी कूंच कीनां ।
सीकरिनाथ समृथसिंघजी नैं साथि लीनां॥८१३॥
समृथसिंघ भाई चंद नैं भी साथि लीनूं ।
सारा मेडतां कै पेति डेरो आणि कीनूं ॥८१४॥
जां दिनां में झूंझणूं फतैपुर का नवाव ।
एकै यकलास नाम दूजो क्यामाव ॥८१५॥
दोनूं सांमलाती है बिलोचां नैं उठाया ।
दोनूं ही दगा सूं फतैपुर कै सेर आया ॥८१६॥
पैली तो दगा सूं फतैपुर नैं दाबि लीनूं ।
पाछै झूंझणूं की तरफ दोनां कूंच कीनूं ॥८१७॥
सीकरि सूं लिषावटि मेडता नैं दे षनाई ।
समृथसिंघजी भी वात राजा नैं सुणाई ॥८१८॥
राजा राम बोल्यो वार जावा तो न देस्यां ।
पाछा बावड्यां सूं फतैपुर नैं फेरि लेस्यां ॥८१९॥
समृथसिंघ भाई चांदसिंघजी नैं षिनायो ।
घोडा दोय सै सूं चंद सीकरि सैर आयो ॥८२०॥
सीकरि आंणि तोपां लोग फेल्यो साथि लीनां ।
ऊंनैं कामषान्यां झूझणूं पै कूच कीनां ॥८२१॥
सांमां तीन सादा का लडाई काज आया ।
नोला एक जोरा किसनसिंघ जी नांव पाया ॥८२२॥

डेरा कांमषान्यां लूमास गांम कीनां।
बेटा सादूलसिंघजी का घेर लीनां ॥८२३॥
जां दिनां सलेधी जगरामसिंघ जाया।
चंद्र का कठोर वज्र की सी रीति आया ॥८२४॥
दायें झूंझणूं कै कामषांनी जंग जूटा।
गोली तीर पंजरां कटारां सेल छूटा ॥८२५॥
जायो सिव साह को षते में चन्द आयो।
काल कै सरूपी कांमषान्यां नैं लषायो ॥८२६॥
घोड़ा चांदसिंघजी का उड्या ज्यों नाग पांष्यां।
सारां ही बिलोचां कामषान्यां बीचि नाष्यां ॥८२७॥
ऊंनैं सूं सलैधीसिंघ घोडां नै उठाया।
नोलो किसनसिंधजी भी उलालौ वाग आया ॥८२८॥
फेर्यो कांमषांनी एक स्याति भी न जूटा।
मांगी फोज ल्याया सो बिलोची भागि छूटा ॥८२९॥
चूरू सैर तांई तो नवावां नैं भजाया।
पाछै सांमलाती है फतैपुर सैर आया ॥८३०॥
सादै जां दिनां में झूंझणूं का राज लीनां।
राजी है सलैधीसिंघ जी नैं गांव दीनां ॥८३१॥
जां की फेरि सादा कंजवायदि छोड दीनी।
साषी चांदसिंघ जी है लिषावटि मांड दीनी ॥८३२॥
फोजां ले नवावां को बिलोचां दाब कीनां।
ऐसी भांति चांदै फतैपुर नैं फेरि लीनां ॥८३३॥

मारू देस सारो ही उदंगल तो मिटायो ।
राजा जोधपुर में विजैसिंघजी ही रहायो ॥८३४॥
जैपुर नाथ पाछा फेरि जैपुर नैं चलाया ।
समृथसिंघजी भी फेरि सीकरि सैर आया॥८३५॥
सीकरि आणि समृथसिंघजी तो धाम पायो ।
सीकरि राजगादी नारसिंघजी नैं बैठायो ॥८३६॥
बैठो नारसिंघजी राजगादी नैं लजाई ।
रोजी नैं कपूती पंच ऊती की बताई ॥८३७॥
सारी अंबपुर कै नाथ वातां जांणि लीनी ।
जैपुर तो वुलाया बात म्हातम की न कीनी॥८३८॥
राजाराम बोल्यो नारसिंघजी तो गमासी ।
सीकरि को ठिकाणूं चांदसिंघजी सो रहासी॥८३९॥
सीकरि सैर सूधी फतैपुर की राजगादी ।
जैपुर नाथ सारी चांदसिंघ जी नैं बतादी ॥८४०॥
पाछै नारसिंघजी नै दगा सूं काढ दीनां ।
चांदै राज सीकरि का समूचा दाब लीनां ॥८४१॥
ऐसी भांति सीकरि राजगादी चंद पाई ।
वैरी कटराथल वुद्धसिंघजी नैं बताई ॥८४२॥
जैपुर नारसिंघजी औड केती वार कीनां ।
कोई दीह पाछै राव लारां थांन दीनां ॥८४३॥
जैपुरनाथ जैपुर चांदसिंघजी नैं वुलाया ।
वूंदीनाथ नटिगो मांमला सू सो सुंणाया॥८४४॥

पैला फोज राजा की बलानैं जाय वेल्यो ।
जैसे भूप वूंदी का किला नैं तो वषेल्यो ॥८४५॥
वूदीनाथ हाडा सीरी जीनैं काढ दीनूं ।
पाछो सोंप वूंदी मांमलो भी बांध लीनूं ॥८४६॥
साल दर साल हाडो मांमलो चुकायो ।
श्री हजूरी धांम पूगां पाछलो न आयो ॥८४७॥
वूंदी सैर कांनी चांदसिंघजी आप जावो ।
पैसो मांमला को राव हाडा सूं भरावो ॥ ८४८॥
राजा जैनगर कै ईसरैं तो यों वषांणी ।
सीकरिनाथ चांदे बात सुणतां मूंछ तांणी॥८४९॥
फोजां जैनगर की साथि लीनी कूंच कीनूं ।
वूंदी सैर किलो चांदसिंघजी घेर लीनूं ॥८५०॥
हाडै राव लीनी मास एक की लड़ाई ।
वूंदी सैर लूट्यो देषि पाछै हारि पाई ॥८५१॥
हाडो राव किलो छोडि नीचो भूमि आयो ।
पैसो मांमला को तीन बरसां को चुकायो॥८५२॥
वूंदी सैं मांमलो भराय चंद आयो ।
रींगसि को तालिको सवाय में वंधायो ॥८५३॥
पैली कांमषांनी लोमांस षेत हाल्या ।
पाछैं जारि दिली बादिसाहां नैं पुकाल्या ॥८५४॥
दिल्ली में मादरसाह वादिस्याह वतायो ।
वारासै ग्यारा की साल राज पायो ॥८५५॥

दिल्ली नैं राजा जयसिंघजी डबोई।
सत्तरि पांन बहत्तरि उमराव मां न कोई ॥८५६॥
फरकी सेर को बिलोच पोरषां रहातो।
रैवाड़ी हीर मित्रसेणी एक आतो ॥८५७॥
दिल्लीनाथ बोल्यो एम दोनूं साथि जावो।
पीरू मित्रसेणी फोज सागि लेर आवो ॥८५८॥
सीकरि झूंझणूं का ईस दोनूं आंणि पाई।
ओरूं कांमषान्यां को दिल्ली सौं फोज आई ॥८५९॥
नोलो एक सादा को बतायो सिंघ दूजो।
पोतो एक सादा को जकै को नांम सूजो ॥८६०॥
बेटा लालनैं भी नोलसिंघ जी साथि लीनूं।
मांढणी झूंझणूं कै बीचि डेरो एक कीनूं ॥८६१॥
सूजै नोल घोडा सांमठानैं साथि मोकया।
मांढणी पेत सारा कांमषांनी आंणि रोक्या ॥८६२॥
जैपुरनाथ, सूजा भरतपुर का नैं बिनायो।
फोजां लेर सेषा सांमलाती जाट आयो ॥८६३॥
ऊँनें जाट आयो बस सेषा को सहाई।
आयो चंद सीकरिनाथ फोजां में अवाई॥८६४॥
कैतां जेज लागी कैयतां मैं चंद आयो।
तोपां की लड़ाई सोर घंणी गैंण छायो ॥८६५॥
घोडा दोय सै की लालसिंघजी बाग लीनी।
तोपां की लड़ाई बाग लेतां बंद्ध कीनीं ॥८६६॥

सूजै केहरी कैं फेरि घोडां नैं उठायो ।
घोडा तोन सै सौं कांमषांनी सीस आया ॥८६७॥
सूजै लाल पांगा नै बिलोचो सीस वाही ।
दोनूं फोज देषैं होर जाटां भी सराही ॥८६८॥
लालो नोलसिंघजी को लडाई षेत पोड्यो ।
मार्यो लाल पीरूषां विलोची नैं न छोड्यो ॥८६९॥
दोनूं एक लासीषां किमावो कांमषांनी ।
दाया झूंझणूं का फतैपुर का पाटथांनी ॥८७०॥
मोती फोजदारीषां हमीराषां चलाया ।
पांचूं सांमलाती है उलाली वाग आया ॥८७१॥
पांचों कांमषांनी है सुजाणां नैं दबावो ।
जायो सेवसिंघ जी को यता में चंद आयो ॥८७२॥
गोली पंजरां का सेल तीरां घाव कीनां ।
केता कांमषांनी चांद सूजै मार लीनां ॥८७३॥
ठावा दोय पीरू एक लाला नै मराया ।
ढाई सो बिलोची कांमषांनी कांमि आया ॥८७४॥
दो सै साठि हिन्दू कांमषान्यां भी षपाया ।
तेगां वाहि सूजा चन्द धावां पूर आया ॥८७५॥
पाछे मित्रसेणि हीर सेषां पै चलायो ।
नोलै हांकि घाडां मित्रसेणीं नै भजायो ॥८७६॥
ठारा सै रनेप का वरस मैं जंग जूटा ।
मांढणो षेत फेर्यो कांमषांनी भामि छूटा ॥८७७॥

पाछै कांमषांन्यां तो षमांनूं धारि लींनूं ।
दोनूं हीं ठिकाणां को षरादो छोड दीनूं ॥८७८॥
सूजै चांद नोलै जैत जांगी तो बजाया ।
दोनूं हीं ठिकाणां रापि सादे नादि आया ॥८७९॥
सीकरि कै ठिकांणै चांदसिंघजी राज कीनां ।
हाथी गांव घोडा चारणां नैं रीझ दीनां ॥८८०॥
बूंदी उदैपुर की जोधपुर की राजधांनी ।
सारांही ठिकाणां चांद की तो संक मांनी ॥८८१॥
जैपुर कै नरेश्वर ईसरै तो धाम पायो ।
माधोसिंघ गादी जैनगर की भूप आयो ॥८८२॥
सागै दोय वारी में मलारी राव आया ।
माधोसिंघ जी नैं आंणि गादी पै बैठाया ॥८८३॥
बोल्यो यों मलारीराव फोजां षरच लेस्यों ।
माधोसिंघ बोल्यो षम कोडी भी न देस्यों ॥८८४॥
जैं दिन तो मलारीराव पाछा ही चलाया ।
बरसां तीन बीतां फेरि बगरू पेत आया ॥८८५॥
जैपुर जावताई सों रषायो फोज कीनीं ।
सारा ही ठिकाणां में लिषावटि भेज दीनीं ॥८८६॥
सेषावत राजावत नाथ का नरूका ।
जैपुर में सांमलाती पेत बगरू का ॥८८७॥
नोलो भोपालसी सुजांणसिंघ आयो ।
सीकरि सूं सेषावत चंद नैं बुलायो ॥८८८॥

जैपुर तैं बगरू कैं षेत पूर आया।
कूरम की सेनि का सुमार हू न पाया ॥८८९॥
माधव मलार की गलार तोप लागी।
ग्रीषम की लाय कै समांण सोर जागी ॥८९०॥
बाधर उमेद राठोड रांण आया।
साहिपुरो स्यांमकोट ऊजल दिषाया ॥८९१॥
दोनूं राठोड रांण वीर ष्याल षेलू।
दोनूं बगरू कै षेति माधव का उवेलू ॥८९२॥
दोनूं राठोड रांण तीजो चन्द आयो।
नोलसिंघ चोथो सादूलसिंघ जायो ॥८९३॥
राजावत नाथ का नरूका तीन आया।
सातूं सांमलाती ह्वै मलार पैं चलाया ॥८९४॥
सातां सात कांनी ह्वै मलार नैं वितूण्यों।
जाणि सांमठा सा ह्वै किसाणां ईष लूण्यो ॥८९५॥
सोला सैं स केई आदम्यां तो षेत पायो।
माधोसिंघ जी की जीति गाडू नैं भजायो ॥८९६॥
जे दिन अरांई को पिडगनूं भी रीज कीनूं।
भादरसिंघ लीनूं भूप माधोसिंघ दीनूं ॥८९७॥
ऐसी भांति बगरू षेत दिषणी नैं भजायो।
माधोसिंघ सोकरि कै घणीं कै मोद पायो ॥८९८॥

॥ सोरठा ॥

उण आंटै सिवसाह, मसल्यो षाग मलारनैं।

दूजी बार दुबाह, चंद पषां जल चाढियो ॥८९९॥

मुकनो दुरद मलार, गल डागं भरते गयो।

गांडर छोडि गलार, मसती फेरि न मंडियो॥९००॥

नांहां नाह नरीस, ओपि प्रवाडां ऊजलां।

आयो सीकरि ईस, चन्द ढुलावत चम्मरां॥९०१॥

॥ छन्द ॥

सीकरि में सेषावत चन्द जीति आया।

ऊजला प्रवाडां फेरि ऊजला दिषाया ॥९०२॥

कोई दिनां सीकरि फतैपुर को राज कीनूं।

पाछै चांदसिंघजी देवता को धाम लीनूं ॥९०३॥

इति श्रीमविया गोपालकृत पीडी वार्तिक

चांदसिंघ समाप्ति।

॥ देवीसिंघ यथा ॥

जायो चंद काको तेज सारां वीचि सैठो।

सोकरि फतैपुर कै पाटि देवीसिंघ वैठो ॥९०४॥

देवीसिंघ बाला ही पणां में राज पायो।

काकै वुद्धसिंघजी राजकारिजै नैं जमायो ॥९०५॥

राजा भरतपुर कै जां दिनांमें जोर पायो।

जैपुर जोधपुर पै जाट फोजां लेर आयो ॥९०६॥

समरू तोपषानां नै वजारै साथि लीनूं।
दोनूं ठोड जैपुर जोधपुर नैं जोर दीनूं ॥६०७॥
फोजां ले जवारै जेज आवा की न कीनीं।
दोनूं हीं ठिकाणां में लिषावटि भेज दीनीं ॥६०८॥
जैपुर जोधपुर का पायनांमैं लागि जाणां।
सागै चालि दिल्ली वादिस्याही पै वैठाणां ॥६०९॥
गादी पै वरावरि वैठवा की भी लिषाज्यो।
पती नां कवूली तो लड़ाई काज आज्यो ॥६१०॥
पैली तो मुकामां पांच पोकर धाम रैस्यों।
जैपुर जोधपुर को जोर पाछै देष लेस्यों ॥६११॥
राजा जोधपुर को या लिषावट वांचि आयो।
राजा विजैसिंघ जी आंणि गादी पै वैठायो॥६१२॥
कासीदां यता में जाव जैपुर का सुंणाया।
भागो जाय छै तो भागि माधोसिंघ आया ॥६१३॥
सुंणतां ही जाट तो मुकाम छोडि दीनूं।
कूंचां दर कूंच मावडा को षेत लीनूं ॥६१४॥
जैपुर सूं जाट कै अगाऊ फोज आई।
जंगी फोज लाषां माधवेस की षिनाई ॥६१५॥
राजावत धूलै ले दलेल फोज संगी।
षत्री हरसाहि कँवर साहि दोय जंगी ॥६१६॥
नांमी नोलगढ को सादूलसिंघ जायो।
सेषावत नोलसिंघ जी भी साथि आयो ॥६१७॥

चेटो सिवसाह को बुधेस नांम ताको ।
देवीसिंघ सीकरि का धर्णी को एक काको ॥६१८॥
राजा पांचवां नैं भार सारो सूंप दीनूं ।
जाता जाट नैं भी मावडां में आंणि लीनूं ॥६१९॥
काला नाग को सो पूंछ पाछा सूं दवायो ।
फोजां नावड़ी के जाट पाछो बाधड्यायो ॥६२०॥
गोलां की लड़ाई फोज दोनां होण लागी ।
संपा सांमठी की रीति प्यालां सोर जागी ॥६२१॥
हाथी बैठि धूला को दलेलो कांमि आयो ।
हाथी फेरि बैठो जैं दलेलीसिंघ जायो ॥६२२॥
जायो दलेला को तोप गोलां सों उडायो ।
पोतो दलेला को फेरि हाथी पीठि आयो ॥६२३॥
पीढी तीन धूला कामढोली कांमि आया ।
धूला नाथ पाछे रावती का विरद पाया ॥६२४॥
ताहि स्याति नोलै जीव सादा के वचायो ।
टाली चोट गोलां की नलां की ओट आयो ॥६२५॥
समरूषांन सीसा सोर सारा वाहि थाक्या ।
जाये सेवसिंघजी कै बुधै भी बाज हांक्या ॥६२६॥
पैंतालीस मार्यां लोग सुधां कांमि आया ।
सुरलोक केता ही बिमांणां बेत छाया ॥६२७॥
सारी बात समरू भी जवारा नैं सुणाई ।
जैपुर पंथ केती भूपती की फोज आई ॥६२८॥

मेरी तीन चादरी पाट भूमि को उडा दे ।
डूंगर की बघेरें पाट भूमि को छुडा दे ॥६२६॥
ऊंग्यां आंथणां में आज केता ही उडाया ।
सागरमें किता ही पारपांणी ज्यों न पाया ॥६३०॥
केता ही उडाया तो न पाया पार लोगो ।
देषो वंस कूरम द्रोपती को चीर होगो ॥६३१॥
पता जोर मेरे फेरि सूरज तो उगाद्यो ।
भाजे मावड़ा सूं भरतपुर में भी पुगाद्यो ॥६३२॥
मावड़े मढोली षेत जाट नैं भजायो ।
जैपर कै राज माधवेस मोद पायो ॥६३३॥
जाट की लड़ाई बुद्धसिंघजी कामि आया ।
सीकरि में जीवता रह्या सो फेरि आया ॥६३४॥
एक मास वीत्यो माधवेस को सुणाई ।
जैपुर की गादी परताप भूप पाई ॥६३५॥
जाट नैं भजायो जां दिनां में दाब कीनूं ।
अलवर को राज भी नरूकै दाब लीनूं ॥६३६॥
मुगलां की बादिस्याहि डूबगी दिली में ।
जां दिनां में पूरणमल राव कासली में ॥६३७॥
देवीसिंघ सीकरि तमांम वात जोगो ।
योड़ा रजपूत को कमांम वंस छोगो ॥६३८॥
आपस में सीकरि कासली विरोध जाग्यो ।
कासली ठिकाणै छूटबा को भोग लाग्यो ॥६३९॥

पूरणमल राव कासली कै जोर कीनूं ।
घोड़ा रजपूत भी पयादो लोग लीनूं ॥६४०॥
पूरणमल राव कासली सो फौज ल्यायो ।
देवीसिंघ सीकरि सों फौज ले चलायो ॥६४१॥
सीकरि कासली बीचं कटीव जंग जूटा ।
घोड़ा रजपूत का तिरणां ज्यों सीस तूटा ।।६४२॥
हारि जीति कोई का न कोई हीण सैठा ।
सीकरि कासली में फेरि दोनूं जाय बैठा॥६४३॥
देवीसिंघ सीकरि सों उकीलां नैं पठाया ।
अलवर का नरूका राव पांतिल नैं उठाया ॥६४४॥
देवीसिंघ सांमल राजगढ़ को राव आयो ।
सारो कासली को राज देवा कै दबायो ॥६४५॥
पूरो कासली नैं छोडि पच्छिम नै परोगो ।
सीकरि कासली को राज देवीसिंघ जोगो। ६४६॥
केई बार पूरै देस सारो लूट लीनूं ।
पूरा नै लड़ाई लेर पदमैं जेर कीनूं ॥६४७॥
दाव्यो कासली को राज देवो जोरि आयो ।
राजा षंडपुर का नैं लिपादी वंट वायो ॥६४८॥
कांकड़ सू लागतां अनेक भोड़ कीनां ।
पैतालीस गांव षंडपुर का दाब लीना । ६४९॥
किल्ला रुघनाथ देवगढ़ का दो बणाया ।
दोनूं षंभ धरती द्रगपाल सा लषाया ॥६५०॥

दिल्ली में वादिसाह गैंवर साहि अल्ली।
फोज को हरोली में हूतो निजाव कुल्ली ॥९५१॥
रजवाड़ा ऊपरि तैसील को षिनायो।
सोला हज्जार फोज ले निजाव आयो ॥९५२॥
दिल्ली तूंराटि वीचि रोकवा न पाया।
तूंराटी तार तीर ज्यों सतेज आया ॥९५३॥
सादा का भोज का सिरोही षेत जूट्या।
झगड़ा वीचि नीजावकुली का पांव छूट्या॥९५४॥
कुल्ली निजावषांन गरद में मिल्योगो।
दिल्ली नैं पांष लेर परेवा ज्यों चल्योगो॥९५५॥
दिल्ली में जारि वादिस्याह नैं कहाई।
सूवै अजमेरि कै न साह की दुहाई ॥९५६॥
हिन्दू लोग सारा वादिसाह सों वलिगा।
॥९५७॥
सेषावत झूंझणूं फतैपुर का वताया।
सेवा सादूलसिंघ जी का जोरि आया ॥९५८॥
घोडा रजपूत को कमांम जोर आपै।
देवीसिंघ सीकरि वादिसाहां को न थापै ॥९५९।
सावक नैं साहि अंवषास में वुलाया।
हाजिर उमराव मीर सो तमांम आया ॥९६०॥
वादिसाह वोड़ा अंवषास में फिराया।
दोनूं दोन पांन कै नजीक भी न आया ॥९६१।

बीड़ादार बोल्यो आज केही सों उठावै।
बीड़ा में भार एक भार को लषावै ॥९६२॥
फेरि पांन बादिस्याह बोल दीनूं।
मुरतजा षांन जैं भड़ेच पांन लीनूं ॥९६३॥
मुरतजा षांन पांन लीनूं साहि बोल्यो।
आज तैं भड़ेच आसमान सोस तोल्यो। ९६४।
बंगाली कूंम को नजीम नां कहायो।
मेरो नांम मुरतजा मोलवी बतायो ॥९६५॥
सेषावत कूंम का समेत बांधि ल्योंगा।
बादिस्याह गैंवर की पेस भेज द्योंगा ॥९६६॥
एती बोलि जंग को सबाब ले चलाया।
बांवन हज्जार फोज लेर साथि आया ॥९६७॥
आई फोज देस में अवाई कूच कीनां।
माधोपुर थोई दोय सैर लूट लीनां ॥९६८॥
सीकरि सूं कागद भड़ेच नैं षिनाया।
देवोसिंघ कागद में आंक यों लिषाया ॥९६९॥
कागद नैं वांचतां ही भड़ेच ऊठि जाजे।
सेषाटी देस में विचारि फाज ल्याजे ॥९७०॥
सूबादार आगै अवदुलषांन आयो।
देवली मुकांम सूलि मांमलो चुकायो ॥९७१॥
सीकरि में सेवसिंघ जी सूं आंणि जूटो।
सीकरि साबूत सारज्यांनी भागि छूटो ॥९७२॥

वंगाली फोज ले सिरोही चालि आयो।
मांमलो रहायो भागि जीव नैं वचायो ॥६७३॥
मुरतजाषांन क्यों भड़ेच वादि आवै।
सेषाटी देस में सदाही यों चुकावै ॥६७४॥
कागद नैं मुरतजाषांन वांच लीनूं।
देवीसिंघजी कै नांम पाछो मांड दीनूं ॥६७५॥
थोई का डेरां पेस ले जरूर आणां।
वादिस्याह गैबर का मांमला चुकाणां ॥६७६॥
आगै तीन आया सो उमीर छा सदा ही।
मेरा नांम मुरतजाषांन मैं सिपाही ॥६७७॥
मेरा तोपषांना सोर सीसा उगलैगा।
झूंझणूं फतैपुर कांमषान्यां कूं मिलैगा ॥६७८॥
रैती वादिसाहां की जराति ऊजड़ैगा।
देवीसिंघ तेरा जोरं देषना पडैगा ॥६७९॥
मैं भडेच कूंम का पठांण जो कहाया।
मुरतजाषांन नाम तो जरूर आया ॥६८०॥
सीकरि नैं जोर की लिषावटि भेज दीनीं।
रींगस नैं दूसरे मुकांम लूट लीनी ॥६८१॥
देवीसिंघ सेषावत भायपो वुलायो।
पोतो सादूलसिंघजी को सुजांण आयो ॥६८२॥
दांतै कूडि वषतावर अमानीसिंघ आया।
दोनूं वीर जम की जमाति सी लषाया ॥६८३॥

लाडांणी दूलषां चलास को बुलायो।
सैकडी वार आसमांणि तोलि आयो ॥९८४॥
सीकरि सूं देवसाह फोज ले चलाया।
षाटू पेत मुरतजाषांन फोज ल्याया ॥९८५॥
जैपुर कै भूपति प्रतापसिंघ जांणी।
देवीसिंघ मुरतजा सीस मूंछ तांणी ॥९८६॥

॥ दोहा ॥

तोप नगारां तडियो, असुरां देव अमाप।
आमैरो धुणि ऊससयो, तिण वेला परताप ॥९८७॥

॥ छन्द ॥

पंगारोत सेवै दलेल नांम जाको।
भूडसिंघ नाथावत चोमूं भायपां को ॥९८८
दोनां नैं फोज की हरोली भूप दीनों।
मंगल महंत जी की जमाति साथि कीनीं ॥९८९॥
देवीसिंघ जी कै सांमलाती फोज आई।
सोला हजार श्रीहजूरी को पिनाई ॥९९०॥
सेषावत जाति सांमलाती ह्वै चलाया।
मुरतजाषांन पूर षाटू पेत आया ॥९९१॥
सांमहि सतेज तोपषांनां सोर जागी।
षाटू पेत कायरां हियां में कंप लागी ॥९९२॥
गंगा जल पान ले सनांन दान दीनां।
सूरमां सरीर में सनाह धारि लीनां ॥९९३॥

देवीसिंह साहि का कमांम नै बपेख्या।
ताजी हज्जार तीन तीन वार फेख्या ॥९९४॥
पद मैं देठो कै निधात वाज कीनां।
मुरतज्जा षांन का समीपी मार लीनां ॥९९५॥
मूडसिंव नाथावत डूंगर्यां ठिकाणै।
भेज्यो हजूरि को तमांम फोज जांणै ॥९९६॥
सेषावत हाथियां हवद्‌दा मैं सेल वायो।
कूडि कै ठिकाणैं वषतेस कांमि आयो ॥९९७॥
ठाकर दूजोद को सलेदीसिंघ जूटो।
पंजरां कटारां सेल तीरां अंग फूटो ॥९९८॥
जायो नारसिंघजी को हणूंतो कामि आयो।
मिसरीषां सरीफै कामषान्यां षेत पायो ॥९९९॥
षादू षेत वांधे टकणेत षाग वाही।
स्यावली ठिकाणां कै पठाणां भी सराही ॥१०००॥
पालडी ठिकाणां को उमेद नूर जायो।
सिंघासणि लाडणी बुधसिंघ नै वतायो ॥१००१॥
देषकरण सूजै धाय भाई नांव पाया।
कायथ दोय अरजन उमेद कांमि आया ॥१००२॥
वेरी चहुवांण चन्द पोता कांमि आया।
नाथावत ढांणि का दोय नैं वताया ॥१००३॥
मेल का नकका तीस षादू कांमि आया।
सोला नर सास कालसी का मां वताया ॥१००४॥

राणो एक जूटो दोय राज का दरोगा।
पाराँसुर वंसी दोय टूक टूक होगा ॥१००५॥
हिन्दू गजसिंघवोत स्याम को सहाई।
वड्‌यो सरूप जी हमीरो एक नाई ॥१००६॥
चारण दोय षोषा का बास का वताया।
हिन्दू रहाधान षेत षादू कांमि आया ॥१००७॥
हुकमू लाडषांनी लाडषान्यां वंस टीको।
दुरजणसिंघ मलमल कै ठिकांणैं रावजी को ॥१००८॥
एता हूँ दिल्ली की फोज नैं विरोली।
मुरतज्जाषांन कै जगाई जीव होली ॥१००९॥
हाक्या वाज मुरतज्जाषांन कोप कीनूं।
मंगल महंत की जमाति रोक लीनूं ॥१०१०॥
वाणां को वोष तैं आकाश लोक छाया।
दादु हजार एक साधु कांमि आया ॥१०११॥
दादू का जैपरि नवीन भोमि दादू।
मंगल महंत की जमाति षेत षादू ॥१०१२॥
हिन्दु तुरकांण जूटि घणीं धर घपाई।
दोनों की हारि जीति जांणमें न आई ॥१०१३॥
सेषावत जाति भी न आया षेत कांनी।
मुरतज्जाषांन भी हिया में हारि मांनीं ॥१०१४॥

॥ दोहा ॥

दोय सहस्र अरु दोय सैं, अछरो वर यकसार।
वरिया षादू षेत विच, हूरां होय जुहार ॥१०१५॥

॥ छंद ॥

षाटू षेत वाजतां नगारां जैत पाई।
आयो भूप सीकरि का वजारां में वधाई ॥१०१६॥
नोछावर भूप की तमांम सैर कीनीं।
आसागीर पूरणाय नांम रीझ लीनीं ॥१०१७॥
दोहा गीत छप्पै छन्द चारणां सुणांया।
एकै दिन हाथी पांच गांव मोज पाया ॥१०१८॥
सीकरि की गादी न्याय नीति राज कीनां।
झूंठा चोर लापर नैं प्रांण दंड दीनां ॥१०१९॥
सेवा सादूलसिंघजी का वंस दोऊ।
जाकै वीचि समृथसिंघजी का आगि कोऊ ॥१०२०॥
जै दिन नारसिंघजी का वलारां में रहाता।
पोता सादूलसिंघजी का पासि जाता ॥१०२१॥
कसवा नोलगढ कै तो जमीं की सांकड़ाई।
समृथसिंघजी का कैर कांकड़ की अड़ाई ॥१०२२॥
देवीसिंघजी तो फोज तोपां लेर आयो।
सादा का अठीनैं जोर सारा ही रषायो ॥१०२३॥
पानां च्यारि सारा सांमलाती है चलाया।
समृथसिंघजी का फेरियां में ही मिलाया ॥१०२४॥
कांकड़ फतैपुर का झूंझणूं का की अड़ाई।
केई वार होगी हारि जीत्यां की लड़ाई ॥१०२५॥
काट्या कैर वेरी वां अज़ाषा काट लीनां।
देवै उदैपुर का आंम साटै काट लीनां ॥१०२६॥

वां तो दाव कीनूं आंणि घोड़ा हेरि लीनां ।
देवीसिंघ साटै हाथियां नैं घेरि लीनां ॥१०२७॥

हाथ्यां को रुषालो नूरसिंघजी कामि आयो ।
बेट मेदसिंघजी मारि हाथी घेरि ल्यायो ॥१०२८॥

केई दीह तांई तो जमीं का झोड़ कीनां ।
पाछे न्याय तावै सीम काटि मुलक लीनां ॥१०२९॥

सारा फोज का तो षेहवां नैं भेज दीनां ।
सारा आप आपां का ठिकांणां जाय लीनां ॥१०३०॥

सीकरि षोस लेवा का मनोरथ तो बिलाया ।
समृथसिंघजी का भी बलारां फेरि आया ॥१०३१॥

देवीसिंघजी भी झोड़ कांकड़ को मिटायो ।
फोजां लेरि सीकरि सों बलारां फेरि आयो॥१०३२॥

रामृथसिंघजी का नैं किला मां काढ दीनूँ ।
देवै यों बलारां को ठिकाणो दाब लीनूँ ॥१०३३॥

दादा सेवसिंघजी सूँ सवायो चन्द जायो ।
देवै रामगढ का सैर किल्ला नैं बणायो ॥१०३४॥

देवै रामगढ में पोज(त)दारां नै बसाया ।
कोड्यां का पसारा जां बिलात्यां नैं चपाया ।१०३५॥

॥ दोहा ॥

कूरम जसे षाटे की (?) तादटि देस वदेस ।
अष्टादस सत बावनैं, वीसमियो देवेस ॥१०३६॥

इतिश्री कविया गोपालकृत पीडीवार्तिक सिषर
वंसोत्पत्ति देवीसिंघ समाप्ती ।

॥ लिछमणसिंघ यथा ॥

ठारा सै बांवन की साल देव वा को ।
पूरण तप तेज देवसाहि का लछा को ॥१०३७॥
ठारा सै बावन की साल राज पायो ।
ठारा सै छपन की साल भयाऊ आयो ॥१०३८॥
फरासीस कोम को फिरंगी एक नांमी ।
जंगी हजार वीस फोज को कमांमी ॥१०३९॥
जैनैं पंजाव सों वलारां का उठायो ।
सेषाटी लूटवा फतैपुर सैर आयो ॥१०४०॥
सारो सेर किल्लो भयाऊ फोजां घेर लीनूं ।
रूंषां नैं कटाया फोज संगर फेर लीनूं ॥१०४१॥
सीकरि में मुसाहिव धाय भाई एक सूजो ।
वेरी गाँव चाँदावोत जालिमसिंघ दूजो ॥१०४२॥
तीजो मेदसिंघजी को नूरसिंघजी वतायो ।
मेदो जारि जैपुर सों सतावी फोज ल्यायो ॥१०४३॥
चोमूं नाथ रणजीतो मुसाहिब होर आयो ।
फोजां की हरोली भूप पातिल को षिनायो ॥१०४४॥
जैपुर सों बारा हजार फोज ल्याया ।
सीकरि सों फेरि फोज साथि ले चलाया ॥१०४५॥
सेषां का नाथ का मृगेस वंस जाया ।
भयाऊ फोज कूंजर समूह सोस आया ॥१०४६॥

संगर फोज आडा तोपषांनैं तोडि नांष्या ।
सेषा नाथ बंस्यां फोज माथै वाज नांष्या ॥१०४७॥
ऐ तो वाग घोड़ां की सतेजी लेर आया ।
ऊँनैं कोट मां सूं डोल किल्ला का चलाया ॥१०४८॥
दोनूं ओड संगर में कुठारा षाग छागा ।
कूरम सामठा सा ज्यों कबाड़ी काठ लागा ॥१०४९॥
फेर्यो हारि मांनी सो किल्ला सों दूरि हटिगो ।
वेड़ा भयाक्र का को बरदवांनी चीर फटिगो ॥१०५०॥
फेर्यो फतैपुर सों भयाक्र मांनी हारि भागा ।
चोमूं का धणीं कै भी सजोरा घाव लागा ॥१०५१॥
किल्लो फतेपुर को रावराजा कै रहायो ।
किल्लै गोड सुरतांणो सरीसो कांमि आयो॥१०५२॥
समृथसिंघजी का भयाक्र वेड़ा यों उठाया ।
फेर्यों फतैपुर की भोमि नाहर का न आया ॥१०५३॥
सीकरि का लछ्या'की देस सारा में दुहाई ।
फोजां की हरोली मेद सूजो धाय भाई ॥१०५४॥
पूरण राव फेर्यो कासली कै दाव कीनां ।
बीदा लाडषांनी भेडत्यां नैं साथि लीनां ॥१०५५॥
सागै मेद सूजो धाय भाई फोज कीनीं ।
सामां जाय कांकड़ पै लड़ाई दोय लीनी ॥१०५६॥
सूजो धाय भाई नूर जायो जाय जूटा ।
बीदा लाडषांनी छा लुटेरा भागि छूटा ॥१०५७॥

बीदा लाडषांनी मेडत्या भी धाड़ि दोड्या ।

सारा जेर कीनां लोटसार का कोट तोड्या ॥१०५८॥

षागां पांण देवै चंद सेवै भूमि षाटी ।

सो ही पांणि षागां सेष नांमी भूप दाटी ॥१०५९॥

किल्लो एक पीरोडांसलाका बाँध लीनूं ।

चोरी धाडि देसां में उदंगल फेरि कीनूं ॥१०६०॥

सीकरिनाथ फोजां फेरि किल्ला ढाहि दीनां ।

जाषल मुनवाड़ी कै समेति लूट लीनां ॥१०६१॥

॥ दोहा ॥

पाडि बरड़वो पेम पर लोठसरां लग वेर ।

दलां उजाड़ा दे लड्डै, सीमाडा आसेर ॥१०६२॥

॥ छुन्द ॥

जेता ही दिनां में जोधपुर सों भीम जायो ।

सेषाटी धरां में भाजि धूंकलसिंघ आयो ॥१०६३॥

जैंको दोष धास्यो भूप मानै फोज भेजी ।

आई फोज किल्ला सापरा का पैं सतेजी ॥१०६४॥

कोल्या डीडवाणां सूं चलाया कूंच कीनूं ।

किल्लो सापरा को मारवाड़ा घेरि लीनूं ॥१०६५॥

मोषतसिंघ नांमी रावजी का मैं कहातो ।

किल्लादार किल्ला सापरा का मैं रहातो ॥१०६६॥

मोवतसिंघ जी तो कोट वारै कांमि आयो ।

पांचोदो किलांणिसिंघजी का षेत पायो ॥१०६७॥

नाथावत परसरांमजी का लाडषांनी ।
मिलक पड्या मेल का पठांण कांमषांनी ॥१०६८॥
कायथ १ टकणैत २ बरि रंभगा विमांणां ।
नायक२ त्रिवांण गोड़ २ ढोली १ दोय रांणां२॥१०६९॥
किल्ला सापरा का में यता तो देस नांमी ।
बाकी सो सघा सो रावराजा का सलांमी ॥१०७०॥
इसो वोलि किल्ला में समूँची फोज आई ।
दारु का दगा सूँ मारवाड़ा मौत पाई ॥१०७१॥
पंद्रा सै पचावन मारवाड़ां षेत पायो ।
किल्लो सापरा को रावराजा कै रहायो ॥१०७२॥
जेते ही लछ्‌मा कै सैर लिछमणगढ बसायो ।
बीकानेरि राजा सुरतसिंघजी कै न भायो ॥१०७३॥
राजा सुरतसिंघजी जाति बीदा नैं सिषाया ।
सीकरि की धरा नैं लूटवा चालि आया ॥१०७४॥
लिछमणगढ़ बसो छो सैर जै में वाज फेर्‌या ।
मालां की कतारां का लुटेरा ऊँट घेर्‌या ॥१०७५॥
बषतो नांम दरोगो सीकरि सूं लैर लागो ।
कांकड़ि पूगतां ही धाडव्यां सूं रीठ बागो ॥१०७६॥
सारोट्या समेती लोठसर का नैं बिगाड्या ।
बीदाधिसारी का दरोगै दांत भाड्या ॥१०७७॥
बीदा दोय ठावा नैं दरोगैं बांधि लीनां ।
पाछो आरि किल्ला की बुरज में कैद कीनां ॥१०७८॥

बीकानेरि राजा सुरतसिंघजी जोर पायो ।
फोजां साथि दीनीं एक सूरांणो पिनायो ॥१०७९॥
ऊनैं सूं फतैपुरनाथ पूरो कोप कीनूं ।
बीकानेरि राजा को रतनगढ़ लूट लीनूं ॥१०८०॥
केई बार फोजां सेत सूरांणुँ नसायो ।
लिछमणसिंघ राजा सैर लिछमणगढ़ बसायो ।१०८१॥
म्होरो एक स्योगढ़ में कुसालीराम होतो ।
जैपुर को उथापि थाप पूगो धाम सो तो ॥१०८२॥
जैंको एक बेटो पडपुर का मैं दिपायो ।
म्होरै सैर स्योगढ़ रावराजा कै दबायो ॥१०८३॥
स्योगढ दाबि रेवासा किला नैं दाबि लीनूं ।
सूजैवास किलै रावराजा जोर दीनूं ॥१०८४॥
सूजावासि सोला दीह किलै घूम बागो ।
सत्रै दीह किलाकै बडोड़ी तोप लागी ॥१०८५॥
गोला दोय लागा एक डंडो गेर दीनूं ।
तीजो तोर लागो फेरि पलो फेरि दीनूं ॥१०८६॥
सूजावास रैवासो पंडेलो दाब लीनूं ।
किला कोट का नैं रावराजा जोर दीनूं ॥१०८७॥
ऊनैं पंडपुर का ईस ऊनैं रावराजा ।
बागा फोज किल्ला में भुंभाऊ बीर बाजा ॥१०८८॥
सीकरिनाथ किलो तोड़वा को बोल दीनूं ।
जगां भीर मेलकै जवानीसिंघ लीनूं ॥१०८९॥

'हलो बोलि किल्ला पै जवानीसिंघ आयो।
हूडा में हणूंतो लोहलंगर सो लषायो ॥१०९०॥
दोनूं ओड षापां सूं उपाली तेग हाथां।
गोली तीर सेलां पंजरां सूं लूथवाथां ॥१०९१॥
हूडा मां हणूंता का कड़ां सूं बाण छूटा।
हूडो कोट दोनूं मास च्यारयां में न छूटा। ॥१०९२॥
'केई बार हल्लो बोलि किल्लै जाय झूम्यां।
केई बार दोनूं ओड घावां पूर घूम्यां ॥१०९३॥
चोथे मास मेलकै जवांनै कोप कीनां।
हलो बोलि हूडो कोट दोनूं भेल दीनां ॥१०९४॥
हूडै इन्द्रसिंघजी को हणूंतो कांमि आयो।
पाछै कोट किल्लो रावराजा कै रहायो ॥१०९५॥
'फोजां में अढाई सै पख्यांका लोक पाया।
किल्लै सो सवा सौ पंडपुर का कांमि आया ॥१०९६॥
राजा पंडपुर का छोड़ि दोनां कूंच कीनों।
ठारा सै गुणंतरि में पंडेलो दाब लीनों ॥१०९७॥
बीकानेरि जैपुर जोधपुर का उदैपुर का।
भेजी रावराजा की लिषावटि मांडि करका ॥१०९८॥
च्यारयों हीं ठिकाणां रावराजा राज कीनां।
सोला गांव हाथी चारणां नैं दान दीनां ॥१०९९॥
चारण कच्छ देसां जाति कच्छिला कहाया।
तेजो भोज दोनू कारवानां लेर आया ॥११००॥

घोड़ा एक रेज्या नैं मुलायो लाष दीना ।
हाथी गांव फेर्यो बायना मैं रीझ कीनां ॥११०१॥

बाकी कारखानां का हजारां साठि बोल्या ।
मांग्या सो रुपैया देर फेर्यो बाज षोल्या ॥११०२॥

दूजै दीह जोड़ापै सिकारां गोठि कीनां ।
रेज्यो एक राष्यो बाज सारां बांट दीनां ॥११०३॥

॥ दोहा ॥

परठे उझल तालब पर, लिछमण षेलि सिकार ।
साकुर साठि हजार का, दीनां जगदातार॥११०४॥

एता लिछमण आपिया, साकुर ऊँट समाज ।
पंथ पंथ लिछमण परा, गढवांड़ा गजराज॥११०५॥

॥ छन्द ॥

फेर्यो मीरषां जी जां दिनां मैं सोर कीनूं ।
जैपुर का धणीं को देस सारो लूट लीनूं ॥११०६॥

दोनां मीरषांजी रावराजा पाघ बदली ।
तावै दोस्ती कै रावराजा देस अदली ॥११०७॥

वेड़ा मीरषां का तो चल्यागा टूंक कानीं ।
ऊँनैं भोजवंस्यां षडपुर की बात मांनी ॥११०८॥

ठावा जो ठिकाणां बंध सारी बात जोगा ।
सारा भोजवंसी भोजगढ़ मैं एक होगा॥११०९॥

सीकरि का धणीं सों तो षंडेला ओलि लेणं ।
राजा षंडपुर का नैं षंडेलो सोंप देणं ॥१११०॥

स्यामूं अभैसिंघजी भोजवंस्यां का मुराई ।
दोनां जार जैपुर सैर फोजां नैं उठाई ॥१११॥
फोजां लेर जैपुर सूं पिरोहित मांन आयो ।
जैपुर का धणीं को भूप जगता को बिनायो ॥११२॥
फोजां जैनगर की भी षंडेलै आंणि भूमी ।
ऊंनें भोजवंसी फोज ल्याया लेण भूमी ॥११३॥
किल्लादार ग्यानूं नूरसिंधजी को कहातो ।
किल्ला सेष ताजी पै सदा ही सौ रहातो ॥११४॥
तोपां की लड़ाई सोर सीसां सोर कीनां ।
हल्ला तीन किल्ला का जवानां मार दीनां॥११५॥
जैते रावराजा मीरषां जी नै उठायो ।
सारी फोज सुद्धां मीरषां जी आप आयो ॥११६॥
फोजां मीरषांजी रावराजा की चलाया ।
दोनूं सांमलाती है लडाई काज आया ॥११७॥
फोजां नै पिरोहित मांन देषिकै उपडिगा ।
सादा का समूंचा उदैपुर में भाजि बडिगा॥११८॥
फोजां रावराजा मीरषां की लैर लागी ।
सारा साथि वेड़ा मीरषांजी आप सागी ॥११९॥
आई देखि फोजां उदैपुर सूँ तो उपडिगा ।
साराभोजगढका जो नला में जारिबडिगा ॥११२०॥
सारा भोजवंस्यां नैं नला में हेरि लीनां ।
फोजां श्री लछा की मीरषां को घेरि लीनां ॥११२१॥

कोई भोजगढ़ में रावराजा सों न जूटा ।
सारा दंड लाखां दे रुवाया फेरि छूटा ॥११२२॥

॥ दोहा ॥

अचड़ यसी जग ऊपरै, करी लछे नृप कालि ।
भालायीं सिर भोज का, कुवरिया दे नालि॥११२३॥

। छुन्द ।

जैं दिन तो षंडेलो रावराजा के रहायो ।
फेर्यो फोज षंगारोत वेरीसाल ल्यायो ॥११२४॥

लीस्यों कोट रैवासो षंडेलो तो छुडाया ।
बारा गाँव स्यामां नै बताया सो रहाया ॥११२५॥

फेर्यो षेतड़ी का बिसाहूँ का फोज ल्याया ।
सारा भोजकां नै रावराजा जी भ्रमाया ॥११२६।

सीकरि कै लछै भी रावराजा फोज मेली ।
फेर्यो डूंडलोद की गढीनैं जाय भेली ॥११२७॥

सावक रावराजा का प्रवाड़ा जो बतावै ।
न्यारी एक पोथी सावती में नीठि मावै ॥११२८॥

॥ दोहा ॥

यता किया जग ऊपरै, आचां षग आचार ।
कवण लछरा कहि सकै, परवाड़ा नह पार ॥११२९॥

॥ छुन्द ॥

सारी रावतांण्यां नै अलुसू भेष दीनूं ।
वीरां पास थायनिजैं सती है साथ कीनूं॥११३०॥

इति श्री कविया गोपालकृत पीढी वार्तिक लिछमन-
सिंघ समाप्ती

॥ भैंरूसिंघ यथा ॥

सीकरिनाथ ठारासै नवे में धाम पूगा ।
बेटा सात सातूं हीं सतेजा भांण ऊगा ॥११३१॥
जाया रावताण्यां तीन तीनूं जो सुरेती ।
बेटो कैरि राख्यो सात रामूं कै समेती ॥११३२॥
कॅवराईपणां में नो हमीरो धाम पूगो ।
जैंकी पूठि भैंरूसिंह फेर्यो भांण ऊगो ॥११३३॥
सीकरि का ठिकांणां को यता पै (मैं) राज पायो ।
किल्लो नेछुवा को रामसिंघजी नै वतायो ॥११३४॥
मुकनूं १ हुकुमसिंघजी २ चिमनसिंघजी ३ नां कवाया ।
तीनूं राष वास्यां कै विजाईसिंघ जाया ॥११३५॥
आ मां एक चिमनूं सेर सीकरि में रह्यायो ।
चिमना नैं प्रतापै गाँव एको ही वतायो ॥११३६॥
हुकमूँ सुर तोठां गाँव सोला को लिषावटि ।
मुकनूं बीस गांवा सूं ठिकाणैं सींघरावटि ॥११३७॥
भैंरूसिंह थांणो राव न्यांनेरे रह्यायो ।
वरसां पाँच सातां में वड़ो सो ह्वैर आयो ॥११३८॥
कांकड़ पै अगाऊ जारि सूधो काट दीनूं ।
सीकरि कै ठिकाणैं फेरि वडवा मी न दीनूं ॥११३९॥
भैंरूसिंघजी तो फेरि जैपुर जाय लीनूं ।
कोई दीह सीकरि में प्रतापै राज कीनूं ॥११४०॥

भैरूसिंघजी कै भी ठिकाणूं एक आयो ।
जैपुर की लिषावटि सूँ समायललो वतायो ॥११४१॥
सीकरि में मुसाहिव दोय दूंणी सावधानी ।
भ(व)गतावर दरोगो एक वीजो लाडपांनी ॥११४२॥
घोड़ा असवारां की तयारी भूमि लाटी ।
वारा गाँव स्यामां नैं वताया और दाटी ॥११४३॥
राजा को ठिकाणूँ सायरा कै व्याव कीनूं ।
चारण भाट रांणां नैं अमोघो त्याग दीनूं ॥११४४॥
पाछै रावराजा कै कुमंत्री कांनि लागा ।
कायथ रामचन्द्रा नूंनदा का दाव लागा ॥११४५॥
ओदादार आगै छा जकां नैं दूरि कीनां ।
मोटा कांम छोटा आदम्यां नै सौंप दीनां ॥११४६॥
सागै जारि जैपुर सैर फौजा नैं उठाई ।
किलै सींघरावटि कै लड़ाई काज आई ॥११४७॥
ऊनैं झूंझणूँ सूं फासतर नैं भी वुलायो ।
किलै सींघरावटि कै लड़ाई काज आयो ॥११४८॥
च्यार्यों मेरि फोजां सींघरावटि घेरि लीनीं ।
ठारा दीह किल्ला में लड़ाई षूब लीनीं ॥११४९॥
जैपुर का फतैपुर का फिरंगी आंणि जूटा ।
ठारै दीह किल्ला सींघरावटि नीठि छूटा ॥११५०॥
चाल्योदो वठोठां सूर तोग नेड़वा नैं ।
फोजां ले प्रतापै फेरि काढ्या सावजां नैं ॥११५१॥

रांघासणि समेति पालड़ी का काट दीनां ।
सारो देस लूट्यो जां दंगल फेरि कीनां ॥११५२॥
पीपाडि नैं फतैपुर रामगढ नैं जोर दीनां ।
बीकानेरि जोधाणैं फिरंगी दाब लीनां ॥११५३॥
भायां बंस कां सूं तो जमीं को लोभ दायो ।
सारो देसवास्यां भी अचैनूं जोरि पायो ॥११५४॥
समत में गुनी सै साल सातां की कहाई ।
वैही साल संवत में प्रतापै मोख पाई ॥११५५॥
ओदादार सीकरि का लिषावटि भेज दीनीं ।
भैरूंसिंघजी की नां कवूली बात कीनीं ॥११५६॥
ओदादार हल्यो जैनगर सूँ एक आयो ।
बारा मास तांई सैर सीकरि में रहायो ॥११५७॥
किसनैं पंडपुर कै बात ढाघी परम असी ।
सारां ही विसाह नोलगढ का भोज वंसी ॥११५८॥
सारा कूडि दांतै षाचर्या सा एक होगा ।
रायांसाल वसी जो समूंची बात जोगा ॥११५९॥
भैरूंसिंघजी कै सांमलाती वंस सारो ।
सारां सूं हणूंतो सापरा को एक न्यारो ॥११६०॥
सीकरि में हणूं तै सापरा कै जाव पायो ।
रायांसाल वंस्यां भूप भैंरू नैं वणायो ॥११६१॥
जैपुर में रिफाटि साहव भादुर न्याय छांणी ।
सीकरिसापरा की जालसाजी नैं पिछांणी ॥११६२॥

सागै चोपदारां सात्र भादुर जी पिनाया ।
भैरुंसिंधजी नैं राजगादी पै वैठाया ॥११६३॥
गादी वैठि भैरूसिंघ भायां नै वुलाया ।
सुकनू हुकमसिंघजी जोधपुर सूं भ्रात आया ॥११६४॥
सुकनू हुकम सीधोर सीवोटां ठिकांणै ।
दोनूं भ्रात वैठा आंणि जांनै देस जाणैं ॥११६५॥
कागद भेजि'वीकाणै जंधारा नैं वुलायो ।
आयो फेरि कागद सूं जवानू मेद जायो ॥११६६॥
भोपा भीमफा नैं फेरि कागद सूं वुलायो ।
सगतो लाडषांनी जैनगर सूं साथि आयो ॥११६७॥
होता गांव भूमि सावकां नैं जो वताया ।
भैरुसिंघ सारा सांमलाती यों रषाया ॥११६८॥
आवादांन गांवां में किसाणां नै वसाया ।
उदकी भी यनांमी देसवासी चैन पाया ॥११६९॥
सेवै चंद देवै रावराजा भूमि पाटी ।
भैरुंसिंघ जेती न्याय तावै भूमि लाटी ॥११७०॥
जेती भूमि भैंरूं रावराजा की दुहाई ।
कीनूं राज जेतै कैतसाली भी न आई ॥११७१॥
वेटो एक जायो सो वटाऊ जेम वसिगो ।
सारा सोच कीनूं सात म्हैनां को विनसिगो ॥११७२॥
भैंरुसिंघ राजा वरस चोदा राज कीनूं ।
माधोसिंधजी नूं आप वैठां गोद लीनूं ॥११७३॥

भैरूसिंघजी तो देवलोकां में वसायो।
भैंरुसिंघजी को पाट माधोसिंघ पायो ॥११७४॥

इति श्रीकवियां गोपालकृत पीढ़ीवार्तिक सिषर-
वंसोत्पति भैरूसिंघ समाप्ती।

॥ माधोसिंघ यथा ॥

माधोसिंघ वालाही पणां में राज पायो।
मुकनूं श्री लछा कै तो भलां ही पूत जायो ॥११७५॥
भैरूसिंघजी कै नांम केता पुन्नि कीनां।
हाथी हेम घोड़ा ब्राह्मणां नैं दान दीनां ॥११७६॥
कपिला वस्त्र का आसण अन्न भोजन भूषणादी।
छत्री बाग छाया मांस वारा में बणा दी ॥११७७॥
हैड़ो सैर सीकरि में सुधा रो नांम कीनां।
हाथूं हाथि सावक नैं रुपैया फेरि दीनां ॥११७८॥
भैरूसिंघ भाई को सुधारो षरच कीनूं।
मुकनै राज कारिज को संभालो फेरि लीनूं ॥११७९॥
जेतै जैनगर सूं कागदां को डाक आई।
अरजी राम राजा नैं ओलादा कै बधाई ॥११८०॥
आगै हुैर मरिगो कँवर भैंरूसिंघ जायो।
जैनें लाडषांनीं जालसाजी सूं जिवायो ॥११८१॥
सम्पूर्यसिंघ जीका स्याम जाया दाव दीनूं।
सीकरि राज लेवा को मनोरथ फेरि कीनूं ॥११८२॥

केई बार दोनूं सांमलाती है पुकार्‌या ।
केई बार न्यारा है मनां में षोट धार्‌या ॥११८३॥
केई बार अरजी रामराजा नैं वचाई ।
केई बार सीकरि का उकीलां सूं लड़ाई ॥११८४॥
केई बार जोरै लाडषांनी जाल नांष्यां ।
केई बार सीकरि का उकीलां तोड़ि नांष्यां ॥११८५॥
जैपुर जां उकीलां में षुमांणीसिंघ नांमी ।
वेलण साब सीकरि में पधार्‌या न्यायधामी ॥११८६॥
मुकनैं ओलखा कै साब लोगां सूं वणाई ।
सावक न्याय तावै साब लोगां नै सुणाई ॥११८७॥
मेजर साब वेलण न्याय तावै वात जांणी ।
सीकरि की सदा सूं नेकनांमी नैं पिछांणी ॥११८८॥
पालट साब भादुरजी यता में फेरि आया ।
माधोसिंघजी नैं साब छाती कै लगाया ॥११८९॥
चढ्या साब भादुर जी सुजांणीकोट आया ।
वग्गी बीचि सामां मुकनसिंघजी नै वैठाया ॥११९०॥
सीकरिनाथ बालक साब भादुर नैं सुणाई ।
सारी वात मुकनैं सावधानी की जणाई ॥११९१॥
वोल्या साब भादुर भूप माधोसिंघ वाला ।
जैतै सैर सीकरि राज मुकनां का संभाला ॥११९२॥
सगतो लाडषांनी एक चिमनूं कांम जोगो ।
पोकरराम साहां भी महाड़ी को दरोगो ॥११९३॥

पोतो सिवसिंघजी को जँवाहरसिंघ नांमी ।
पारीकां पिरोहित श्रीनरायण साच धामी ॥११९४॥
दीवाणी अदालति साह सुषजी कांम जोगो ।
वकसी लोग मुनसी राय लिषवामें अमोगो ॥११९५॥
जैपुर रामलालो पूंम मैलूषान दसो ।
पालट साव भादुर का उकीलां वोचि मसो ॥११९६॥
माधोसिंघ जी का राज कारिज नैं सुधारै ।
सारा चोर धाडती निकाल्या देस बारै ॥११९७॥
मैरूसिंघजी कै भूप माधोसिंघ पालो ।
मुकनू श्रीलछा को राज लीकरि कै रुषालो ॥११९८॥
जैंकी सावधांनी साव लाणां जांणि लीनी ।
जैपुर की अजंटी सूं लिषावटि भेजि दीनीं ॥११९९॥
ठाकुर मुकनसिंघजी लेर जैपुर नै चलाया ।
पोकरराम सगतो लाडषांनी साथि आया ॥१२००॥
मैलूषांनदसै रामलाले जैत पाई ।
तीनूं हीं उकीलां राम राजा नै कहाई ॥१२०१॥
मेजर साव वेलण म्हैरवानी सैं वुलाया ।
पालट साव भादुर छांवणीं सूं फेरि आया ॥१२०२॥
जोरै लाडपांनी स्यांम जाया जाव पायो ।
उरको षास माधव रावराजा नै लिषायो ॥१२०३॥
देसां देस पुगी तोपषांनां की अवाजां ।
डेरां रावराजा का पधार्‌या रांम राजा ॥१२०४॥

दूजै दीह मोतीमाल हाथी भेज दीनां ।
राजी ह्वै जरी का पाट अंबर फेरि दीनां ॥१२०५॥
सारां साब लोगां +हैरवानी फेरि कीनी ।
डेरां आंणि राजा सूं रजा भी मांग दीनी ॥१२०६॥
माधोसिंघ देवाचंद सेवा सैं लवायो ।
सीकरिनाथ सागै रावराजा सो लषायो ॥१२०७॥
तोपां की अवाजां दोय दोर्‍यां कै वधास्यो ।
सीकरि रावराजा सैर जैपुर सों पधास्यो ॥१२०८॥
पालट साव भादुर सैर सीकरि फेरि आया ।
पीर्‍यां का प्रवाडां ग्रंथ भासा का मंगाया ॥१२०९॥
बोल्या साब भादुर एक फेर्‍यों भी वणावो ।
पीर्‍यां का प्रवाड़ां वार ताईं सो सुंणावो ॥१२१०॥
चारण जाति कविया कूम गोपा नैं कहाई ।
वेगा ग्रंथ पीर्‍यां का बणावो आज ताईं ॥१२११॥
बाहू घाटि आंका दोय मोरा सा मिलाया ।
छंदोभंग छंदां का प्रबंध रीति गाया ॥१२१२॥
सेषा वंस पीर्‍यां का प्रवाडां फो बणायो ।
माधोसिंघजी नैं मुकनूँसिंघजी नैं सुणायो ॥१२१३॥

॥ दोहा ॥

ईस दनीस गनीस गिर, सोम धराधर सेस ।
राज करहु जैसे रिधू, माधवसिंघ नरेस ॥१२१४॥

इति श्रीसिषरवंसोत्पत्ति कवियागोपालकृत पीडी वार्तिकसमाप्त

माघोसिंघजी मुनसिंधजी का अलंकारादिक
कवित्त गुन वर्णन यथा

॥ दोहा ॥

सोभित उपमा सर्व ही, लंकारन कै सीस ।
सब छत्रिन पै छत्र सो, माधवसिंघ नरीस ॥१२१५॥

॥ कवित्त ॥

सागर लौं धीर गुन आगर गणेस भूप,
रूप के उजागर मनोज मन मोहियत ।
सत्रुन को काल पारिजात कविराजन को,
विक्रम लौं दीनन के दुःख को बिछोहियत ॥
नीति परिपूरन प्रकास भुवमंडल को,
परब धराकौं कांमधेनि करि दोहियत ।
छत्र सब छत्रिन को आतप निवारिवेकौं,
करण सो दानी भूप माधोसिंघ सोहियत ॥१२१६॥

टीका सागर उपमान, लौं वाचक, धीरता धर्म, उपमेय लुप्त । गुन धर्म, गणेश उपमान, भूप उपमेय, वाचक लुप्त । रूप गुन, मनोज उपमान, वाचक उपमेय लुप्त । काल उपमान, वाचक धर्म, उपमेय लुप्त । पारिजात केवल उपमान कह्यो । विक्रम उपमान, लौं वाचक, दुःख को बिछोहियत धर्म, उपमेय लुप्त । नीति धर्म, उपमान उपमेय वाचक तीनूँ लुप्त । प्रकाश केवल धर्म कह्यो । उपमान उपमेय वाचक को लोप यातैं त्रिलुप्ता । दोहिबो धर्म, उपमान पृथ्वी उपमेय माधोसिंघ

जी, लौं वाचक ए कह्या नहीं यातैं त्रिलुप्ता। लुप्त उपमान, आलप निवारणूँ धर्म, उपमेय वाचक लुप्त। कर्न उपमान १, सो वाचक २, दांनी धर्म ३, माधोसिंघजी उपमेय ४, च्यार्यों कहे यातें पूरन जानिए। या कवित्त की टीका करी सो ही सब की जाणिये। सब की कियें ग्रंथ बहुत वधै यातें सुगम कहेंगे।

॥ कवित्त ॥

नांम तेरो जसो एक, माधो वृजचन्द्र को है,
माधो वृजचन्द्र जैसो तेरो नांम जान्यो है।
तेरे समांन नांम अवनि पर भांन को है,
भांन के समांन तेज तेरो पहिचान्यो है।
सोभित है तेरे समांन एक रतनाकर,
तोकों रतनाकर समांन मन मांन्यो है।
दांनी एक द्वापर में कर्न हो निहारे सम,
करण समांन दांनी तोही कों वखान्यो है॥१२१७॥

टीका परस्पर उपमा लागी यातैं उपमान उपमेय॥
अनन्वय यथा॥

॥ कवित ॥

तेरे जैसो सूर वीर तुही नृप माधवेश,
तेरे जैसी तेग पानि तू ही परसत है।
तेरे जैसो मांनी एक तोही कों विरंचि कीनूँ,
तेरो सो उदार मन तेरो परसत है॥

तेरो सो बिलंद भाग तेरो ही बषान्यों जात,
तेरे जैसो तेज मुष तेरे बरसत है ।
हेरि हेरि थाके आन उपमा न आवत है,
तेरे जैसो दानी भूप तू ही दरसत है ॥

टीका जाकी उपमा जाही कों लागै सो अनन्वय ।
(रूपक यथा)

॥ कवित्त ॥

फैलि रह्यो एक सो प्रकास भुवमंडल में,
कंज कविराजन कै अनंद घनेरो है ।
कहत गुपाल दांन याको सठोर ताप,
विप्रन के मंदिर बचाय ताप तेरो है ॥
केते जग मांनत न मांनत है याहि केते,
तेरो सब ही के सीस आतप घनेरो है ।
भांन को उजेरो दिन मांन में पिछाण्यों जात,
माधो भांन तेरो निशि वासर उजेरो है ॥

टीका या कवित्त में माधा भांन रूपक तेरा शब्द करित। निशि वासर उजेरो अधिक, एक सो प्रकास यहाँ सम, विप्रन के मंदिर बचाया ताप न्यून, वा सूर्ज को केते नही नमैं माधोसिंघ सूर्ज को सब नमैं या अधिक, अधिक-सम न्यून असो जानिए ।
(विषम यथा)

॥ कवित्त ॥

छुति के बिछौननि पै तर प तरकि जात,
धरकि जात सीनां करे री काम केली है।
भूषन के भार कुच भार कच भारन तैं,
नेक न सम्हार तन कोमल नवेली हैं॥
राषत निदाधारी तुरावटी उसीर नवकी ?
मुकर अपास कुमलात वर वेली है।
ऐसी सुमा करि नाहे माधव के सत्रुन की,
भारन पहारन में भ्रमत अकेली है॥

टीका अरि स्त्री कोमल, भार पहार कठोर लायक पदार्थ नहीं यातैं विषम। (असंगति यथा)

हेम कटि कांची पद नूंपर वल पयानि,
श्रवण मुरासा माल सीनां मधिकनकी।
दौरि दौरि गात कों दुरात न वीथिन में,
निविडित माल तम पूर अधिकन की॥
घेरि लई मंडली चकोर मोर कीरकन की,
दीन भई तनक सम्हार नांहि तन की।
तेरी अरि नारिन कों माधव पहार मांझ,
दुषित निहारि रोवै नारि वधिकन की॥

टीका-दुष पावनूं अरि स्त्रीन को रोवनू वधिक स्त्रीन को यातैं असंगति। ध्वनि में काव्यार्थापत्ति अलंकार भी है। वधिक

तीन का हिया कठोर होत है करुणा करि वे भी रोवै तो और मनुषन की कहा बात ध्वनि मैं जानिये। (उल्लेख यथा)

॥ कवित्त ॥

मुकनां मही पै आज कीरति तिहारी देखि,
सागर मुराल हंस जांनि छीर धरिता।
चंद्रमा चकोर चंचरीकनि चमेली जानी,
जानि दीपमालिका दिगीस रोर हरिता॥
लोक जानी भोर हरि गिरजा हिमालै जानि,
जानि रतिराज को समाज ध्यांन धरिता।
रंक जांनि सर्व समुदां के जानि कलानिधि,
कोक जांनी कोमदी समुद्र जानि सरिता॥

टीका—एक वस्तु कीति बहुतन को बहुत रीति दीषी। यातें उल्लेख (व्याजस्तुति यथा)

॥ कवित्त ॥

केतन को देत भूमि केतन की छीन लेत,
केतन कों घेरि देश बाहिर निकारो हो।
कोई धन लेन काज दावन पकरि लेत,
ताहू को लेक ही मैं अवगन बिसारो हो॥
काहू की सोभा अवनि मैं सहि सकत हो न,
देस परदेसनि मैं आप नीव धारो हो।
दारिद कै दारदी कै मुकनां बिछोहा देत,
कर्न भोज बिक्रमहो की कीरति बिगारो हो॥

टीका सावक कवित्त में निंदा करि ध्वनि में अस्तुति भई अहो मुकनसिंघ कोई की धरती पोसो हो, कोई को धो हो सत्रुन की षोसो हो कविन को घो हो इहां अस्तुति। दारद कैं दारिद्री कै विछोहा किया यहाँ भी निंदा में स्तुति करना। भोज विक्रम की कीरति विगारो हो यहां भी निंदा में अस्तुति उनकी कीर्ति मंद भई इत्यादि कवित्त में व्याजस्तुति जानिए।

(व्यतिरेक यथा)

कवित्त

जैसो भान तेज तैसो तेरो तेज माधवेस,
वाको दिन ही में तेज तेरो दिन रात है।
वाकै एक वाज सपतास सो भी वृद्ध भयो,
तरुन तिहारे वाज वालि सरसात है॥
वाकै एक अरुन समीप सो भी पंग जानूं,
सुभट अनेक तेरे पासि दरसात है।
वाको देषि एक दिन सीसको नवावत हैं,
तोको देषि सारे दीन सीसको नवात हैं॥

टीका उपमान तैं उपमेय अधिक यातैं व्यतिरेक (सार यथा)

कवित्त।

तामस तैं व्याल व्याल हू तैं विकराल ज्वाल,
ज्वाल हू तैं वाडव प्रति ज्वाला घनेरी है।
वाडव तैं काल दण्ड काल दण्ड हू तैं काल,
काल हू तैं रोष भरी कालिका करेरी है॥

कालिका तें वीज वीज हू तें त्रपुरारि पीज,
पीज त्रपुरारि तैं मयूष रविकेरी है।
रवि की मयूष हू तैं वज्र मघवान को है,
वज्र तैं कराल माधवेस तेग तेरी है॥

टीका- अधिक तें अधिक कहे यातें सार जानिए।
(उत्प्रेक्षा यथा)

कवित्त।

तेरी वीरताई सुनि पाई नृप माधवेस,
यातें अरि नारि गिरदारिन दुराई है।
वन में विहारी हारि मन में विसूरत है,
पाए श्रम भूष प्यास नींद नियराई है॥
गात भरा स्यांम नैंन अधर सुपेत भरा,
कौन हेत पापनि अमोघ अरुनाई है।
एक भाय जाचक समांन गिर सेवत हैं,
मानूं जाचि पाहन तैं पावक लगाई है।

टीका— चरन ललाई विषै पावक को संभावना करी संभावना डोल करनूं उत्प्रेक्षा। मानूं किधों असे वाचक उत्प्रेक्षा के ही जानिए। (भ्रांति यथा)

कवित्त।

तेरी अरि नारिन कों हेरि नृप माधवेस
दोरिकै दबाई वन जन्तुस्तु सुष पैनी कों।

काक गहि कंठ सुनि कोकिला समान बैन,
    बाज गहि लीनी है निहारि मृगनैंनी को ॥
चंचरीक चंचल सरोज मुष आनि गहे,
    चंचर उरोज गहि लीनें फल पैनीं को।
कीर गहि नासिका समीर गहि काकोदर,
    पांयनि चकोर गहि मोर गहिं बेनीं को ॥
टीका इत्यादि बन के जन्तुन के भ्रांति भई याते भ्रांति।
(विभावना यथा)

कवित्त।

ऐसो बलवान साग तेरो नृप माधवेस,
    कितने भराये बिनु आनि दंड भरिगे।
केते विजया के बिनु षाये बावरे से भये,
    कितनें निकारे बिनु देस तैं निकरिगे ॥
केते जल बोरे बिनु आप ही तैं बूडि गए,
    कितने जराए बिनु आगि मैं प्रजरिगे।
कितनेंक मंडल कों लीनें बित छीने बिनु,
    कितनें तिहारे अरि मारे बिनु मरिगे ॥
टीका कारन बिना ही कारज भयो याते विभावना।
(विरोधाभास यथा)

॥ कवित्त ॥

तिमर निहारि प्रति बासुर प्रभाकर लों,
    अमर अलोप होत ऐसी पनयारि है।

जो लग न जाँहि ढिग तो लग तिहारो जोर,

सरन गए तें तोहि तुरत निकारि है ॥

अब न रहेगो नीच नीकैंकुर्क जाँनि लई,

तेरे प्रजारिबे को सीतल निहारि है।

अब लों दरिद्र ! तें घनेरे दुःख दीनें मोहि,

तोहि गज वाज देकें माधवेस मारि है ॥

टीका काहू कवेसुर की उक्ति दारिद्र सें तेरे प्रजारिबे कों "सीतल निहारि है गज वाज देके मारि है" इत्यादि कवित्त में बिरोधी पद मिलै यातें विरोधाभास जानिए।

(विकल्प यथा)

॥ कवित्त ॥

कितने गज वाज गांम धाम आराम दीनें,

सुजस अपार छितिमंडल पें छाय हैं।

केते कविराजन कों दरक दुसाल दीनें,

केते कविराजन के आसा फिरि पाय है ॥

कोई कवि बोले एम अबकै हमारि वेर,

उन पै किसोरि बात जाँचिबे कों जाय है।

कै तो या दरिद्र मोहि दौरिकै दबाय लै है,

कै नरिंद्र माधो याँ दरिद्रकों दबाय है ॥

टीका— क यहैं कै वहै ऐसे पद आये यातें विकल्प जानिए।

(विशेष यथा)

॥ कवित्त ॥

कोमदी कनैर केवरे में वक हीरे मांझ,
सुक्ताचर सुकता समुद्र छीर धारी हैं।
देवतरु आरसी हिमाले मंदाकनी हू में,
चामर चमेली चंद्र चंद्रिका निहारी हैं॥
सारद के आसन में सक्र के सिंगासन में,
नागरि के हास राम नीति निरधारी हैं।
अंब हू में निबु हू में कमल कंद वहू मे,
मेरे जानि माधव प कीरति तिहारी हैं॥

टीका एक वस्तु कीर्ति ताको अनेक ठोर वर्नन कियो यातैं विशेष अलंकार जानिए। (विशेषोक्ति यथा)

॥ कवित्त ॥

बाम तजे धाम तजे अवनि आराम तजे,
गाम तजि दौरि दौरि विपुन बसात हैं।
धीर न धरात गिर सरिता उलंघि जात,
गात भरा पीन फल फूल चुनि षात हैं॥
फिरत विहाल फेरि सागर उलंघि जात,
चौंकी चौंकी उठत चितोत भहिरात हैं।
माधवेस तेरे अरि देस तजि दूरि गए,
तिनके हिए तें तो भी त्रास नही जात हैं॥

टीका—भय मिटवे के हेतु दूरि गए तो भी भय नहीं मिट्यो यातैं विशेषोक्ति। (विचित्र यथा)

॥ कवित्त ॥

हीरन के हार हेम तार हय पाटंबर,
बहुत प्रकार धन धाम उघमत हैं।
देत गज राज गजराज बहु पायवे को,
अवनि दिए तैं राज अवनी जपत है॥
दीनन कों देत सुप आप सुष पायवे कों,
लोक जानैं याको धन वायदे गमत है।
पता देत लेत काज मुकनूं लछाको नंद,
फछिन कों ऊँचो होन कारिज नमत है॥

टीका धन वास्ते धन देत है राज वास्तै जमी देत है ऊँचो होवा वास्तै नमे है उलटो यत्न कियो यातैं विचित्रता जानिए। अलंकार तो परिवृत्ति भी है कछु देकै कछु लेना पलटा होत है यहाँ उलटो यत्न कियो यातैं विचित्र जानिए। (अधिक अलंकार यथा)

॥ कवित्त ॥

प्रसरयो्यो नगर पुंज फैल्यो देस देसन मैं,
विथुरयो विदेसनि दिगंत दरसायो हैं।
मंडल अषड नव षंड सात दीपनी मैं,
सागर के वारापार पारहू न पायो हैं॥
माधोसिंघ सेषावत मुकट महीपनि कै,
एक यह रावरो अचंभो मोहि आयो है।

सुजस न मायो है पचास कोटि अवनी प,
तन में तिहारो कैसे मेरे मन मायो है ॥

टीका आधार तें आधेय बहुत बतायो यातें अधिक अलंकार जानिए। (परिवृत्ति यथा)

॥ कवित्त ॥

केते कवि लालची लबार मति हीन बके,
ताकी सुनि अरुचि न आवत है चित्त के।
कुटिल कुबुद्धि केते कूर बिनुं काज बोलै,
ताहू सैं बुलाय बोल बोलत हो हित्त के॥
रावरे समांन मुकनेस बावरे है कौन,
ऐसे बिवहार होत देषे हु न नित्त के।
देत कवि अंक ताको दुरद निसंक देत,
देत हो हजारुं बित पलटै कवित्त के॥

टीका कछु देकै कछु लेना पलटा करै कवित्त वित्त को पलटा कियो याते परिवृत्ति। जानिए अलंकार तो व्याजस्तुति भी है। रावरे समान बावरे कोन यहाँ निन्दा करी अस्तुति भई। ध्वनि में यहां पलटा है आंक को दुरद का पलटा वित्त को कवित्त को पलटा यातें परिवृत्ति ही जानिए। निदर्शना यथा।

॥ कवित्त ॥

सावधांनी विधि की उदार मन सकर को,
समर अडोल मेरु दृढ़ता चरन को।

सत्रुन पै ताप चाप अँचन धनंजय को,
असि असवार होत तेज लै रतन को।
रोष बलिराम को गंभीर धीर सागर को,
धारण कियो है बल धरनी धरन को।
सुष को समाज मघवान मुकनेस आज,
कर में तिहारे दांन करनूं करन को॥

टीका—उपमान को धर्म उपमेय में ठहरायो यातैं निदर्शना।

(सहोक्ति यथा)

॥ कवित्त ॥

माधवेस आज तुम जटित जवाहर को,
रीझि कै कवितन पै हित करि दीनूं है।
सठच्यो सुमेर औ कुमेर हू की मति थोरि,
फेरि मघवान हेरि मौनव्रत लीनूं है॥
भाग गयो आथमि छिपाकर हूँ छीन भयो,
दीन भयो दीप लषि कौतक नवीनूं है।
भूषन कविन्द्रन के कीरति तिहारी भूप,
दोनूं एक साथि ही प्रकाश भूमि कीनूं है॥

टीका—कबिन को दीने जे भूषन औ कीरति दोनों को प्रकाश साथि भयो कारन कारज साथि उपजे यातैं सहोक्ति जानिए।

(अत्यंतातिशयोक्ति यथा)

॥ कवित्त ॥

उज्जल अमंद मुकनेस लछुसाह नंद,
आनंद को कंद कविराजन को उग्यो है।
मारुत के वेग लौं दिगंत दीप दीपनि में,
पारद समांन छितिमंडल पै छुग्यो है॥
सूम अरविंदन के मंद करिवे के काज,
पूरन कला को चंद चांदनी सौ छुग्यो है।
तोपैं जाचिवे कौं कवि आए ते न पूगे तो पैं,
पहिले तिहारो जस सिंध पार पूग्यो है॥

टीका- मुकनसिंघजी नैं जांचिवे कौं कवि आये लो तो मुकनसिंघ जी कनैं पूगे ही नहीं अरु जस पहिले सिंधु पार पूग्यो पूर्वापर क्रम नहीं यातैं अत्यंतातिशयोक्ति अलंकार जानिए। (उल्लास यथा)

कवित्त।

केते सिर धूंनत हैं कीरति कहानी सुनि,
केते संभ पांनि के बलूला पनि पारिगे।
केते नैंक बोलत हैं केते चुप ठांनि वैठे,
केते वांन पांनहू की सुधि कौं विसारिगे॥
केते राज काज के समाज सुध भूलि गए,
केते मन मारिकैं विराग उर धारिगे।
माधव नरेन्द्र तेरे दान के प्रवाह देखि,
कितने राठोर गोर हाडा हिय हारिगे॥

टीका माधोसिंघजी के दान गुन तैं हाडा, राठोर, गोड़न के हिय में हारियो दोष भयो। और के गुन तैं और कों दोष होय तहाँ उल्लास जानिए। (भ्रांत्यपन्हुति यथा)

कवित्त

माधवेस तेरी अरि नारि बन वीथिन में,
घेरि प्यास हू की ह्वै निवांनि पैं आय हैं।
नीर में निहारत ही पोंछत कपोलन कों,
फेरि बन पातन कों फेरि उपराय हैं॥
नयनि कस्तूरि धूरि लावैं न मृगानि हू की,
सलिल बहात नैंक मेचक न जाय हैं।
कौतुक निहारि ताहि भीलन की नारि कहै,
कजरा न जांनिए सयांनी मुख छाय हैं॥

टीका अरि नारिन को भ्रम भीलनी के कहे तें मिट्यो यातैं भ्रांत्यपन्हुति जानिए। अलंकार तो या में व्याजनिंदा भी है। हे सयांनी यह कजरा नहीं है। सयांनी की ठौर विप्रलंभन करिके मूर्ख बताई। (तद्गुण यथा)

कवित्त

तेरी अरि अंगना अकेली नृप माधवेस,
आसि मांनि हिय में अयास तजि जात हैं।
कारन पहारन में बधिक विरांन कीनी,
आंन आंन छीने छीन भूषन सब गात हैं॥

हेर तज रूर मति कूरि है किरातन की,
हीरन के हार स्वेद कन से लषात हैं।
अधर समीप अरुनाई भ्रम तोरि तोरि,
वेसर के मोती गुंजा जानि कै चषात हैं॥

टीका अलंकार तो भ्रांति भी है। हीरा देपि स्वेद कन की भ्रांति भई पैं अधर की संगति पाय मुक्ता अरुन भये यांतैं तद्गुन जानिए। (पूर्वरूपगुन यथा)

कवित्त।

केते करि सीप जात केते कवि फेरि आत,
विरद विसाल बोलि केते थिरद्यात हैं।
केते जर कंमर दुसाल माल मोतिन की,
कुलिस प्रवाल लाल हेम हय पात हैं॥
करके कठोर नर दांन को प्रवाह देपि,
रीझ करवे कूं येनो चित्त को चलात हैं।
माधोसिंघ तो पैं आनि सूंम भी उदार होत,
दूरि जात पाछो फिर सूंम हो जात हैं॥

टीका दातार की संगति पाय सूंम भी दातार भयो दातार से, दूरि उठि गयो फिरि पाछो सूंम भयो ऐसे पूर्व रूप गुन अलंकार जानिए। (विनोक्ति यथा)

कवित्त।

सोहैं देश कोस गढ़ तोपन की पांति सोहैं,
दाल औ पवास पास सोहैं मन भावनें।

गज सोहैं बाज सोहैं सुभट समाज सोहैं,
　　कीरति करपा सोहैं गांम गज पावनें ॥
संपति समाज राज रीति सावधांनी सोहैं,
　　गायनि गुनिजन के छंद मृदु गावनें।
माधव को राज सुरराज के समांन आज,
　　एक ही नकार विना सकल सुहावनें ॥

टीका—एक नकार अक्षर विना सब ही राज शोभायमांन भयो यातैं विनोक्ति जानिए। (काव्यार्थापत्ति यथा)

कवित्त।

माधोसिंघ तेरे सम और नृप कौन सोहै,
　　देषत दिमाग हूं को देवराज दहिये।
और नरनाहन की संपति सराहै कौन,
　　संपति निहारि राजराज मौन गहिये ॥
कर्न हू की कीरति को बांनी कवि गारि दयो,
　　रावरे समांन और सोभा कौन लहिये।
तेरे तेज आगै तेज भानु को हू मंद भयो,
　　वापरे कसान हूं की कहा बात कहिये ॥

टीका—अहो राजन! तेरे तेज आगैं भांन को तेज मंद भया तो कसांन जो अग्नि ताको तो कहा बात? मुख्य में गोन को वर्णन कियो यातें काव्यार्थापत्ति जानिये।

प्रत्यनीक यथा

कवित्त।

कैरो जुद्ध कीनें श्रोन धारन तें भूमि भीनें,
पायकें पराजें प्रान काल जाल मढ़िगे।
भूलि गए मांन कौं परी हैं भीर प्रानन पैं,
मंद भई जहुर बिसाल सोक बढ़िगे॥
होयकै उदास तजि विविध विलास आस,
आलि मांनि हिय में अयासन तैं कढ़िगे।
माधवेस तोसैं अरि हारि ताकौं वैर धारि,
तैनैं तप कीनें ते पहारन पै चढ़िगे॥

टीका अहो भूप! तेरे शत्रु तोसे तो जीतै नहीं तू बलवान है तेरे पच्छिक पहार तामें तैं तप कियो तापैं दोरि कै चढ़े। शत्रु के पक्षवाले को दुःख देनूं यातैं प्रत्यनीक जानिए।

(प्रहर्षण यथा)

कवित्त।

चाहि करि आवैं सो की पावत हजार सोही,
चाहत हजार पावैं लाखन समाज हैं।
अंबर की चाहि जाकों देत अर कंबर है,
चाहते हैं बाज ताकों देत गजराज हैं॥
एक सुष चाहे जाकौं देत है अनेक सुष,
चाहैं धांम जाकों धांम देत जस काज हैं।
चाहत सवाय रीझ देत कविराजन कों,
ऐसे नृप आज माधवेस महाराज हैं॥

टीका कवेसुर मन की चाहतैं अधिक पायो यातैं प्रहर्षण अलंकार जानिए। (चित्र यथा)

कवित्त।

तेरी विषवाहिनी तुरंगन कों घेरि राषैं,
सुभट समूह लैंन षंष उर धारे हैं।
सोर गजरात घनघोर दहुं ओरन तैं,
मार मार बोलत निसंक है वकारे हैं॥
होय मतिवारे अंक अकूं (जूं) सनमांनत है,
फूटत षंभारन तें पून बिसतारे हैं।
पूछैं अरि अंगना तिहारी नृप माधवेस,
कोन ए किवार पिय वारन बिदारे हैं॥

टीका ऐसे अरि स्त्री पूछत हैं हे पिय किवार कोन वारन बिदारें हैं कै वारन बिदारें हैं? वारन नांम वारना का, वारन नांम हाथी का। एक वाक्य में प्रति उत्तर भयो यातैं चित्र अलंकार जानिए। (समुच्चय यथा)

कवित्त

वैरिन की वैर भय तेरो नांम माधवेस,
दोरत अकेली बनवीथिन दुराती हैं।
फेन मुष नैंन भरि ऊरध उसास लेत,
चौंकत चितोन चकि भूलि भहिराती हैं॥
गात पियरात दुष मगन प्रलाप स्वेद,
भ्रमत बिहाल बिनु बोध बिललाती हैं।

आलस अयांनी चुप ठानत सयांनी होत,
कंठ घहिरांनी मग थाकि थहिराती हैं ॥

टीका-अहो भूप ! तेरो भय मांनि तेरी अरि औन के स्तंभ, कंप, स्वेद, वैवर्ण्य, रोमांच, स्वरभंग, अश्रु, प्रलाप, मुखफेन इत्यादि भाव एक साथि वर्त्तै यातैं समुच्चय जानिए । (व्याघात यथा)

कवित्त

सीतल समीर भई व्याल फूंतकारन सी,
तनकों लपाई हैं जुन्हांई कालज्वर सी ।
विपुल अराम भए भाघसी उसीर धांम,
फूल भए सूल से सुगंध सार सर सी ॥
कोकिल की कूॅच मीच अंतक बसंत भयो,
मलय कपूर धूरि ग्रीषम की झर सी ।
माधव तिहारे अरि उद्यम विदेस गए,
ताकी तिय बोलत मयंक आगि बरसी ॥

टीका या कवित्त में शीतल समीरादि वस्तु सुखदायक हैं सो दुःखदायक भई और कारज होने की वस्तु सैं और कारज भयो यातैं व्याघात जानिए। (दीपक यथा)

कवित्त

सूमन के पान हीर पाहन कठोर होत,
सज्जन सुजांन संत कोमल सचेत हैं ।

कूर चोर कांमी खल चपल अधीर होत,
सागर उदार वीर धीरज समेत हैं ॥
उर्ग चवार नीच अवगुन विसारै नांहि,
गंग भ्रङ्ग मलय समांन करि देति है ।
चिंतामनि पारिजात पारिस मुकनसिंघ,
दीनन के दारिद को दूरि करि देत हैं ॥

टीका सूंम हीरा पाषांन वर्न्यो तासैं एक पद कठोर लाग्यो, सज्जन सुजांन संत कोमल तासैं एक पद सचेत लाग्यो । कांमी षल तासैं एक पद अधीर लाग्यो । सागर उदार वीर तासैं धीरज पद लाग्यो । उर्ग जो साप चवार चुगल च नीच कर्मी तासैं अवगुन नहीं विसारनूं एक पद लाग्यो । गंग भृंग मलय तासैं समांन पद लाग्यो । चिंतामनि पारिजात पारिस मुकनसिंघ वर्णनीय है तासैं दारिद को दूरि करनूं एक पद लाग्यो यातैं दीपक जानिए । (श्लेष यथा)

कवित्त ।

सुमन तिहारे जोगि ल्याए हम वेचवेकों,
माधवेस कीमति कों कम न करोहगे ।
जेवर हमारे पासि बहुत अनूप भूप,
जिनके प्रकास तैं उदार मन मोहगे ॥
गाहक निगाह तैं घनेरे मोल थोहगे तो,
छोगा ह्वै छतीसन के सीसनी पैं सोहगे ।

लीजिए तिहारि लोप हम तो कहत नांहिं,
मेरो चित्त ल्योहुगे तो मो कों चित्त चोहगे ॥

टीका सुबन सोना सुबन अक्षर, जेवर गहिना जेवर अलंकार, प्रकास मोल, दोनां में एक अर्थ लाग्यो यातें श्लेष। कविसुर कवित्त वेचें हैं फिर नटै हैं हम तो केहैं नहीं तुम ल्योही पै तुमारी सोभा है। यहां निषेधाभास यातें आक्षेप अलंकार। कवित्त को पलटा कियो यातें परिवृत्ति जानिए।

(कारनमाला यथा)

कवित्त

माधवेस कीनूं तप यातें यह राज पायो,
राज पायवे तें सब नीति वरताई है।
नीति वरताय कूर कंटक निकार दियो,
कटक निकारवे तें रैति सुख पाई है॥
रैति सुख पायवे तें पुत्र को प्रवाह चल्यो,
पुत्र को प्रवाह बढि साष उपजाई है।
साष उपजायवे तें द्रव्य को भंडार भर्यो,
द्रव्य के लुटायवे तें कीति छिति छाई है॥

टीका प्रथम कारन तें कारज उपजैं फिर कारज ही कारण हो तो जाय तहाँ कारनमाला जानिए। (संभावना यथा)

॥ कवित्त ॥

सुजस तिहारो जो न होतो देस देसन में,
तो नरेस उजल मयंक मांन लहितो।

भांन जो न होतो तो तिहारो तेज भांन होतो,
चंद्र जो न होतो तो तूं प्रभुता निबहतो ॥
कर्न जो न होतो दांन सुव्रन को कर्नहार,
तो गुपाल कोन के समांन तोहि कहितो ।
सचिव तिहारो सुकनेस जा कुमेर होतो,
तो दरिद्र भूमि छाड़ि ओरैं लोक रहतो ॥

॥ कवित्त ॥

माधवेस तो समांन दांनी हरचंद होतो,
विक्रम नरेस तोसैं कमती बषांनिए ।
तेरे समांन दांन द्वापर में करन देतो,
दांन करिवे को एतो गरब न आनिए ॥
भांनुकुलभांन तोहि कहत गुपाल दांन,
देत बलिदांन वकी उपमां अपानिए ।
लंगर लछार परदारन सें प्रीति ठांनी,
भोज तो तिहारे आगे रंक सो बषानिए ॥

टीका — इत्यादि कवित्तमैं अधिन । नूंसिमएसैं जानिएक
(उन्मीलित यथा)

॥ कवित्त ॥

माधव नरेन्द्रजी तैं केते गज बाज दीनें,
दीनीं पवसाक तैं तमांम जरतारी की ।

जिनकी प्रभा की जोति सांनी जाय सागर में,
नीर छीर पवत सुराल निरधारी की ॥
उज्जल समांन दोउ छुवत हिमाले आंनि,
पायनि पिछांनि छिति पारद पधारी की ।
कहत गुपाल सांझ मिलिगी जुन्हाई मांझ,
भांन के उदै पिछांनि कीरति तिहारी की ॥

टीका–इत्यादि कवित्त में जुन्हाई सुपेत कीरति सुपेत दोनूं मिलाई सो प्रभाती जुन्हाई मिटि गई कीरति बनी रही दिन में कीरति को जांनि परी यातैं उन्मीलित जानिए। (लेश यथा)

कवित्त ।

कोऊ कवि ऐसे बरजोरी गजराज लेत,
कोऊ वित्त कारिज विप वानो कहत हैं ।
कोऊ कवि मांगत है भूषन जवाहर के,
लेहूँ यह ख्याति बोलि दांइन गहत हैं ॥
कोऊ कवि रूस तरिसात रूस रात जात,
करकैं विवाद अनहोवत चहत हैं ।
कुटिल कुजीव कवि कोऊ कटु वैंन बोलैं,
दांनी नृप माधवेस सब को सहत हैं ॥

टीका राजा मैं दांन दैनू गुन तासैं विपवानो कटु वचन सहनूं दोष भयो यातैं लेस जानिए। (अत्युक्ति अलंकार यथा)

कवित्त ।

आघ भयो अंतको हिमंतको निदाघ भयो,
कंत को वियोग सुष संपति विडरिगे।
ऊरधनु सासन तैं पवन प्रचंड वेग,
डोलत अडोल गिर पाहन विथुरिगे ॥
अवनि अराम पुर बास भोत पोवन से,
बिरह कसांन वनवाटिका प्रजरिगे।
माधवेस तेरे अरि नारिन के नैन धार,
सूके सर ऊसर समस्त नीर भरिगे ॥

टीका अद्भुत झूँठी बात कही अरि स्त्रीन के नैन धार जलैं सूके सर ऊसर भरे सो मिथ्या है, अत्युक्ति में मिथ्या होत है कवि कल्पित झूंठ बोलना ध्वनि में राजा वलिष्ठ जानिए मिथ्या वर्णन कियो यातैं अत्युक्ति जानिए। (प्रस्तुतांकुर यथा)

कवित्त ।

सरित बिसूके सरऊ समस्त सूकै,
दीरघ समुद्र भो निकाम षार भरकैं।
कहत गुपाल दांन मेघ झर लायो नांहि,
ग्रीषम तपायो तन लायो प्यास मरकै ॥
आयो तकि तोहि बन हेरि चहुँ ओरन को,
वासुर बितायो नीठि तेरी आस करकैं।
तेरो तोय मधर अथाह पै न पूगै कर,
ऊंजर कहाँ लौं तन उद्ध नीर छिरकैं ॥

टीका यहाँ हाथी को बचन रूप से प्रस्तुति तामैं काहू कवि की उक्ति राजा से अस्तुति करे हैं यातैं प्रस्तुतांकुर अलंकार जानिए। याकों अन्योक्ति भी कहे हैं और सैं कईं प्रसंग और पैं लगैं।

दोहा।

गुन्निसै छब्बीस कै, कृष्ण पक्ति मग्गो मास।
भांन वार की सप्तमी, प्राची भांन प्रकास॥
सिपरोत्पति पीढ़ी सबै, दांनवीर जुत जांनि।
कवि चारण गोपाल कृत, पूरन ग्रंथ प्रमांनि॥

इति श्री कविया गोपाल कृत पीढ़ी वार्तिक सिपर वंसोत्पत्ति ग्रंथ समाप्ति॥

संवत् १६५६ इदं पुस्तकं भूंभनूं नाम्नि ग्रामे जोशी त्र्यंबक धर कन्हैयालाल शर्म्मा न्यायशालाधिपस्य नारायणोत्तर पद्म श्री हरिश्चरणैः कृपयाऽलेखि। तत्तु प्रत्यहं शुभं प्रयच्छतु वाचकाना मित्यलम्।

શુદ્ધિપત્ર

પૃષ્ઠ	છંદ સંખ્યા	અશુદ્ધ	શુદ્ધ
૨	૧૦	ઘોડો	ઘોડાં
"	૧૨	તોનો	તો
૪	૨૮	ચમાલી	ચમોલિસ
૬	૪૭	તીય	તીન
"	૪૯	અગૌણી	અગોણી
"	૫૦	હીંસામલાતિ	હી સાંમલાતિ
૭	૫૨	આગાડ	આગાઙ
૭	૫૭	બિહાણો	વિહાણી
૧૧	૯૬	પોઢાં	ગોઢાં
૧૨	૧૦૭	પાઢિ	પાટિ
૧૫	૧૨૬	છાણિ	જાણિ
૧૬	૧૪૮	બીઢ	ધીઢ
"	૧૫૭	નલેરાં	નગારાં
૨૦	૧૯૧	દિલ્લીક	દિલ્લી કૈ
"	૧૯૪	આવપા કૈ સૈઘ	આંવપાસ કૈ સૈત
"	૧૯૮	વલી	બોલી
"	૧૯૯	રાયંસાલ	રાયાંસાળ
૨૧	૨૦૨	રાજ	પાટ
"	૨૦૯	પડપુર	પંડપુર

पृष्ठ	छंद संख्या	अशुद्ध	शुद्ध
"	७१५	વાથ	બોથ
७२	७४४	छ	छे
८७	९००	ગલડામાં	તળ ડાંણા
८६	८९६	ગાઙૂ	ગાડર
९३	९७०	ફાજ	ફોજ
९५	९८४	વાર	સવાર
९९	१०२८	વેટ	वेटे
१०३	१०७४	~	नैं
१०६	११०४	તાલવ	તળાવ
११०	११४६	માટા	મોટા
१०८	११२०	અલૂણૂ	અલૂણૂં
१२६	छंद पहला	निव्रुहू में	निव्रुहू में
१२७	छंद दूसरा	प्रसस्वोस्यो	प्रसस्यो
१३०	छंद पहला	हिर्य	हिय
१४२	पहला दोहा	गुभिसे	गुभीसे
"	"	मभीमास	मधुमास
"	अंतिम से पहली पंक्ति	श्रा	श्री

नोट १ पृष्ठ ११, छंद १०० के आगे जो छंदार्ध है अर्थात्—"माथा सेत्तमोत्या राव सेपाने वधायो" यह तो मुद्रित पुस्तक में है, परंतु हस्तलिखित प्रति में ऐसा पाठ है "मोत्यां सैत मोत्या राव सेपा ने

पवायो" । दोनों ही पाठ अस्पष्ट मालूम देते हैं। और इस आधे छंद के अगाड़ी का आधा नहीं है। जैसे अगाड़ी ३९८ का आधा छंद तो है आधा नहीं है। इस १०० के आगे वाले छंदार्ध की संख्या नहीं दी गई है, यदि दी जाय और इसको १०१ समझें तो ग्रंथ में एक छंद की संख्या बढ़ेगी।

नोट २ पृ० ९७ छंद १०१४ के आगे निम्नलिखित छंद पढ़िए -

"दोमूं टोय टक्कर लै पेतसूं सुरडिगा।
देवीसिंघ मुरतज्जापांन फेरि अड़िया ॥ १ ॥
चौथे दिन कागद मढेच ने पिनायो।
देवीसिंघ नावतो सम्हालो फेरि आयो ॥ २ ॥
कागद ने वांचतां भडेच जेज कीनी।
कूंचां दरकूंच फेरि दिल्ली जाय लीनी ॥ ३ ॥
ऐसी भांति मुरतज्जापांन ने भजायो।
मामलो चुकावा फेरि दिल्ली सौं न आयो ॥४॥

दोहा।

मुरतज्जे कुंजर मसत कीधो पून प्रकास।
देवै थापट सिंह दी वद मागो पडि त्रास ॥ ५ ॥

गीतका दोहा।

सुरतज्जापांन तलडांण झरतो मसत,
झाट पग दुहातळ सीस झाडै।
कोम कुळसिंह देवेस निमतो कियो;
पडै वघवाव तद चीस पाडै" ॥ ६ ॥

ये छंद छपने से रह गए। इन छंदों के बढ़ने से ग्रंथ संख्या १२१४+१+६=१२२१ (बारह सौ इकीस) होती है। आगे अलंकार छंद इनसे पृथक् ४६ हैं। सब मिलाकर १२६७ छंद है।

नोट २ छपाई में बहुत सी जगह पर शब्दों के आद्य अन्त्य अक्षरों को वा शब्दों ही को आपस में मिला दिया गया है। इनको ठीक लिखना वृथा विस्तार समझा जाकर छोड़ दिया है कि पढ़नेवाले अर्थ पर ध्यान देकर पाठ ठीक पढ़ लेंगे।

:o: